।। श्री महावीराय नमः ।।

चन्द्र किरणावली

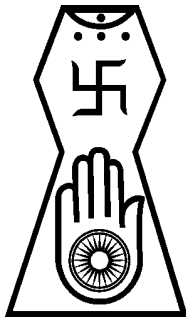

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

संकलन

चन्द्राबाई सिंघवी

प्रकाशक

सुगालचन्द प्रसन्नचन्द विनोदकुमार सिंघवी

किलपॉक-चेन्नई

- ❖ पुस्तक : चन्द्र किरणावली
- ❖ विधा : प्राचीन–नवीन भजन एवं बोधप्रद सामग्री
- ❖ भाषा : प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी
- ❖ संकलन : श्रीमती चन्द्राबाई सिंघवी
- ❖ द्वितीयावृत्ति : 2 सितम्बर 2009, आचार्य जय जयन्ति
- ❖ प्रकाशक : **N. Sugalchand Jain**
  No. 11, Ponnappa Lane, Triplicane
  Chennai - 600 005.
  Phone : 044 - 2848 1354, 2848 1366
  E-mail: sugalchand@yahoo.com
  www.sugaldamani.com
- ❖ पुस्तक प्राप्ति : **Smt. Chandrabai Singhvi**
  25, Ranganathan Avenue,
  Kilpauk, Chennai - 600 010.
- ❖ मूल्य : नित्य पठन एवं सद् आचरण
- ❖ मुद्रक : भद्रेशकुमार जैन, जैन प्रकाशन केन्द्र
  पुराना नं. 53, आदिअप्पा नायकन स्ट्रीट,
  प्रथम तला, साहुकारपेट, चेन्नई–600 079.
  दूरभाष : 93822 91400, 92831 73329

स्व. श्री नथमलजी सिंघवी का परिचय

पूर्व जोधपुर रियासत के अन्तर्गत सोजत परगना (वर्तमान में पाली जिला), सोजत के सन्निकट ही सियाट ग्राम ! सेठ श्रीमान् आईदानमलजी सिंघवी के गृहांगन में पुत्र रत्न ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया- नथमल ! इससे पूर्व सिंघवीजी के गृहांगन में एक सुपुत्र श्री भानीरामजी ने तथा सुपुत्री सुश्री चान्दा ने जन्म ग्रहण कर लिया था ।

श्री नथमलजी चार वर्ष के थे, तभी उनके माता-पिता का देहावसान हो गया । बाल्यावस्था में ही माता-पिता के स्नेह-वात्सल्य से विहीन बालक नथमल का पालन-पोषण पितृवत् भ्राता श्री भानीरामजी सिंघवी ने किया तथा किशोरावस्था में मातृवत् स्नेह प्रदान किया- उनकी बहन श्रीमती चान्दाबाई धर्मपत्नी श्रीमान् जीवराजजी नागौरी (गादिया) ने, जो मरुधरा के ग्राम कंटालिया में ही रह रहे थे । आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा कंटालिया ग्राम में ही सम्पन्न हुई । ध्यातव्य है कि श्री चान्दाबाई की पुण्य स्मृति में चेन्नई के पल्लिकरणै में ''श्रीमती चान्दाबाई जीवराज नागौरी निःशुल्क औषधालय'' की स्थापना की गई है ।

श्री नथमलजी सा का परिणय धुन्दला निवासी श्रीमान् अमोलकचन्दजी संचेती की सुपुत्री सौ. जड़ावकंवर के साथ सम्पन्न हुआ । तदनंतर श्री नथमलजी व्यापारिक कार्य में सहयोग देने हेतु भ्राता श्री भानीरामजी सिंघवी के सन्निकट रहे । सन् 1941 में श्री नथमलजी मद्रास आये । व्यापारिक अनुभव प्राप्त

करने हेतु मदुरान्तक्कम् एवं चंगलपेट में नौकरी की और तमिलभाषा का ज्ञान अर्जित किया । व्यापारिक निपुणता के पश्चात् आपने सोना-चांदी एवं गिरवी का व्यवसाय प्रारंभ किया । श्रम एवं पूर्ण लगन के साथ आपने अपने व्यवसाय में अभिवृद्धि की ।

श्रीमान् नथमलजी सिंघवी की धर्मपत्नी श्रीमती जड़ावबाई धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत एक कुशल सद्गृहिणी थी । सन् 1954 में श्रीमती जड़ावबाई के देहावसान के पश्चात् आपका द्वितीय परिणय बिलाड़ा निवासी श्रीमान् कालुरामजी बाफणा की सुपुत्री सौ. फूटरीबाई के साथ सम्पन्न हुआ । श्रीमती फूटरीबाई भी एक कुशल गृहिणी हैं तथा सतत् धर्मध्यान में संलग्न रहती है ।

आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म. सा. की सम्प्रदाय के स्वामीवर्य श्री नथमलजी म. सा. के सुशिष्य आशुकवि, श्रुताचार्य श्री चौथमलजी म. सा. के परम भक्त तथा स्वाध्यायप्रेमी स्वामीवर्य श्री चाँदमलजी म.सा., आचार्य श्री जीतमलजी म. सा., आचार्य श्री लालचंदजी म. सा. आदि ठाणा के प्रति श्री सिंघवी जी श्रद्धानिष्ठ थे । वर्तमान में आपका परिवार परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री शुभचन्दजी म. सा., आगम विवेचक उपाध्याय श्री पार्श्वचन्द्रजी म.सा., तपोधनी, स्वाध्यायप्रेमी श्री गुणवन्तचन्द्रजी म.सा., बारह व्रतों के प्रेरक डॉ. श्री पदमचन्द्रजी म.सा., आगम-मर्मज्ञ श्री सुमतिचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के प्रति श्रद्धासिक्त है ।

आपका रोम-रोम दान की प्रवृत्ति से अनुप्राणित था । छोटे व्यापार में ही परम सन्तुष्ट थे तथापि धर्म-कार्य में सहयोग देने हेतु आप सदैव अग्रणी रहते थे । आप दान देने हेतु प्रतिदिन की कमाई का उचित हिस्सा एक हुण्डी में डाल दिया करते थे, समय आने पर वह राशि धार्मिक-सामाजिक कार्यों में एवं स्वधर्मी बन्धुओं की सहायता में व्यय कर दिया करते थे ।

आपने सियाट ग्राम में तथा मद्रास ट्रिप्लीकेन की मंदिर-प्रतिष्ठा में अत्यन्त उत्साह पूर्वक भाग लिया । सियाट ग्राम में आपने चारागृह का निर्माण करवाया तथा राणावास जैन स्कूल में भी आपने समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्रदान किया ।

आपके सुपुत्र एवं पुत्रवधुएं हैं- श्री सुगालचन्दजी-श्रीमती चन्द्राबाई, श्री मोतीलालजी-श्रीमती शान्तिबाई, श्री विमलचन्दजी-श्रीमती सरलाबाई, श्री कमलचन्दजी-प्रमिलाबाई, श्री महावीरचन्दजी-श्रीमती संगीताबाई सिंघवी एवं सुपुत्रियाँ हैं- सौ. प्रकाशबाई (धर्मपत्नी : श्री मांगीलालजी कांठेड़), सौ. सुशीलाबाई (धर्मपत्नी : श्री उत्तमचन्दजी तालेड़ा) तथा सौ. मैनाबाई (धर्मपत्नी : अशोकचन्दजी सांखला) । सुपौत्र-सुपौत्रवधुएं हैं- श्री प्रसन्नचन्द-सौ. निर्मला, श्री विनोदकुमार-सौ. कला, श्री नवरतन-सौ. सीता, श्री विक्रमकुमार-सौ. गुंजन तथा सर्व श्री जितेन्द्र, विनय, आशीष । सुपौत्री एवं सुपौत्री जंवाई हैं- सौ. किरण-श्री दिलीपकुमारजी सांखला, सौ. रेखा-सुनिलकुमारजी मेहता, सौ. ममता-श्री रूपेशकुमारजी सुराणा तथा सुश्री दिव्या, संध्या, निकिता, मेघा, अंकिता । प्रपौत्र हैं-

प्रमोद, प्रतीक, तरुण सिंघवी । प्रपौत्री हैं- पायल, पलक, त्रिशा जैन (सिंघवी), प्रदौहित्र हैं- विकास, अरिहन्त, दर्शन सांखला ।

श्री नथमलजी का देहावसान सन् 1991 में हुआ । आपकी पुण्य स्मृति में सियाट ग्राम में श्री जड़ावबाई नथमल सिंघवी राजकीय प्राथमिक विद्यालय का निर्माण किया गया, जिसमें 600 छात्र-छात्राएं ज्ञानार्जन कर रहे हैं तथा चेन्नई में भी आपकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु चार विद्यालयों का निर्माण हुआ- श्री जड़ावबाई नथमल सिंघवी जैन विद्यालय के नाम से, जिनमें 1500 से भी अधिक बालक-बालिकाएं ज्ञानार्जन कर रहे हैं । उपरोक्त सभी विद्यालय श्री सुगालचंदजी जैन की देखरेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हैं ।

श्रीमती जड़ावबाई की जन्म भूमि में भी विद्यालय में दो कक्षों का निर्माण तथा श्रीमती फूटरीबाई की जन्म भूमि बिलाड़ा में भी एक कक्ष का निर्माण करवाया गया ।

चेन्नई के सुप्रसिद्ध केन्सर इन्स्टीट्यूट में ONCOLOGY BLOCK तथा V.H.S. में DIAGNOSTIC LAB एवं शंकर नेत्रालय में ग्लुकोमा डिपार्टमेन्ट में भी एक-एक ब्लॉक का निर्माण श्री नथमलजीसा सिंघवी की पुण्य-स्मृति में करवाया गया ।

अंत में उनके द्वारा किये गये सद् कार्यों की सराहना करते हुए, उन्हें श्रद्धा-पुष्प समर्पित करता हूँ ।

- ए. केवलचन्द संचेती, चेन्नई

प्रकाशकीय

भक्ति के सुरों से अनुप्राणित 'चन्द्र किरणावली' पुस्तिका में स्वाध्याय, स्तुति-स्तोत्र, प्रभातकालीन एवं उपदेशपरक भजनों एवं ज्ञान की बातों का संकलन किया गया है । हमारी माताजी जब-जब इन भक्तिप्रद गीतों एवं उपदेशपरक भजनों का मधुर गान करती तो हमारा मानस अत्यन्त गद्-गद् हो जाता था तथा हृदय में एक प्रेरणा जन्म लेती कि इन मधुर गीतों की एक पुस्तिका प्रकाशित की जाय ।

प्राचीन एवं नवीन भजनों तथा अन्य उपयोगी सामग्री का संकलन हमारी मातुश्री- श्रीमती चन्द्राबाई सिंघवी ने किया, तदनन्तर संकलित सामग्री पुस्तक प्रकाशन हेतु प्रदान कर दी गई । आज कई वर्षों की हमारी भावना साकार रूप ले रही है, अतः हमें अपार हर्ष हैं । सर्वाधिक हर्ष तो तब होगा, जब पाठकगण, स्वाध्यायी भाई-बहन इस पुस्तक का अधिक से अधिक लाभ उठाकर, हमारे श्रम को सार्थक बनायेंगे ।

सामग्री संकलन-मुद्रण में यद्यपि उपयोग रखा गया है तथापि प्रमादवश कहीं त्रुटि रह गई हो तो अवश्य सुधार कर पढ़े तथा हमें भी सूचित करें ताकि आगामी प्रकाशन त्रुटि रहित मुद्रित हो सकें । हम अपने माताजी-पिताजी के अत्यन्त आभारी है कि आपश्री ने इस पुस्तक के प्रकाशन की राह प्रशस्त की । सुन्दर मुद्रण हेतु डॉ. श्री भद्रेशकुमारजी जैन को अनेकशः धन्यवाद ।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'चन्द्र किरणावली' से प्रत्येक धर्मप्रेमी एवं जिज्ञासु जन लाभान्वित होगा ।

- प्रसन्नचन्द विनोदकुमार सिंघवी

आत्म निवेदन

'चन्द्र किरणावली' पुस्तिका आपके कर कमलों तक पहुँचाते मुझे अपार हर्ष एवं सन्तोष है । इसका संकलन विगत वर्ष से ही प्रारंभ कर दिया गया था तथापि चेन्नई एवं दिल्ली बार-बार आवागमन के कारण मुद्रण में विलम्ब हो गया ।

प्रतिदिन सामायिक करते समय मैं स्वाध्याय में संलग्न रहती हूँ तथा प्रार्थना भी करती हूँ । मेरे पारिवारिक सदस्य भी रात्रि 9.00 बजे की प्रार्थना में सहभागी बनते हैं । सामूहिक प्रार्थना, भजन एवं स्वाध्याय की वेला में बहुत ही आनन्द आता है । वातावरण में शांति एवं आनन्द की लहर छा जाती है । मेरा आप सभी से नम्र निवेदन है कि प्रभात की पुनीत वेला में अथवा रात्रि में आप भी सपरिवार सामूहिक प्रार्थना अवश्य करावें । इससे घर में सुख एवं शान्ति तो रहेगी ही, साथ ही साथ बालक एवं बालिकाओं में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण भी होगा ।

मेरी जीवन यात्रा के सहभागी मेरे पति (श्री सुगालचन्दजी सिंघवी) की मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने सहजरूपेण इस पुस्तिका के प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया । मेरे पुत्र श्री प्रसन्नचन्द एवं श्री विनोदकुमार ने इसे मुद्रित कर मेरी भावना को मूर्तरूप प्रदान किया, संकलन में श्रीमती ताराबाई ने एवं मेरी पुत्रवधुएं सौ. निर्मला एवं सौ. कला ने हार्दिक सहयोग प्रदान किया, सामग्री-सम्पादन में डॉ. श्री भद्रेशकुमारजी जैन का सहयोग प्राप्त हुआ, अतः सभी को मैं हार्दिक साधुवाद प्रदान करती हूँ ।

प्रस्तुत पुस्तिका से धर्मप्रेमी भाई-बहन अवश्य ही लाभान्वित होंगे, इसी आशा के साथ-

- चन्द्रा सिंघवी

प्राक्कथन

'स्वाध्याय' एवं 'प्रार्थना' का अपने आप से सम्बद्ध है । प्रार्थना अन्तःकरण को निर्मल तथा सरल बनाने के लिये की जाती है । सांसारिक पदार्थों की अभिलाषा रखते हुए प्रार्थना करना मात्र प्रभु से अभ्यर्थना/याचना मात्र है । प्रार्थना तो परमात्मा से तादात्म्य स्थापित करने का एक प्रकार है, और है- अपने आपको परमात्म श्रेणी की ओर ले जाने का एक सुखद अवसर !

परमात्म-स्तुति में तल्लीन हुआ साधक निरपेक्ष भाव से स्तुति करते हुए आत्म-भाव में ही खो जाता है तथा उसमें उसे उत्कृष्ट रस/आनन्द आता है तो वह तीर्थंकर गोत्र तक का उपार्जन कर लेता है । प्रार्थना में प्राणिमात्र के प्रति शुभ भाव तथा संसार के समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री की कामना होनी चाहिये ।

प्रार्थना के द्वारा सांसारिक सुखों की मांग करना रत्नों की सम्प्राप्ति की अपेक्षा काँच के टुकड़ों की अभिलाषा रखना है । अतः प्रार्थना स्वातः सुखाय हो, मात्र आत्मानन्द एवं आत्मरमणता के लिये । प्रार्थना की महिमा का बखान करते हुए किसी ने सच ही कहा है-

प्रार्थना प्रभु भक्ति की पावन प्रीत है ।
प्रार्थना साक्षी है तथा प्यारा मीत है ।
प्रार्थना हृदय का गीत और संगीत है ।

प्रार्थना भक्ति का सुन्दर फूल है ।
प्रार्थना हृदय का उज्ज्वल मोती है ।
प्रार्थना जीवन की मंगल ज्योति है ।
प्रार्थना गंगा है, मन का पाप धोती है ।

प्रार्थना पतित को पावन बनाती है । प्रार्थना जन-जन में आस्था एवं भक्ति का संचार करती है । नारदऋषि ने कर्मयोगी श्रीकृष्ण से एक बार प्रश्न किया- प्रभो ! आप कहाँ निवास करते हैं ? श्रीकृष्ण ने कहा- मेरे भक्त जहाँ भी मुझे गाते हैं, मेरी प्रार्थना करते हैं, मैं बस वहीं निवास करता हूँ ।

प्रार्थना, स्तुति, स्तव, थुई, महिमा ये सब प्रार्थना के ही पर्याय है । जैसे लोगस्स में २४ तीर्थंकरों की तथा नमोऽत्थुणं में अर्हत् सिद्ध की स्तुति की गई है । स्तुति के पश्चात् साधक की यही कामना रहती है- मुझे भी सिद्ध पद की सम्प्राप्ति हो ।

'स्वाध्याय' का तात्पर्य है- अपने आप का अवलोकन । स्वाध्याय से चिन्तन-मनन में अभिवृद्धि होती है । सतत स्वाध्याय करने से कर्मों की निर्जरा होती है ।

स्वाध्याय, सज्झाय का पर्याय बन गया । महान् रचनाकरों की कालजेय कृतियों का प्रतिदिन परायण करना सज्झाय है । बड़ी साधु वन्दना का स्मरण भी स्वाध्याय की ही श्रेणी में आता है । आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म. सा. कृत 'बड़ी साधु वन्दना' के पठन से सभी तीर्थंकर, गणधर, महासती, चरित्रात्माओं को स्वतः ही वन्दन हो जाता है तथा उनके गुणों के स्मरण से

हमारी आत्मा में भी पावनता एवं निर्मलता का संचार होता है । सज्झाय से हृदय में सरलता के द्वार उद्घाटित होते हैं, और जहाँ सरलता है, वहीं धर्म का निवास है ।

आज प्रत्येक घर में प्रार्थना की अलख जगनी ही चाहिये तथा सामूहिक रूप से पारिवारिकजनों को उसमें भाग लेना ही चाहिये ताकि उनके मानस में विनम्रता एवं विवेक का संचार हो । इसी भावना को दृष्टिगत रखते हुए धर्मशीला श्राविका श्रीमती चन्द्राबाई सिंघवी ने इस पुस्तक का संकलन किया तथा श्रीमान् सुगालचन्दजी, प्रसन्नचन्दजी, विनादकुमारजी सिंघवी ने इसे प्रकाशित कर जन-जन तक पहुँचाने में अहम् भूमिका निभाई है ।

ऐसे विगत समय से श्री सिंघवी जी की प्रेरणा से तथा 'सुगाल एण्ड दामाणी' के सहयोग से उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. की कतिपय कालजेय कृतियों का पुनर्मुद्रण करवाया गया है, जो पाठकों के लिये परम उपयोगी है ।

अंततः सिंघवी परिवार का मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका यह साहित्योपयोगी एवं जनोपयोगी उपक्रम निरन्तर जारी रहेगा, इसी शुभेच्छा के साथ-

- डॉ. भद्रेश जैन

सचिव : करुणा अन्तर्राष्ट्रीय, चेन्नई

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण

नमस्कार महामंत्र	1
जय जिनेन्द्र प्रार्थना	2
उवसग्गहरं –स्तोत्र	3
घंटाकर्ण–स्तोत्र	4
मंगल पाठ	5
बड़ी मांगलिक	6
महापुरूष नाम	7
प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्व जिनं	9
आदि मंगल/जिनवाणी महिमा	10

सज्झाय विभाग

बड़ी साधु–वंदना	13
मध्यम साधु–वंदना	25
लघु साधु वन्दना	31
बृहदालोयणा	32
पाप की आलोचना (हो नाथजी पाप आलोऊं)	55
आत्म शुध्दि	62
गौतम–रास	64
गणधरजी	68
गौतम गणधर	70
गौतम गणधर, पाये जी लागूं	71
चौदह मंगल	73

भगवान महावीर नो छोटो चोढ़ालियो 75
क्षमा–धर्म 84
चौसठ सती वन्दना 92
शान्ति जिन स्तवन 99
जय गुरु चालीसा 104
पूज्य जयमलजी रो जाप जपो 108
महावीर प्रभु पालनीया 109
जंबूजी का स्तवन (म्हारा आलीजा भरतार) 111
सोलह सती रा लेसूँ नाम 113
इण शील वरत रो ल्हावो 114
सरसत–सरसत करूं प्रणाम 115
महासती अन्जना 118
अंजना सती 121
चन्दनबाला इक्कीसी 123
मृगावती कैसे आवेसा 125
ओढो ए राजुल चुन्दड़ी 126
चौदह सपनां 128
काया 130

ज्ञान वाटिका

भाव प्रतिक्रमण 133
श्रावक के इक्कीस गुण 138
श्रावक के प्रकार 139
श्रावक का वचन व्यवहार 139
श्रावक की व्यावहारिक पहचान 140

श्रावक के इक्कीस लक्षण 140
चन्द्रगुप्त राजा के 16 स्वप्नों का फल 142
सामायिक क्या है ? 147
सामायिक से लाभ 148
तप का महत्व 149
तप करने का फल 150
जैनों के विशेष नियम 151
आजकल के हम जैन 153
जय घोष 154
ए, बी, सी, डी, बुध्दि बहुत है बढ़ी 156
क, ख, ग, घ, ङा – मत करो झगड़ा 157
अच्छा बच्चा 158
विनय 158
बोलो क्या चाहते हो ? 159
जीवन में तीन बातें हमेशा ध्यान रखो 159
कुछ लाभदायक बातें 160
कौन सी संस्कृति का प्रभाव 160
शुभ प्रभात 162
रात को सोते समय बोलना 163
आत्म विश्वास 164
सात वैरी 164

प्रार्थना

श्री आदि जिनंदं (चौबीसी) 167
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण (पैसठिया छन्द) 168

सेवो सिध्द सदा जयकार 169
समरो मंत्र भलो नवकार 170
भजो एक सार मंत्र नवकार 171
नवकार मंत्र है महामंत्र 172
नवकार है गुणकारी 173
नवकार जपने से 174
जय जयकार करे (रविवार) 175
जय जिनवर चन्दा (सोमवार) 176
जय वासुपूज्य देवा (मंगलवार) 177
जिन जयकार करे (बुधवार) 178
जय जिनवर ज्ञानी (गुरुवार) 179
जय जिनवर प्यारा (शुक्रवार) 180
ओम् मुनिसुव्रत स्वामी (शनिवार) 181
नव ग्रह शांति आरती 182
श्री शांतिनाथ भगवान अरजी सुन लीजो 183
साता कीजोजी 184
ले लो शान्ति प्रभु रो नाम 185
चेतन ले लो शरणा चार 186
श्री मुनिसुव्रत साहिबा 187
तुमसे लागी लगन 188
वामा देवी के प्यारे 189
पारसनाथ भगवान की प्रार्थना 190
श्री गौतम स्वामी का स्तवन 191
आओ भगवन् आओ 192

आया हूँ बन कर तेरा पुजारी 193
जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा 194
खत भगवान को लिखता 195
जीवन अच्छा नहीं लगता 196
भावना दिन रात मेरी 197
मेरी भावना 198
बारह भावना 200
इतनी शक्ति हमें देना दाता ! 202
ए मालिक ! तेरे बंदे हम 203
चैत सुदी तेरस को जन्मे 204
बधाई 205
मन पंछी 206
गुरु जयमल गाये जा 207
जयमल गुणगान 208
गुरु गणेश महिमा 209
सब बोलो जय जयकार आनंद ऋषिवर की 210
आचार्य प्रवर श्री शुभ गणीश्वर 211
सियाट में छायो बड़ो ठाट 212
समणी जी का वन्दन गीत 213
किस स्थिति में केवल ज्ञान पाया 214

नैतिकता के स्वर

संयममय जीवन हो 217
जो माँ की ना सुनेगा 218
माँ–बाप को भूलना नहीं 220

बुरा किसी का मत करना 221
बोल सको तो मीठा बोलो 222
बदले युग की धारा 223
जिन धर्म के प्यारे लोगों 224
सामायिक साधना 225
ऐसा अपना घर हो 226
सुखी ना मिलियो एक भी 227
जीवन का भरोसा नहीं 228
मनुष्य जन्म अनमोल रे 229
मिट्टी में मिलेगी मिट्टी 230
श्रवण कुमार का भजन 231
जरा कर्म देख कर करिये 233
तुम्हीं मेरे मालिक तुम्हीं मेरे स्वामी 233-A

राजस्थानी सरगम

भोला आत्मा रे दाग लगाइजे मती 236
थने धीरे से समझाऊं 237
पायो रतन अमोल 238
भक्ति रंग रो ओ लाडू 239
खावण में थारे कसर नहीं 240
बोलो–बोलो मीठा बोल, व्हाला भायां–बायां रे 241
टेलीफोन 242
संसार खारो लागे 243
संथारो 244
सगला ठाट अठै रह जासी 245

एकलो ही आयो रे बंदा 246
संयम पथ 247
लेता म्हारा प्रभुजी रो नाम 248
वृध्दावस्था का हाल 249
बुढ़ापा में मनडा ने मारले 251
बुढ़ापा 252
नवकार वाली मे गुण घणा 254
इम झूरे देवकी राणी 255
आंटो करमां रो 256

प्रचलित चौबीसियाँ–

चौबीसी (वन्दना–वन्दना) 257
चौबीसी (कभी वीर बनके) 257
चौबीसी (सबसे थोड़ा) 257
चौबीसी (मैं तो किण विध आऊं सा) 258
चौबीसी 259
चौबीसी (थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे) 260
चौबीसी (झाला की) 262
चौबीसी 264
चौबीसी (चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो) 265
क्यूं किसी से कड़वा बोलो 266
पुण्य की कमाई (रिलिजस गेम) 267
चौदह नियम 272
श्रावक के तीन मनोरथ 273
पच्चक्खाण 274

श्रावक के नित्य प्रत्याख्यान 277
सागारी संथारा 277
समस्त जीवों के साथ क्षमापना 278
संथारा ग्रहण करने की विधि 279
बड़ी संलेखना का पाठ (यावज्जीवन संथारा) 280
अंत समय की आराधना 282
श्री सत्य उपदेश 284
संस्कारों की झंकार 287
पंच पद आनुपूर्वी 288
नवपद आनुपूर्वी 300
त्रिपदी 313
पच्चक्खाणों के समय का यंत्र (चेन्नई समयानुसार) 315
प्रतिज्ञा 316

परिशिष्ट विभाग

वीरत्थुइ 319
नमिपव्वज्जा (उत्तराध्ययन सूत्र नवम् अध्ययन) 322
मरुदेवी स्तवन 328
शान्तिनाथजी की ऋध्दि 331
नेमजी का स्तवन 336
गजसुकुमालजी का स्तवन 338
वीर प्रभु के चौदह चातुर्मास 339
सीमंधर जी को स्तवन 341
श्री सीमंधर स्वामी 342

जीव राशि आलोचना 343
आलोयणा 347
धर्म पचकूटो 349
नवकारवाली तूं म्हारी माय 350
वेला तो आई तोरण की 351
राजा हरीश्चन्द्र 352
सामायिक पालते वक्त वोलना 353
सुबह उठते ही गैस जगाने के पहले बोलना 353
सुबह उठते ही बोलने हेतु 354
रात में बोलने हेतु 354

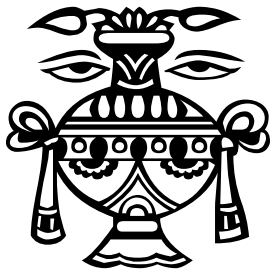

भोजन करते समय

पांच नवकार मंत्र गिने फिर भोजन करें,
भोजन करते समय मौन रखें, भोजन में झूठा न डाले ।

चन्द्र किरणावली

मंगलाचरण

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।।

जय जिनेन्द्र प्रार्थना

जय जिनेन्द्र ! जय जिनेन्द्र ! जय जिनेन्द्र बोलिये !
जय जिनेन्द्र के स्वरों से, अपना मौन खोलिये ।।ध्रुव।।

जय जिनेन्द्र ही हमारा, एक मात्र मंत्र हो,
जय जिनेन्द्र बोलने को, हर कोई स्वतंत्र हो,
जय जिनेन्द्र बोल-बोल ! खुद जिनेन्द्र हो लिए ।
जय जिनेन्द्र ...।।१।।

पाप छोड़, धर्म जोड़, यह जिनेन्द्र देशना,
कर्म बन्ध को तू तोड़, यह जिनेन्द्र देशना,
जाग ! जाग अब रे चेतन, काल बहु सो लिए ।
जय जिनेन्द्र ...।।२।।

हे जिनेन्द्र ! ज्ञान दो, मुक्ति का वरदान दो,
कर रहे हैं प्रार्थना, प्रार्थना पर ध्यान दो,
अब तुम्हारी ही शरण, जन्म-मरण तोड़िये ।
जय जिनेन्द्र ...।।३।।

* * *

विनय और निःस्वार्थ सेवा से जीभ पर सरस्वती नाचती है ।
पैरों के नीचे ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ लौटती है ।
विनयवान सबका प्रिय अर्थात् हृदय-हार बन जाता है ।

* * *

उवसग्गहरं -स्तोत्र

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं ।
विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ।।१।।

विसहर-फुलिंग-मंतं, कण्ठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।२।।

चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४।।

इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचंद ।।५।।

- आचार्य भद्रबाहु स्वामी

⁂

लक्ष्मी स्वयं ढूंढ़ लेती है

धर्म-निष्ठ पुरुष को !
उत्साही पुरुष को !
कार्यदक्ष पुरुष को !
कृतज्ञ पुरुष को !
निर्व्यसनी पुरुष को !
धैर्य-शील पुरुष को !

घंटाकर्ण-स्तोत्र

ॐ घंटाकर्णो महावीरः सर्व-व्याधि विनाशकः ।
विस्फोटक-भयं प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः ।।१।।

यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर-पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्त-कफोद्भवाः ।।२।।

तत्र राज-भयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपाः क्षयम् ।
शाकिनी-भूत-वैताला, राक्षसा प्रभवन्ति न ।।३।।

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते ।
अग्नि-चोर-भयं नास्ति, नास्ति तस्याप्यरि भयं ।।४।।

ॐह्रीं श्रीं घंटाकर्णः ! नमोस्तु ते !
ॐ नर-वीर ! ठः ठः ठः स्वाहा !

⁂

अमृत-वेला में उठकर

भगवान् की स्तुति करो !
शुभ संकल्प करो !
सामायिक करो !
शास्त्र-स्वाध्याय करो !
माता को नमन करो !
पिता को नमन करो !
गुरुजनों को नमन करो !
गुणीजनों को नमन करो !

मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं- अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा- अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

चत्तारि सरणं पवज्जामि- अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतों का शरणा, सिद्धों का शरणा,
साधुओं का शरणा, केवली प्ररूपित दया धर्म का शरणा ।

चार शरणा दुख हरणा, और न शरणा कोय ।
जो भवि प्राणी आदरे, अक्षय अमर पद होय ।।

* * *

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह ।
जिनको कछु न चाहिये, वे हैं शाहंशाह ।।

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात ।
मूर्ख से मूर्ख मिले, के घूंसा के लात ।।

* * *

अपने शिष्य या पुत्र के अपराध को छिपाना,
उसे गौण करना, उसके साथ शत्रुता करना है ।

* * *

बड़ी मांगलिक

अष्ट सिद्धि, नव निधि भण्डार ।
गौतम समरयां, सुख-सम्पत्ति के दातार ।
परभाते उठ लीजे नाम, जो मनवांछित सीझे काम ।
मंत्र माहे मोटो मंत्र, ते सुण्या होवे कान पवित्र ।
चौदह पूरब केरो सार, प्रातः उठी सुमरो नवकार ।
अणी मंत्रे दुःख नहीं आवे आपदा,
अणी मंत्रे, दुःख नहीं आवे कदा,
वेरी विखम पाय पड़े,
जे नर उज्झड़-अटवी में खड़े,
भोजन वेला पेली एक, दुर्गति पड़ता राखो टेक ।
अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु तणा लागूं पाय ।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप सार, ये नवपद लीजे भव नो पार ।
श्रीपाल-मैना अधिकार, सुणजो ग्रंथ के अनुसार ।
चौबीसी तीर्थंकर सुमरे, भव-भव ना ही पातक हरे ।
महावीरजी को शासन लही, धर्म में उद्यम करजो सही ।
धर्म से धन होवे भण्डार, धर्म से दूरो नासे काल ।
कान कहे वचन रसाल, सुणजो जीवदया प्रतिपाल ।
मंत्र बड़ो नवकार, रोग-आपदा टाले,
मंत्र बड़ो नवकार, मुगत के सुख में मेले ।
पिंगल पढ़े न फारसी, (मागधी) पढ़े न गीता छन्द ।
एक नवकार मंत्र गिण्या पछे, नित का करो आनन्द ।

महापुरुष-नाम

चौबीस तीर्थंकर

१. श्री ऋषभदेव स्वामीजी	२. श्री अजितनाथ स्वामीजी
३. श्री संभवनाथ स्वामीजी	४. श्री अभिनन्दन स्वामीजी
५. श्री सुमतिनाथ स्वामीजी	६. श्री पद्मप्रभ स्वामीजी
७. श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीजी	८. श्री चंद्रप्रभ स्वामीजी
९. श्री सुविधिनाथ स्वामीजी	१०. श्री शीतलनाथ स्वामीजी
११. श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी	१२. श्री वासुपूज्य स्वामीजी
१३. श्री विमलनाथ स्वामीजी	१४. श्री अनंतनाथ स्वामीजी
१५. श्री धर्मनाथ स्वामीजी	१६. श्री शांतिनाथ स्वामीजी
१७. श्री कुन्थुनाथ स्वामीजी	१८. श्री अरनाथ स्वामीजी
१९. श्री मल्लीनाथ स्वामीजी	२०. श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी
२१. श्री नमिनाथ स्वामीजी	२२. श्री अरिष्टनेमि स्वामीजी
२३. श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी	२४. श्री महावीर स्वामीजी

बीस विहरमानों (तीर्थंकरों) के नाम

१. श्री सीमंधर स्वामीजी	२. श्री युगंधर स्वामीजी
३. श्री बाहु स्वामीजी	४. श्री सुबाहु स्वामीजी
५. श्री सुजात स्वामीजी	६. श्री स्वयंप्रभ स्वामीजी
७. श्री ऋषभानन स्वामीजी	८. श्री अनंतवीर्य स्वामीजी
९. श्री सूरप्रभ स्वामीजी	१०. श्री विशालधर स्वामीजी
११. श्री वज्रधर स्वामीजी	१२. श्री चंद्रानन स्वामीजी
१३. श्री चंद्रबाहु स्वामीजी	१४. श्री भुजंगधर स्वामीजी
१५. श्री ईश्वर स्वामीजी	१६. श्री नेमप्रभ स्वामीजी
१७. श्री वीरसेन स्वामीजी	१८. श्री महाभद्र स्वामीजी
१९. श्री देवयश स्वामीजी	२०. श्री अजितवीर्य स्वामीजी

ग्यारह गणधरों के नाम

१. श्री इन्द्रभूतिजी	२. श्री अग्निभूतिजी
३. श्री वायुभूतिजी	४. श्री व्यक्त स्वामीजी
५. श्री सुधर्मा स्वामीजी	६. श्री मंडितपुत्रजी
७. श्री मौर्यपुत्रजी	८. श्री अकंपितजी
९. श्री अचलभ्राताजी	१०. श्री मेतार्यजी
११. श्री प्रभासजी	

सोलह सतियों के नाम

१. श्री ब्राह्मीजी	२. श्री सुंदरीजी
३. श्री कौशल्याजी	४. श्री सीताजी
५. श्री राजीमतीजी	६. श्री कुंतीजी
७. श्री द्रौपदीजी	८. श्री चंदनबालाजी
९. श्री मृगावतीजी	१०. श्री चेलणाजी
११. श्री प्रभावतीजी	१२. श्री सुभद्राजी
१३. श्री दमयंतीजी	१४. श्री सुलसाजी
१५. श्री शिवादेवीजी	१६. श्री पद्मावतीजी

दस श्रावकों के नाम

१. श्री आनंदजी	२. श्री कामदेवजी
३. श्री चुलनीपियाजी	४. श्री सुरादेवजी
५. श्री चुल्लशतकजी	६. श्री कुंडकोलिकजी
७. श्री सकडालपुत्रजी	८. श्री महाशतकजी
९. श्री नंदिनीपियाजी	१०. श्री शालिहीपियाजी

प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्व जिनं

प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्व जिनं, जिननायक दायक सौख्य घनं ।
घन चारु मनोहर देह धरं, धरणीपति नित्य सुसेवकरं ।।

करुणारस रंजित भव्य फणी, फणि सप्त सुशोभित मौलिमणी ।
मणिकंचन रूप त्रिकोट घटं, घटिता सुर किन्नर पार्श्व तटं ।।

तटिनी पति घोष गंभीर स्वरं, शरणागत विश्व अशेष नरं ।
नर-नारि नमस्कृत नित्य मुदा, पदमावती गावती गीत सदा ।।

सततेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारुण मुक्तहठं ।
हठ हेलित कर्म कृतांत बलं, बलधाम दरं दल पंक जलं ।।

जलज-द्वय पत्र प्रभा नयनं, नयनंदित भव्य तरी शमनं ।
मन्मत्थ महीरुह वन्हि-समं, समता गुण रत्नमयं परमं ।।

परमार्थ विचार सदा कुशलं, कुशलं कुरु मे जिन नाथ अलं ।
अलिनी नलिनी नल नील तनुं, तनुता प्रभु पार्श्व जिनं सुधनं ।।

सुधन धान्य करं करुणा परं, परम सिद्धि करं दधतां वरं ।
वरतरं अश्वसेन कुलोद्भवं, भवभृतां प्रभु पार्श्व जिनं शिवं ।।

❋ ❋ ❋

पांच बातें जीवन यात्रा में बडी मदद करती हैं-

सत्य, मधुर-वचन, सत्कर्म, उदारता और क्षमा ।

उन्नति के लिए पांच बातें त्याज्य हैं-

निद्रा, भय, क्रोध, आलस्य, दीर्घ सूत्रता ।

आदि मंगल

त्रिभुवन पीड़ा हरणहार हो, तुम को मेरा नमस्कार ।
जग के उज्ज्वल अलंकार, प्रणाम तुम्हें मेरा हरबार ।।
तीन जगत् के नाथ आपके, चरणों में जाऊँ बलिहार ।
भव सागर के शोषण कर्ता, तुमको वंदन वारम्बार ।।

जिनवाणी महिमा

दुनियाँ के चराचर जीवों पर, कर्मों ने जाल बिछाया है ।
क्या साधु-गृहस्थ, क्या बाल-वृद्ध, बस कोई न बचने पाया है ।।

अति शुभ कर्मों के आने से, संतों का समागम मिलता है ।
जिनवाणी-श्रवण करने से, दुःख जन्म-मरण का मिटता है ।।

है समय नदी की धार कि जिसमें सब बह जाया करते हैं ।
है समय बड़ा तूफान प्रबल, पर्वत झुक जाया करते हैं ।।

अक्सर दुनियाँ के लोग, समय के चक्कर खाया करते हैं ।
लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो इतिहासा बनाया करते हैं ।।

❋ ❋ ❋

- इच्छाओं का जितना-जितना आप निरोध करेंगे, उतने-उतने धर्म आराधना में लगेंगे ।
- यह मन, यह साधन, यह क्षेत्र, यह पुण्यशीलता प्राप्त करने के बाद भी क्यों नहीं बोध प्राप्त करते हैं । क्यों नहीं जागते ? यदि अब नहीं जागोगे तो कब जागोगे ?

सज्झाय विभाग

बड़ी साधु-वंदना

लाभ : सरल और स्पष्ट अर्थवाली सुगम भाषा में रचित बड़ी साधु वन्दना श्रद्धा और भक्ति बढ़ाने वाली है । समझपूर्ण, भावविभोर होकर पढ़ने से नरक के बंधन कट जाते हैं । सम्यक्त्व की शुद्धि होती है । देवगति की प्राप्ति होती है । आगामी भव में संयम सुलभ होता है, यावत् उत्कृष्ट रसायन आ जाय तो तीर्थंकर गोत्र का बंध भी हो जाता है । बड़ी साधु वन्दना के पाठ से विघ्न नष्ट होते हैं । दुष्ट व्यक्ति दबते हैं । अनेक बाधा पीड़ा मिट जाती है। इसका पुण्य प्रभाव प्रत्यक्ष है ।

विधि : सीधा, ओंधा या टेड़ा किसी भी प्रकार से भूमि में गिरा हुआ बीज उगता है और फल देता है । उसी प्रकार बड़ी साधु वन्दना का भी 'कभी भी, कैसे भी' पाठ करें फलदायी है । बड़ी साधु वन्दना के स्मरण के लिये कोई काल का बंधन तथा क्षेत्र का कोई आग्रह नहीं है । सरल मातृभाषा में होने से शब्द अशुद्धि का भी भय नहीं है । अतः भव्यजन भावपूर्वक नित्य पाठ कर लाभान्वित हों ।

नमूं अनंत चौबीसी, ऋषभादिक महावीर ।
इण आर्य क्षेत्र मां, घाली धर्म नी सीर ।।१।।

महाअतुल-बली नर, शूर-वीर ने धीर ।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुंचा भव-जल-तीर ।।२।।

सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर बीस ।
छै अढ़ी द्वीप मां, जयवंता जगदीश ।।३।।

एक सौ ने सत्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश ।
धन्य मोटा प्रभुजी, तेह ने नमाऊँ शीश ।।४।।

केवली दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव कोड़ ।
मुनि दोय सहस कोड़ी, उत्कृष्टा नव सहस कोड़ ।।५।।

विचरे छै विदेहे, मोटा तपसी घोर ।
भावे करि वंदूं, टाले भव नी खोड़ ।।६।।

चौबीसे जिन ना, सगला ही गणधार ।
चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमूँ सुखकार ।।७।।

जिनशासन-नायक, धन्य श्री वीर जिनंद ।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनंद ।।८।।

श्री ऋषभदेव ना, भरतादिक सौ पूत ।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भूत ।।९।।

केवल उपजाव्यूं, कर करणी करतूत ।
जिनमत दीपावी, सगला मोक्ष पहूंत ।।१०।।

श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ ।
आदित्यजशादिक, पहुंत्या शिवपुर-वाट ।।११।।

श्री जिन-अंतर ना, हुआ पाट असंख ।
मुनि मुक्ति पहुंत्या, टालि कर्म नो वंक ।।१२।।

धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमूं अणगार ।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस-रमणी-परिवार ।।१३।।

मुनि बल हरिकेशी, चित्त मुनीश्वर सार ।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भव नो पार ।।१४।।

वलि इखुकार राजा, घर कमलावती नार ।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार ।।१५।।

छये छती ऋद्ध छांडी, लीधो संयम-भार ।
इण अल्पकाल मां, पाम्या मोक्ष-द्वार ।।१६।।

वलि संयति राजा, हिरण-आहिडे जाय ।
मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय ।।१७।।

चारित्र लेई ने, भेट्या गुरु ना पाय ।
क्षत्री राज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित लाय ।।१८।।

वलि दशे चक्रवर्ती, राज्य-रमणी ऋद्धि छोड़ ।
दशे मुक्ति पहुंत्या, कुल ने शोभा च्होड़ ।।१९।।

इस अवसर्पिणी काल मां, आठ राम गया मोक्ष ।
बलभद्र मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक ।।२०।।

दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान ।
पछि इंद्र हटायो, दियो छः काय-अभयदान ।।२१।।

करकंडू प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध ।
मुनि मुक्ति पहुंत्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध ।।२२।।

धन्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश ।
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश ।।२३।।

वलि समुद्रपाल मुनि, राजमती रहनेम ।
केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुर-खेम ।।२४।।

धन विजयघोष मुनि, जयघोष वलि जाण ।
श्री गर्गाचार्य, पहुंत्या छै निर्वाण ।।२५।।

श्री उत्तराध्ययन मां, जिनवर कर्या बखाण ।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन में धीरज आण ।।२६।।

वलि खंदक संन्यासी, राख्यो गौतम-स्नेह ।
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ।।२७।।

तप कठिन करीने, झौंसी आपणी देह ।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव-छेह ।।२८।।

वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार ।
शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ।।२९।।

शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार ।
ये चारे मुनिवर, पहुंच्या मोक्ष मंझार ।।३०।।

भगवंत नी माता, धन-धन सती देवानंदा ।
वलि सती जयंती, छोड़ दिया घर-फंदा ।।३१।।

सति मुक्ति पहुंत्या, वलि ते वीर नी नंद ।
महासती सुदर्शना, घणी सतियों ना वृंद ।।३२।।

वलि कार्तिक सेठे, पड़िमा वही शूर-वीर ।
जीम्यो मोरां ऊपर, तापस बलती खीर ।।३३।।

पछी चारित्र लीधो, मित्र एक सहस आठ धीर ।
मरी हुओ शक्रेन्द्र, चवि लेसे भव-तीर ।।३३।।

वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज ।
पछी चारित्र लेईने, सार्‌या आतम-काज ।।३५।।

गंगदत्त मुनि आनंद, तारण-तरण जहाज ।
मुनि कौशल रोहो, दियो घणां ने साज ।।३६।।

धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार ।
आराधक हुई ने, गया देवलोक मझार ।।३७।।

चवि मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर, भगवती मां अधिकार ।।३८।।

श्रेणिक नो बेटो, मोटो मुनिवर मेघ ।
तजी आठ अंतेउरी, आण्यो मन संवेग ।।३९।।

वीर पै व्रत लेई ने, बांधी तप नी तेग ।
गया विजय विमाने, चवि लेसे शिव-वेग ।।४०।।

धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बतीसो नार ।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ।।४१।।

शुकदेव संन्यासी, एक सहस शिष्य लार ।
पांच-सौ से शेलक, लीधो संयम-भार ।।४२।।

सब सहस अढ़ाई, घणा जीवों ने तार ।
पुंडरिकगिरि ऊपर, कियो पादोपगमन संथार ।।४३।।

आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार ।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ।।४४।।

धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध ।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ।।४५।।

श्री मल्लीनाथ ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय ।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, मोटी पदवी पाय ।।४६।।

वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान ।
पोते चारित्र लई ने, पाम्या मोक्ष-निधान ।।४७।।

धन्य तेतली मुनिवर, दियो छ काय अभयदान ।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान ।।४८।।

धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी नार ।
थेवरां नी पासे, लीधो संयम-भार ।।४९।।

श्री नेमि वंदन नो, एहवो अभिग्रह कीध ।
मास-मासखमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ।।५०।।

धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार ।
कीड़ियों नी करुणा, आणी दया अपार ।।५१।।

कड़वा तूँबा नो, कीधो सगलो आहार ।
सर्वार्थसिद्ध पहुंत्या, चवि लेसे भव-पार ।।५२।।

वलि पुंडरिक राजा, कुंडरिक डिगियो जाण ।
पोते चारित्र लेई ने, न घाली धर्म मां हाण ।।५३।।

सर्वार्थसिद्ध पहुंत्या, चवि लेसे निर्वाण ।
श्री ज्ञातासूत्र मां, जिनवर कर्‌या बखाण ।।५४।।

गौतमादिक कुंवर, सगा अठारे भ्रात ।
सब अंधकविष्णु-सुत, धारिणी ज्यांरी मात ।।५५।।

तजी आठ अंतेउर, काढ़ी दीक्षा नी बात ।
चारित्र लेई ने, कीधो मुक्ति नो साथ ।।५६।।

श्री अनीकसेनादिक, छहे सहोदर भाय ।
वसुदेव ना नंदन, देवकी ज्यांरी माय ।।५७।।

भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण ।
सुलसा-घर वधिया, सांभली नेम नी वाण ।।५८।।

तजी बत्तीस-बत्तीस अंतेउर, निकलिया छिटकाय ।
नल कूबेर समाना, भेट्या श्री नेमि ना पाय ।।५९।।

करी छठ-छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय ।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय ।।६०।।

वलि दारुक सारण, सुमुख-दुमुख मुनिराय ।
वलि कुंवर अनाधृष्ट, गया मुक्ति-गढ़ मांय ।।६१।।

वसुदेव ना नंदन, धन-धन गजसुकुमाल ।
रूपे अति सुंदर, कलावन्त वय बाल ।।६२।।

श्री नेमी समीपे, छोड्यो मोह-जंजाल ।
भिक्षु नी पड़िमा, गया मसाण महाकाल ।।६३।।

देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल ।
खेरा नां खीरा, शिर ठविया असराल ।।६४।।

मुनि नजर न खंडी, मेटी मन नी झाल ।
परीषह सही ने, मुक्ति गया तत्काल ।।६५।।

धन जाली मयाली, उवयाली आदि साध ।
शांब ने प्रद्युम्न, अनिरुध साधु अगाध ।।६६।।

वलि सतनेमि, दृढ़नेमि, करणी कीधी निर्बाध ।
दशे मुक्ति पहुंत्या, जिनवर-वचन आराध ।।६७।।

धन अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर ।
वीर पै व्रत लई ने, सत्यवादी हुआ शूर ।।६८।।

करी छठ-छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर ।
छह मासां मांही, कर्म किया चकचूर ।।६९।।

कुँवर अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम ।
सुणि वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम ।।७०।।

चारित्र लेई ने, पहुंत्या शिवपुर-ठाम ।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम ।।७१।।

वलि कृष्णराय नी, अग्रमहिषी आठ ।
पुत्र-बहु दोय, संच्या पुण्य ना ठाठ ।।७२।।

जादव-कुल सतियां, टाल्यो दुःख उचाट ।
पहुंची शिवपुर मां, ए छे सूत्र नो पाठ ।।७३।।

श्रेणिक नी राणी, काली आदिक दश जाण ।
दशे पुत्र-वियोगे, सांभली वीर नी वाण ।।७४।।

चंदनबाला पै, संयम लेई हुई जाण ।
तप कर देह झौंसी, पहुंची छै निर्वाण ।।७५।।

नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार ।
सगली चंदनबाला पै, लीधो संयम-भार ।।७६।।

एक मास संथारे, पहुंची मुक्ति मंझार ।
ए नेवुं जणा नो, अंतगड मां अधिकार ।।७७।।

श्रेणिक ना बेटा, जाली आदिक तेवीस ।
वीर पै व्रत लेई ने, पाल्यो विसवावीस ।।७८।।

तप कठिन करी ने, पूरी मन जगीश ।
देवलोके पहुंत्या, मोक्ष जासे तजी रीश ।।७९।।

काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार ।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार ।।८०।।

करी छठ-छठ पारणा, आयंबिल उज्झित आहार ।
श्री वीर बखाण्यो, धन धन्नो अणगार ।।८१।।

एक मास संथारे, सर्वार्थसिद्ध पहुंत ।
महाविदेह क्षेत्र मां, करसे भवनो अंत ।।८२।।

धन्ना नी रीते, हुआ नव ही संत ।
श्री अनुत्तरोववाई मां, भाखि गया भगवंत ।।८३।।

सुबाहु प्रमुख, पांच-पांच सौ नार ।
तजी वीर पे लीधा, पांच महाव्रत सार ।।८४।।

चारित्र लेई ने, पाल्यो निर् अतिचार ।
देवलोक पहुंच्या, सुखविपाके अधिकार ।।८५।।

श्रेणिक ना पोता, पउमादिक हुआ दस ।
वीर पै व्रत लेई ने, काढ्यो देह नो कस ।।८६।।

संयम आराधी, देवलोक मां जई बस ।
महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जस ।।८७।।

बलभद्र ना नन्दन, निषधादिक हुआ बार ।
तजी पचास अंतेउरी, त्याग दियो संसार ।।८८।।

सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध ।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, होसे विदेहे सिद्ध ।।८९।।

धन्ना ने शालिभद्र, मुनीश्वरों नी जोड़ ।
नारी ना बंधन, तत्क्षण नांख्या तोड़ ।।९०।।

घर-कुटुम्ब-कबीलो, धन-कंचन नी कोड़ ।
मास-मासखमण तप, टालसे भव नी खोड़ ।।९१।।

श्री सुधर्मा ना शिष्य, धन-धन जंबू स्वाम ।
तजी आठ अंतेउरी, मात-पिता धन-धाम ।।९२।।

प्रभवादिक तारी, पहुंत्या शिवपुर-ठाम ।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मां राख्यूं नाम ।।९३।।

धन ढंढण मुनिवर, कृष्णराय ना नंद ।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव-फंद ।।९४।।

वलि खंदक ऋषि नी, देह उतारी खाल ।
परीषह सही ने, भव-फेरा दिया टाल ।।९५।।

वलि खंदक ऋषि ना, हुआ पांचसौ शीश ।
घाणी मां पील्या, मुक्ति गया तज रीश ।।९६।।

संभूतिविजय-शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय ।
चौदह पूर्वधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ।।९७।।

वलि आर्द्रकुंवर मुनि, स्थूलभद्र नंदिषेण ।
अरणक अइमुत्तो, मुनीश्वरों नी श्रेण ।।९८।।

चौबीसे जिन ना मुनिवर, संख्या अठावीश लाख ।
ऊपर सहस अड़तालीस, सूत्र परंपरा भाख ।।९९।।

कोई उत्तम वांचो, मोंढे जयणा राख ।
उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लगे इम भाख ।।१००।।

धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान ।
गज-होदे पायो, निर्मल केवल ज्ञान ।।१०१।।

धन आदीश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय ।
चारित्र लेई ने, मुक्ति गई सिद्ध होय ।।१०२।।

चौबीसे जिन नी, बड़ी शिष्यणी चौबीस ।
सती मुक्ति पहुंच्या, पूरी मन जगीश ।।१०३।।

चौबीसे जिन ना, सर्व साधवी सार ।
अड़तालीस लाख ने, आठ से सत्तर हजार ।।१०४।।

चेड़ा नी पुत्री, राखी धर्म नी प्रीत ।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत ।।१०५।।

पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयंती सीत ।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत ।।१०६।।

चौबीसे जिन नां, साधु-साधवी सार ।
गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार ।।१०७।।

इण अढ़ी द्वीप मां, घरड़ा तपसी बाल ।
शुद्ध पंच महाव्रत धारी, नमो-नमो तिहुं काल ।।१०८।।

इण यतियों सतियों ना, लीजे नित प्रति नाम ।
शुद्ध मन थी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम ।।१०९।।

इण यतियों सतियों सूं, राखो उज्ज्वल भाव ।
इम कहे ऋषि 'जयमल' एह तिरण नो दाव ।।११०।।

संवत् अठारा ने, वर्ष साते सिरदार ।
गढ़ जालोर मांही, एह कह्यो अधिकार ।।१११।।

* * *

तप नहीं करना चाहिए

स्वर्ग के लिए
धन के लिए
पुत्र प्राप्ति के लिए
कीर्ति के लिए
शत्रुनाश के लिए ।

मध्यम साधु-वंदना

नित करूं साधुजी ने वंदना...।
प्रहसम उठ्याँ भाव सुं, सुमरो पंच नवकारो ए ।
सूत्र-सिद्धांत ज्यांरे मुख बसे, चवदे पूरब धारो ए ।।१।।
नित करूं साधु जी ने वंदना, आणी हरख-उमेदो ए ।
सफल करूं भव नर तणो, मिट जावे दुःख-खेदो ए ।।२।।
बारह गुणों करी दीपता, पहले पद जगदीशो ए ।
देव आराधूं एहवा, जीत्या राग ने रीसो ए ।।३।।
आठ गुण सिद्धां तणां, अतिशय छे इकतीसो ए ।
दोय पदां रा भेला किया, गुण हुआ पूरा बीसो ए ।।४।।
आचारज तीजे पदे, दीपे गुण छत्तीसो ए ।
उपाध्यायजी ने वंदना, होइजो म्हारी निशदीसो ए ।।५।।
द्वादशांगी सूत्रां प्रते, भणे ने भणावे ए ।
गुण पच्चीस करी शोभता, सेवा कियां सुख पावे ए ।।६।।
गुण सत्ताइस करी दीपतां, विचरे छे अबारूं ए ।
हो जो ज्यांने म्हारी वंदना, अट्ठोत्तर सौ बारूं ए ।।७।।
एक सौ आठ ज गुण कह्यां, नवकारवाली ना पूरा ए ।
एकाग्र चित करी सुमरलो, आखर छे अति रूड़ा ए ।।८।।
पहला जिनवर नित नमूं, श्री आदीश्वर ना पाया ए ।
शासन शुद्ध वरताय ने, मोक्ष नगर सिधाया ए ।।९।।
प्रथम जिनवर-सुत नमूं, एक सौ ने पूरा ए।
इण भव मुगते सिधाविया, करणी कर हुआ सूरा ए ।।१०।।

चौरासी गणधर हुआ, लब्धि तणा भंडारो ए ।
सहस चौरासी शिष्य हुआ, लीधो संजम भारो ए ।।११।।
तीन लाख शिष्यणी हुई, सहस चालीस शिव पहुँची ए ।
पहली तो हुई बाई मोटकी, जिणरो नाम छे ब्राह्मी ए ।।१२।।
कंपिल ब्राह्मण मोटको, सोनो लाऊं दोय मासो ए ।
क्रोडां ही पाछो वल्यो नहीं, तृष्णा रो बड़ो ही तमासो ए ।।१३।।
होवे इच्छा सो ही मांगले, बोले एम नरेशो ए ।
ममता पाछी मूकी ने, लूंच्या सिर ना केसो ए ।।१४।।
पांचसौ भील प्रतिबोध ने, कह्यो जिनेश्वर एमो ए ।
कर्म खपावी मुगते गया, पाम्या पदवी खेमो ए ।।१५।।
नमिराय हुआ मोटका, प्रत्येक बुद्ध श्रीकारी ए ।
छोड़ी घणी ऋद्धि-साहबी, एक सहस अठ नारी ए ।।१६।।
शक्रेन्दर तिहां आविया, करी ब्राह्मण नो रूपो ए ।
दश प्रश्न तिहां पूछिया, सांभल जो तुम भूपो ए ।।१७।।
हेतु-कारण कह्या घणां, न्यारा-न्यारा भेदो ए ।
उत्तर दीधो आछी तरह, आणी न मन में खेदो ए ।।१८।।
इन्द्र सुणी हर्षित हुओ, धन-धन आप री वाणी ए ।
अठे ही आप उत्तम हुवा, आगे पद निरवाणी ए ।।१९।।
वीर कहे गोयम भणी, सांभल जो तुम साधो ए ।
पाँचों इंद्रिय पाय ने, मत करो परमादो ए ।।२०।।
बहुश्रुत सब साधां भणी, होजो म्हारो नमस्कारो ए ।
आपरां गुण कहिया घणां, सोलह उपमा श्री कारो ए ।।२१।।

हरिकेशी नामे जती, जाति तणा चंडालो ए ।
सेवा करे ज्यांरी देवता, छ कायां रा प्रतिपालो ए ।।२२।।
यज्ञवाड़े ऊठ्या गोचरी, बोल्या अनारज तड़की ए ।
देवता भीड़ आयां थकां, छाती घणां री धड़की ए ।।२३।।
डरिया ब्राह्मण तिण समै, राय ऋषीश्वर रूठा ए ।
विनती कर प्रतिलाभिया, पंच द्रव्य तिहां बूठा ए ।।२४।।
जाति रो कारण को नहीं, करणी रा फल सारो ए ।
हरिकेशी मोटा मुनि, पहुंच्या मुक्ति मझारो ए ।।२५।।
चित्त उपदेश दियो आय ने, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती आगे ए ।
पेली बंधन पड़ गयो, अब कारी कैसे लागे ए ।। २६।।
हाथी कादा में कळ रह्यो, तिम मुझ ने तुम जाणो ए ।
चित्त उत्कृष्टी आदरी, पहुंत्या छे निर्वाणो ए ।।२७।।
इक्षुकार राजा तिहां, राणी कमलावती सारो ए ।
भृगु पुरोहित यशा भारिया, तेहनां दोय कुमारो ए ।।२८।।
अनुक्रमे छ ही नीसर्‌या, लीधो संजम-भारो ए ।
कर्म खपावी मुगते गया, चवदमे अध्ययन विस्तारो ए ।।२९।।
संजती आहिड़े नीसर्‌यो, मार्यो मृग ने बाणो ए ।
गर्दभाली गुरु देख ने, मन में घणो शंकाणो ए ।।३०।।
खमजो अपराध माहरो, इण अवसर हूँ चूको ए ।
कृपा करो हे महामुनि ! थांरी वाणी रो भूखो ए ।।३१।।
म्हांसू थे राजा डरपिया, थांसूं डरपे घणां जीवो ए ।
सुणो राजा मोटका, मति दो नरक री नींवो ए ।।३२।।

भय सात संसार में, मरण तणो भय भारी ए ।
ऋषीश्वर कोप्यां पछे, क्रोडां री कर दे छारी ए ।।३३।।
अभय हो राजा तुम भणी, म्हारो भय मत राखो ए ।
ओछा जीवन कारणे, समता-रस तुम चाखो ए ।।३४।।
अस्थिर राजा थारो आउखो, जीवां ने मत संतापो ए ।
थारे तो राजा साथे चालसी, पुण्य एक बीजो पापो ए ।।३५।।
बिजली रो झबकार ज्यों, जैसे संझा रो भाणो ए ।
डाभ-अणी जल-बिंदुवो, जैसो कुंजर रो कानो ए ।।३६।।
हय-गय-रथ-पायक दल, सेना चार प्रकारो ए ।
थे ही राजा छोड़ ने, लेवो नी संजम-भारो ए ।।३७।।
इत्यादि उपदेश दियो, खुली अभ्यन्तर गांठो ए ।
संजती राजा संजम लियो, कोरे घड़े लाग्यो छांटो ए ।।३८।।
अनेक चक्रवर्ती निसर्‌या, छोड़ी राज-भण्डारो ए ।
चौसठ सहस अंतेउरी, दो-दो वारांगणा लारो ए ।।३९।।
भरतेश्वर जी आदि दे, दशों ही चक्रवर्ती सारो ए ।
शुद्ध संजम पाल ने, कर दियो खेवो पारो ए ।।४०।।
इण सर्पिणी मांहे हुवा, आठ राम निरवाणो ए ।
बलभद्र दीक्षा आदरी, ब्रह्मलोके सुर जाणो ए ।।४१।।
करकण्डू आदिक हुआ, प्रत्येक बुद्ध श्रीकारो ए ।
राय उदायी हुआ मोटका, सोलह देश सिरदारो ए ।।४२।।
राय ऋषिश्वर चर्चा करी, टाल्यां आत्मिक दोषो ए ।
दोनों ही कर्म खपाय ने, जाय विराज्या मोक्षो ए ।।४३।।

दशार्णभद्र राजा नीसर्‌यां, कीनो महोच्छव भारी ए ।
रथ सिणगार्‌यां बाजणा, साथे पांच सौ नारी ए ।।४४।।
मो सम किण ही न वांदिया, मन में एम विचारी ए ।
शक्रेन्दर तिहां आय ने, दियो मान उतारी ए ।।४५।।
आज्ञा ऐरावत ने दीवी, हाथी (वैक्रिय) साठ हजारो ए ।
एक-एक हाथी तणा, मूण्डा पांच सौ बारो ए ।।४६।।
(एक-एक मूंडा ऊपरे, दंत एक सौ ने आठो ए ।
एक-एक दंत ऊपरे, बावड़ियां एक सौ ने आठो ए ।।
एक-एक बावड़ी ऊपरे, कमल एक सौ ने आठो ए ।
एक-एक कमल ऊपरे, पांखडियां एक सौ ने आठो ए ।।
एक-एक पांखड़ी ऊपरे, महलायत एक सौ ने आठो ए ।
एक-एक महलायत मांयने, नाटक बत्तीस प्रकारो ए ।।)
देखी ऋद्धि इंदर तणी, चित्त पाम्यो चमत्कारो ए ।
इहाँ तो मान रहे नहीं, हूँ लेऊं संजम भारो ए ।।४७।।
(इसड़ो मन में सोच ने, राजा चाल्यो तत्कालो ए ।
ईशानकोण में जाय ने, लोच कियो तिणवारो ए ।।)
इन्द्र आय वंदणा करी, धन दशारणभद्र राजा ए ।
थे तो संजम आदर्‌यो, थारां अधिक गुण गाजा ए ।।४८।।
मृगापुत्र महलां बैठा, दीठां श्री अणगारो ए ।
जाति-सुमिरण पामिने, हेठा उतर्‌या तिण वारो ए ।।४९।।
आय माता ने इम कहे, हूँ लेसूं संजम-भारो ए ।
ज्यांने माताजी बोलिया, थे छो राजकुमारो ए ।।५०।।

संजम छे वत्स दोहिलो, जैसी खांडा नी धारो ए ।
कायर ने माता दोहिलो, सूरां ने सुखकारो ए ।।५१।।
नरक निगोदां दुःख सह्‌यां, अनंतानंत विचारो ए ।
उत्तर-प्रत्युत्तर हुवा घणां, लीनो संजम भारो ए ।।५२।।
मास संथारो आदर्‌यो, पहुंत्या मुक्ति मंझारो ए ।
सूत्र उत्तराध्ययन में, अध्ययन उगणीसमें भारो ए ।।५३।।
श्रेणिक रेवाड़ी निसर्‌यो, दीठां अनाथी अणगारो ए ।
रूप देखी अचरज थयो, हेठो उतर्‌यो तिण वारो ए ।।५४।।
कर जोड़ी प्रश्न पूछियो, वय थांरी सुकुमालो ए ।
संजम किम धारण कियो, क्यों भोग तज्यो इण कालो ए ।।५५।।
वळता मुनिवर इम कहे, सुण राजा मुझ बातो ए ।
रक्षा करे जैसो को नहीं, म्हांरे माथे पर नाथो ए ।।५६।।
जग में कोई केहनो नहीं, निज अनुभव करि दीठो ए ।
तिण कारण संजम लियो, उत्तर दियो अति मीठो ए ।।५७।।
लाभालाभ हर्ष शोक नहीं, इत्यादिक गुण भारी ए ।
कर्म खपाय मुगते गया, ज्यांरी जाऊँ बलिहारी ए ।।५८।।
चंदन सूं कोई चर्च ने, कोई वसोला सूं छेदे ए ।
मुनिवर समता आण ने, राग-द्वेष नहीं वेदे ए ।।५९।।
संवत् अठारे पचावने, फलोदी ग्राम चौमासो ए ।
पूज्य जयमलजी रा प्रसाद सूं, 'रायचंद' भणे छे हुलासो ए ।।६०।।

❋ ❋ ❋

बृहदालोयणा

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत ।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत ।।१।।

अरिहंत-सिद्ध समरूं सदा, आचारज-उवज्झाय ।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नमाय ।।२।।

शासन-नायक सुमरिये, भगवंत वीर जिनंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ।।३।।

अंगूष्ठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ।।४।।

श्री गुरुदेव-प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यों घन बरसत बेलि-तरु, फूल-फलन की वृद्ध ।।५।।

पंच परमेष्ठी देव को, भजन पूर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण ।।६।।

श्री जिन-युग पद-कमल में, मुझ मन भ्रमर बसाय ।
कब ऊगे वो दिन करूँ, श्री मुख दर्शन पाय ।।७।।

प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत ।
कथन करूँ अब जीव को, किंचित् मुझ विरतंत ।।८।।

आरंभ-विषय-कषाय-वश, भमियो काल अनंत ।
लख चौरासी योनि से, अब तारो भगवंत ।।९।।

देव-गुरु-धर्म सूत्र में, नव-तत्त्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय ।।१०।।

लघु साधु वन्दना

साधुजी ने वन्दना नित-नित कीजे, प्रात उगन्ते सूर रे प्राणी ।
नीच गति मां ते नहीं जावे, पामे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी ।।१।।

मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छह काया रा प्रतिपाल रे प्राणी ।
भ्रमर-भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बयालिस टाल रे प्राणी ।।२।।

ऋद्धि-सम्पदा मुनि कारमी जाणी, दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी ।
एवां पुरुषां नी सेवा करतां, आठ कर्म जाय टूट रे प्राणी ।।३।।

एक-एक मुनिवर रसना त्यागी, एक-एक ज्ञान-भंडार रे प्राणी ।
एक-एक वैयावचिया वैरागी, जेना गुणां नो नहीं पार रे प्राणी ।।४।।

गुण सत्तावीस करी ने दीपे, जीत्या परिषह बावीस रे प्राणी ।
बावन तो अनाचार ने टाले, तेने नमाऊँ म्हारो शीश रे प्राणी ।।५।।

जहाज समान ते संत मुनिश्वर, भव्य जीव बेसे आय रे प्राणी ।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुंचाय रे प्राणी ।।६।।

साधु-चरणे जीव साता पावे, पावे ते लील-विलास रे प्राणी ।
जन्म-जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे प्राणी ।।७।।

एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी ।
नरक गति मां ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी ।।८।।

प्रात उठी ने उत्तम प्राणी, सुणो साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी ।
एवां पुरुषां नी सेवा करतां, पावे अमर विमान रे प्राणी ।।९।।

संवत् अठारह ने वर्ष अड़तीसे, बूसी गाँव चौमास रे प्राणी ।
ऋषि 'आसकरण' इण पर जंपे हूं तो उत्तम साधां रो दास रे प्राणी।।१०।।

मोह-अज्ञान-मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग ।
वैद्यराज-गुरु शरण से, औषध ज्ञान-वैराग ।।११।।

जे मे जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार ।
प्रभो ! तुम्हारी साख से, बारं-बार धिक्कार ।।१२।।

बुरा-बुरा सब को कहूँ, बुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधूँ आपणो, मुझ-सा बुरा न कोय ।।१३।।

कहवा में आवे नहीं, अवगुण भर्‌या अनंत ।
लिखवा में क्यों कर लिखूँ, जानो श्री भगवंत ।।१४।।

करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद ।
मिथ्या-मोह-अज्ञान को, करजो ग्रंथि-भेद ।।१५।।

पतित-उद्धारण नाथ जी, अपनो विरुद विचार ।
भूल-चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार ।।१६।।

माफ करो सब माहरा, आज तलक ना दोष ।
दीन-दयाल देवो मुझे, श्रद्धा-शील संतोष ।।१७।।

आतम-निंदा शुध भणी, गुणवंत-वंदन-भाव ।
राग-द्वेष पतला करी, सब से खमत-खमाव ।।१८।।

छूटूं पिछला पाप से, नवा न बाधूं कोय ।
श्री गुरुदेव-प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ।।१९।।

परिग्रह-ममता को तजी, पंच महाव्रत धार ।
अंत समय आलोयणा, करूं संथारो सार ।।२०।।

तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव-सुख-धन ।।२१।।

अरिहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर-निर्जरा धर्म ।
केवलि-भाषित शासतर, यही जैनमत-मर्म ।।२२।।

आरंभ-विषय-कषाय तज, शुध समकित व्रत धार ।
जिन-आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार ।।२३।।

क्षण निकमो रहणो नहीं, करणो आतम-काम ।
भणणो-गुणणो-सीखणो, रमणो ज्ञान-आराम ।।२४।।

अरिहंत सिद्ध सब साधु जी, जिन-आज्ञा धर्म सार ।
मांगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार ।।२५।।

घड़ी-घड़ी पल-पल सदा, प्रभु सुमिरण को चाव ।
नरभव सफलो जो करें, दान-शील-तप-भाव ।।२६।।

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय ।
कर्म-मैल का आंतरा, बूझे विरला कोय ।।२७।।

कर्म पुद्‌गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान ।
दो मिलकर बहुरूप हैं, बिछड्‌यां पद निरवाण ।।२८।।

जीव करम भिन-भिन करो, मनुष-जनम को पाय ।
ज्ञानातम वैराग्य से, धीरज ध्यान लगाय ।।२९।।

द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण ।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन-ज्ञान ।।३०।।

गर्भित पुद्गल-पिंड में, अलख अमूरति देव ।
फिरे सहज भव-चक्र में, यह अनादि की टेव ।।३१।।

फूल-अतर, घी-दूध में, तिल में तेल छिपाय ।
यूं चेतन-जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय ।।३२।।

जो-जो पुद्गल की दशा, ते निज माने हंस ।
या ही भरम विभाव ते, बढ़े करम को वंश ।।३३।।

रतन बंध्यो गठरी विषे, सूर्य छिप्यो घन मांय ।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नाय ।।३४।।

ज्यों बंदर मदिरा पीयां, बिच्छु डंकित गात ।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यों कर्मों का उत्पात ।।३५।।

कर्म संग जीव मूढ़ है, पावे नाना रूप ।
कर्म रूप मल के टले, चेतन सिद्ध स्वरूप ।।३६।।

शुद्ध चेतन उज्ज्वल द्रव्य, रह्यो करम-मल छाय ।
तप-संयम से धोवतां, ज्ञान-ज्योति बढ़ जाय ।।३७।।

ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप ।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपण स्वरूप ।।३८।।

कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चाँदी रूप ।
निर्मल ज्योति प्रकट भयां, केवल ज्ञान अनूप ।।३९।।

मूसी पावक सोहगी, फूंकां तणो उपाय ।
रामचरण चारूं मिल्यां, मैल कनक को जाय ।।४०।।

कर्म रूप बादल मिटे, प्रकटे चेतन-चंद ।
ज्ञान रूप गुण चांदनी, निर्मल ज्योति अमंद ।।४१।।

राग-द्वेष दो बीज से, कर्म-बंध की व्याध ।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध ।।४२।।

अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कछु होत ।
पुण्य छतां पुण्य होत है, दीपक दीपक-ज्योत ।।४३।।

कल्पवृक्ष चिंतामणि, इण भव में सुखकार ।
ज्ञान-वृद्धि इनसे अधिक, भव-दुःख भंजनहार ।।४४।।

राई मात्र घट-वध नहीं, देख्या केवल ज्ञान ।
यह निश्चय कर जान के, तजिये पहलो ध्यान ।।४५।।

दूजा भी नहिं चिंतिये, कर्म-बंध बहु दोष ।
तीजा-चौथा ध्याय के, करिये मन संतोष ।।४६।।

गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वांछे नांय ।
वर्तमान वरते सदा, सो ज्ञानी जग मांय ।।४७।।

सम्यग्दृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
अंतर्गत न्यारो रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल ।।४८।।

सुख-दुःख दोनूं बसत है, ज्ञानी के घट मांय ।
गिरि सर दीसे मुकुर में, भार भींजवो नांय ।।४९।।

जो-जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय ।
ममता-समता-भाव से, कर्म बंध-क्षय होय ।।५०।।

बांध्या सो ही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव ।
सफल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त भाव ।।५१।।

बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुड़ाय ।
आप ही करता-भोगता, आप ही दूर कराय ।।५२।।

पथ-कुपथ घट-बध करी, व्याधि घट-बढ़ जाय ।
पुण्य-पाप कर जीव यों, सुख-दुःख जग में पाय ।।५३।।

सुख दीयां सुख होत है, दुःख दीयां दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवर कूं, निज को हणे न कोय ।।५४।।

ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष ।
इन कूं कभी न छोडिये, श्रद्धा-शील-संतोष ।।५५।।

सत मत छोड़ो हो नरां, लक्ष्मी चौगुणी होय ।
सुख-दुःख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ।।५६।।

गो-धन गज-धन रतन-धन, कंचन खान सुखान ।
जब आवे संतोष-धन, सब धन धूल समान ।।५७।।

शील-रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान ।
तीन लोक की संपदा, रही शील में आन ।।५८।।

शीले सर्प न आभड़े, शीले शीतल आग ।
शीले अरि-करि-केसरी, भय जावे सब भाग ।।५९।।

शील रतन के पारखी, मीठा बोले वैण ।
सब जग से ऊँचा रहे, नीचा राखे नैण ।।६०।।

तन कर मन कर वचन कर, देत न काहूं दुःख ।
कर्म-रोग पातक झरे, देखत वाका मुख ।।६१।।

पान झरंता इम कहे, सुन तरुवर वनराय ।
अबके बिछुड़े कब मिलें, दूर पड़ेंगे जाय ।।६२।।

तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात ।
इस घर याही रीत है, इक आवत इक जात ।।६३।।

वरस दिनां की गांठ को, उच्छव गाय-बजाय ।
मूरख नर समझे नहीं, वरस गांठ को जाय ।।६४।।

।। सोरठा ।।

पवन तणी परतीत, किण कारण तें दृढ़ कियो ।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नहीं ।।६५।।

।। दोहा ।।

कर्ज विराणा काढ़ के, खरच किया बहु दाम ।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देणा पड़सी दाम ।।६६।।

बिन दियां छूटे नहीं, यह निश्चय कर मान ।
हँस-हँस के क्यों खरचिये, दाम विराणा जान ।।६७।।

संसारी सुख भोगतां, लागे मिष्ट अज्ञान ।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान ।।६८।।

काम-भोग प्यारा लगे, फल किंपाक समान ।
मीठी खाज खुजालतां, पीछे दुःख की खान ।।६९।।

जप-तप-संजम दोहिलो, औषध कड़वी जाण ।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निरवाण ।।७०।।

डाभ अणी जल-बिंदुवो, सुख विषयन को चाव ।
भवसागर दुख-जल भर्‌यो, यह संसार-स्वभाव ।।७१।।

चढ़ उत्तंग जहाँ से पतन, शिखर नहीं वो कूप ।
जिस सुख भीतर दुख बसे, सो सुख भी दुःख रूप ।।७२।।

जब लग जिसके पुण्य का, पहुंचे नहीं करार ।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार ।।७३।।

पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप ।
दाझे वन की लाकड़ी, प्रजले आपो-आप ।।७४।।

पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग ।
दाबी-दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग ।।७५।।

बहु बीती थोड़ी रही, अब तो सूरत संभार ।
परभव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार ।।७६।।

चार कोश ग्रामान्तरे, खरची बांधे लार ।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म-विचार ।।७७।।

'रज्जब' रज ऊँची गई, नरमाई के पाण ।
पत्थर ठोकर खात है, करड़ाई के ताण ।।७८।।

अवगुण उर धरिये नहीं, जो हो वृक्ष बबूल ।
गुण लीजे कालू कहे, नहीं छाया में शूल ।।७९।।

जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय ।
वां का बुरा न मानिये, (वो) लेन कहाँ से जाय ।।८०।।

गुरु कारीगर सारिखा, टांची वचन विचार ।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार ।।८१।।

संतन की सेवा कियां, प्रभु रींझत हैं आप ।
जाँका बाल खिलाइये, ताँका रींझत बाप ।।८२।।

भव-सागर संसार में, दीपा श्री जिनराज ।
उद्दम कर पहुंचे तिरे, बैठ धर्म की जहाज ।।८३।।

निज आतम कूं दमन कर, पर आतम कूं चीन ।
परमातम को भजन कर, सो ही मत परवीन ।।८४।।

समझू शंके पाप से, अणसमझू हरषंत ।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म बंधंत ।। ८५।।

समझ सार संसार में, समझू टाले दोष ।
समझ-समझ कर जीवड़ा, गया अनंता मोक्ष ।।८६।।

उपशम विषय-कषाय नो, संवर तीनूं योग ।
किरिया जतन-विवेक से, मिटे कर्म दुःख-रोग ।।८७।।

रोग मिटे समता बधे, समकित व्रत आराध ।
निर्वेरी सब जीव को, पावे मुक्ति समाध ।।८८।।

इति भूल-चूक मिच्छा मि दुक्कडं

सिद्ध श्री परमातमा अरिगंजन अरिहंत ।
इष्टदेव वंदूँ सदा, भयभंजन भगवंत । १।।

अनंत चौबीसी जिन नमूँ, सिद्ध अनंता कोड़ ।
वर्तमान जिनवर सभी, केवली दो-नव कोड़ ।। २ ।।

गणधरादि साधु सब, समकित व्रत गुणधार ।
यथायोग वंदन करूँ, जिन-आज्ञा अनुसार ।।३।।

(पहले एक नमस्कार मंत्र का उच्चारण करना)

पंच परमेष्ठी देव को, भजन पूर पंचान
कर्म-शत्रु भाजे सभी, शिव-सुख मंगल थान ।।४।।

अरिहंत-सिद्ध समरूं सदा, आचारज-उवज्झाय ।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नमाय ।।५।।

शासन-नायक सुमरिये, वर्धमान जिन चंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ।।६।।

अंगूष्ठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ।।७।।

श्री जिन-युग पद-कमल में, मुझ मन भ्रमर बसाय ।
कब ऊगे वो दिन करूँ, श्री मुख दर्शन पाय ।।८।।

प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत ।
कथन करूँ अब जीव का, किंचित् मुझ विरतंत ।।९।।

हूं अपराधी अनादि को, जनम-जनम गुनाह किया भरपूर के ।
लूटिया प्राण छःकाय ना, सेविया पाप अठारह करूर के.. ।।
श्री मुनिसुव्रत साहिबा ... ।।१।।

आज दिन तक इस भव में और पहले संख्यात-असंख्यात व अनंत भवों में कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा, प्ररूपणा, फरसना एवं सेवनादिक संबंधी जो पाप-दोष लगा हो, उनका मिच्छा मि दुक्कडं । मैंने अज्ञानपन से, मिथ्यापन से, अव्रतपन से, कषायपन से तथा अशुभयोग से प्रमाद करके अपछंदा-अविनीतपना किया; श्री अरिहंत भगवंत, वीतराग देव, केवल-ज्ञानी, गणधर देव, आचार्य जी महाराज, उपाध्याय जी महाराज, साधु जी महाराज, साध्वी जी महाराज तथा सम्यग्दृष्टि, स्वधर्मी श्रावक-श्राविका-इन उत्तम पुरुषों की एवं शास्त्र, सूत्र-पाठ, अर्थ, परमार्थ व धर्म-संबंधी समस्त पदार्थों की अभक्ति, अविनय, अशातना आदि की, कराई व अनुमोदी और मन-वचन-काया से, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से सम्यक् प्रकार विनय, भक्ति, आराधना, पालना, फरसना, सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नहीं की, नहीं कराई तथा नहीं अनुमोदी तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं । मेरी भूल-चूक-अवगुण-अपराध सब मुझे माफ करो, मैं मन-वचन-काया करके खमाता हूँ ।

मैं अपराधी गुरुदेव को, तीन भुवन को चोर ।
ठगूं विराना माल मैं, हा-हा कर्म कठोर ।।१।।

कामी- कपटी- लालची, अपछंदा अविनीत ।
अविवेकी-क्रोधी बहुत, महापापी "रणजीत" ।।२।।

('रणजीत' के स्थान पर आलोयणा पाठक अपना नाम बोले ।)

जे मे जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार ।
नाथ तुम्हारी साख से, बार-बार धिक्कार ।।३।।

पहला पाप प्राणातिपात- मैंने छः काय-पन से छः काय की विराधना की, पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय, बे-इन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेंद्रिय असन्नी, सन्नी, गर्भज एवं चौदह प्रकार के सम्मूर्च्छिम आदि स्थावर-त्रस जीवों की विराधना मन-वचन-काया से की, कराई, अनुमोदी; उठते-बैठते, सोते-हालते-चालते, शस्त्र-वस्त्र-पात्र, मकान आदि उपकरण उठाते-धरते, लेते-देते, वरतते-वरतावते अप्पडिलेहणा-दुप्पडिलेहणा संबंधी, अप्पमज्जणा-दुप्पमज्जणा संबंधी, न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा संबंधी और आहार-विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में संख्यात-असंख्यात और निगोद आश्री अनंत जीवों में से जिन-जिन के मैंने प्राण लूटे, आघात पहुंचाया । उन सब जीवों का मैं अपराधी हूँ, निश्चय करके बदले का देनदार हूँ और महापापी हूँ ; सब जीवों से मैं अपने अपराध-अवगुण व भूल-चूक की माफी चाहता हूँ, सभी मुझे माफ करें । सभी जीवों से मैं देवसी-राइ-पक्खी-चौमासी और संवत्सरी संबंधी क्षमायाचना करता हूँ-

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ।।

वह दिन धन्य होगा, जब मैं छः काय के वैर-बदले से निवृत्त होऊँगा एवं समस्त चौरासी लाख जीव-योनि को अभयदान देऊँगा । वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा ।

सुख दियां सुख होत है, दुःख दियां दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवर कूं, आपकूं हणे न कोय ।।

दूजा पाप मृषावाद-क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश, हास्य के वश एवं भय के वश मृषा (झूठा) वचन बोला हो, निंदा-विकथा की हो, कर्कश-कठोर-मर्म-वचन बोला हो इत्यादि अनेक प्रकार से झूठ बोला हो, बुलवाया हो व अनुमोदा हो तो मन-वचन-काया से तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

थापणमोसा मैं किया, कर्‌यो विश्वासघात ।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नहीं जात ।।
मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं ।

वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूँगा ।

तीसरा पाप अदत्तादान- बिना दी हुई कोई वस्तु ली हो, लोक विरुद्ध बड़ी चोरी की हो, मकान संबंधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में उपयोग सहित या बिना उपयोग से मन-वचन-काया से छोटी चोरी की हो, कराई हो और अनुमोदी हो तथा धर्म-संबंधी ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप की आराधना गुरुदेव की बिना आज्ञा की हो, उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बार-बार मिच्छा मि दुक्कडं ।

वह दिन मेरे लिए धन्य एवं परम-कल्याण रूप होगा, जिस दिन मैं सर्वथा प्रकार से अदत्तादान का त्याग करूँगा ।

चौथा पाप मैथुन- मैथुन-सेवन करने के लिए मन-वचन और काया के योग प्रवर्ताये हों, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया हो, नववाड़ में अशुद्धपन से प्रवृति हुई हो- इस प्रकार मैंने मैथुन-सेवन किया हो, करवाया हो और सेवन करने वाले को अच्छा समझा हो तो उसके लिए मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं ।

वह दिन मेरा धन्य एवं परम क्ल्याण रूप होगा, जिस दिन मैं नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य-शीलरत्न की आराधना करूँगा एवं सर्व प्रकार से काम-विकार से निवृत्त होऊँगा ।

पाँचवाँ पाप परिग्रह- दास-दासी, द्विपद-चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार की सचित्त एवं सोना-चाँदी, वस्त्र-आभूषण आदि अनेक प्रकार की अचित्त वस्तुओं के प्रति ममता-मूर्च्छा रखी हो, क्षेत्र-घर आदि नव प्रकार के बाह्य और चौदह प्रकार के आभ्यंतर परिग्रह को रखा हो, रखवाया हो एवं अनुमोदा हो तथा रात्रि-भोजन, अभक्ष्य आहारादि संबंधी पाप-दोष सेव्या हो तो उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं ।

वह दिन मेरा धन्य एवं परम कल्याण रूप होगा, जिस दिन मैं सब प्रकार से परिग्रह का त्याग कर संसार के प्रपंच से निवृत्त होऊंगा ।

छट्ठा पाप क्रोध- क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दुःखी किया हो ।

सातवाँ पाप मान- अहंकार-भाव लाया हो, तीन गौरव और आठ मद आदि किया हो ।

आठवाँ पाप माया- धर्म-संबंधी तथा संसार-संबंधी अनेक कर्त्तव्यों में कपट किया हो ।

नववाँ पाप लोभ- मूर्च्छा-भाव लाया हो, आशा-तृष्णा-वांछा आदि की हो ।

दसवाँ पाप राग- मन-पसंद वस्तु से स्नेह किया हो ।

ग्यारहवाँ पाप द्वेष- मन को पसंद न आने वाली वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया हो ।

बारहवाँ पाप कलह- अप्रशस्त (खराब) वचन बोल कर क्लेश उत्पन्न किया हो ।

तेरहवाँ पाप अभ्याख्यान- झूठा कलंक दिया हो ।

चौदहवाँ पाप पैशुन्य- दूसरे की चुगली की हो ।

पंद्रहवाँ पाप परपरिवाद- दूसरे का अवगुणवाद (अवर्णवाद) किया हो ।

सोलहवाँ पाप रति-अरति- पाँच इंद्रिय के २३ विषय और २४० विकार है, इनमें मन-पसंद पर राग किया हो और नापसंद पर द्वेष किया हो तथा संयम-तप आदि पर अरति की एवं आरंभादिक असंयम-प्रमाद में रति-भाव लाया हो ।

सतरहवाँ पाप मायामृषावाद- कपट सहित झूठ बोला हो ।

अठारहवाँ पाप मिथ्यादर्शनशल्य- श्री जिनेश्वर देव के बताए मार्ग में शंका-कांक्षा आदि विपरीत प्ररूपणा की हो ।

इस प्रकार अठारह पाप-स्थान द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से, जानते-अजानते मन-वचन और काया से सेवन किया हो, कराया हो और अनुमोदा हो तो दिया वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, इस भव में, पहले के संख्यात-असंख्यात व अनंत भवों में भव-भ्रमण करते आज दिन तक राग-द्वेष, विषय-कषाय, आलस-प्रमाद आदि पौद्गलिक प्रपंच परगुणपर्याय की विकल्प भूल की हो, ज्ञान-दर्शन-चारित्र-चारित्राचारित्र-तप एवं शुद्ध श्रद्धा, शील, संतोष, क्षमा आदि निज स्वरूप की विराधना की हो; उपशम-विवेक-संवर-सामायिक-पौषध-प्रतिक्रमण-ध्यान-मौन आदि व्रत पच्चक्खाण, दान-शील-तप वगैरह की विराधना की हो ; परमकल्याणकारी इन बोलों की आराधना-पालनादिक मन-वचन-काय से नहीं की हो, नहीं कराई हो व नहीं अनुमोदी हो; छह आवश्यक की सम्यक् प्रकार से विधि-उपयोग सहित आराधना-पालना एवं फरसना नहीं की हो या विधि, उपयोग रहित तथा निरादरपने से की हो किंतु आदर-सत्कार, भाव-भक्ति सहित नहीं किया हो; ज्ञान के चौदह, दर्शन के पाँच, बारह व्रतों के साठ, कर्मादान के पंद्रह, संलेखणा के पाँच ऐसे निन्यानवें अतिचार तथा एक सौ चौबीस अतिचार में किसी भी अतिचार का जानते-अजानते सेवन किया हो, कराया हो, अनुमोदा हो तो उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं ।

मैंने जीव को अजीव, अजीव को जीव, धर्म को अधर्म, अधर्म को धर्म, साधु को असाधु, असाधु को साधु श्रद्धा हो- प्ररूपा हो तथा उत्तम पुरुष साधु-मुनिराज व महासतियांजी की सेवा-भक्ति-मान्यता आदि यथाविधि नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी एवं असाधुओं की सेवा-भक्ति व मान्यता आदि का पक्ष किया; मुक्तिमार्ग को संसार का मार्ग .... यावत् पच्चीस मिथ्यात्व में से किसी मिथ्यात्व का सेवन किया हो, कराया हो व अनुमोदा हो; मन-वचन-काया से पच्चीस कषाय संबंधी, पच्चीस क्रिया संबंधी, तेतीस आशातना संबंधी, ध्यान के उन्नीस दोष, वंदना के बत्तीस दोष, सामायिक के बत्तीस दोष, पौषध के अठारह दोष संबंधी कोई पाप-दोष लगा हो, लगाया हो, अनुमोदा हो तो उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं ।

महामोहनीय कर्म-बंध के तीस स्थान को मन, वचन और काया से सेवन किया, कराया व अनुमोदा हो; शील की नववाड़ तथा आठ प्रवचन माता की, श्रावक के इक्कीस गुण तथा बारह व्रतों की मन-वचन-काया से विराधनादि की, कराई व अनुमोदी तथा तीन शुभ लेश्या से लक्षणों की और बोलों की विराधना की, चर्चा-वार्ता आदि में श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा-गोपा हो, नहीं माना हो, अछते की स्थापना की हो, छते की स्थापना नहीं की हो, अछते का निषेध नहीं किया हो, छते की स्थापना और अछते का निषेध करने का नियम नहीं किया हो, कलुषता की हो, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि आठों कर्मों की शुभ-अशुभ प्रकृतियाँ एवं

पचपन कारणों से पाप की बयासी प्रकृतियाँ बांधी, बंधाई व अनुमोदी हो तो मन-वचन-काया करके उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं ।

एक-एक बोल से लगाकर कोड़ाकोड़ी यावत् संख्याता-असंख्याता-अनंतानंत बोलों में से जानने योग्य बोलों को सम्यक् प्रकार से जाना नहीं हो, छोड़ने योग्य बोलों को छोड़ा नहीं हो एवं आदरने योग्य बोलों को आदरा नहीं हो, आराधा नहीं हो, पाला नहीं हो, फरसा नहीं हो, विराधना-खंडना आदि की हो, कराई हो व अनुमोदी हो तो मन-वचन-काया से उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं ।

श्री जिन भगवंत जी महाराज ! आपकी आज्ञा के पालन में मैंने जो प्रमाद किया हो, सम्यक् प्रकार से उद्यम नहीं किया हो, नहीं कराया हो व नहीं अनुमोदा हो तथा आज्ञा के विपरीत उद्यम किया हो, कराया हो, अनुमोदा हो; हे भगवन् ! स्वप्न मात्र में भी आपके बताये मार्ग के विपरीत प्रवृत्ति की हो तो मन-वचन-काया करके उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं ।

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय ।
अनजाने पक्षपात में, मिच्छा दुक्कडं मोय ।।१।।

सूत्र अर्थ जानूं नहीं, अल्पबुद्धि अनजान ।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमाण ।।२।।

देव गुरु धर्म सूत्र को, नव तत्त्वादिक जोय ।
अधिक ओछा जो कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय ।।३।।

हूँ मगसेलियो हो रह्यो, नहीं ज्ञान-रस भींज ।
गुरु-सेवा नहीं कर सकुँ, किम मुझ कारज सीज ।।४।।

जाने देखे जो सुने, देव सेवे मोय ।
अपराधी उन सबन को, बदला देसूं सोय ।।५।।

गबन करूँ बुगचा रतन, द्रव्य भाव सब कोय ।
लेकिन में प्रगट करूँ, सुई पाई मोय ।।६।।

जैन धर्म शुद्ध पाय के, वरतूं विषय-कषाय ।
यही अचम्भा हो रहा, जल में लागी लाय ।।७।।

जितनी जग में वस्तु है, नीच-नीच से नीच ।
सबसे पापी मैं बुरो, फंस्यो मोह के बीच ।।८।।

एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार ।
उठ्यो थो जिन-भजन को, लियो बीच में मार ।।९।।

।। सवैया कवित्त ।।

मैं महापापी छाड़ि के संसार छार, छार ही का विहार करूँ,
माया को निवारी फिर, माया दिल धारी है ।
अगला कछु धोय कीच, फेर कीच बीच रहूँ,
विषय सुख चाहूँ मन्न, प्रभुता बधारी है ।
करत फकीरी ऐसी, अमीरी की आस करूँ,
काहे कुं धिक्कार सिर, पगड़ी उतारी है ।।१०।।

।। दोहा ।।

त्याग न कर संग्रह करूँ, विषय वमन आहार ।
तुलसी ए मुझ पतित को, बार-बार धिक्कार ।।११।।

राग-द्वेष दो बीज है, कर्म-बंध फल देत ।
इनकी फांसी में बंध्यो, छूटूँ नहीं अचेत ।।१२।।

रतन बंध्यो गठड़ी विषे, भानु छिप्यो घन मांय ।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांय ।।१३।।

बुरा-बुरा सबको कहूँ, बुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधूँ आपणो, मुझसा बुरा न कोय ।।१४।।

कामी-कपटी लालची, कठिन लोह को दाम ।
तुम पारस परसंग थी, सुवर्ण थासूं स्वाम ।।१५।।

।। छंद ।।

मैं जपहीन हूँ, तपहीन हूँ, प्रभू हीन संवर समगतं ।
हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागतं ।
प्रभु आयो तुम शरणागतं ।।१६।।

।। दोहा ।।

नहीं विद्या नहीं वचन बल, नहीं धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान् ।।१७।।

विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊँ चित्त समाध ।।१८।।

कहवा में आवे नहीं, अवगुण भरिया अनन्त ।
लिखवा में क्यों कर लिखूँ, जाणो श्री भगवंत ।।१९।।

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनाद ।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति-समाध ।।२०।।

पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय ।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख-दुःख जग में पाय ।।२१।।

बांध्यां बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुडाय ।
आप ही करता भोगता, आपे दूर कराय ।।२२।।

सुसिया-सा अविवेक हूँ, आँख मींच अंधियार ।
मकड़ी जाल बिछायके, फंसूं आप धिक्कार ।।२३।।

सर्व भक्षी जिम अग्नि हूँ, तपियो विषय-कषाय ।
अपछंदा अविनीत मैं, धर्म-ठग दुःख दाय ।।२४।।

कहा भयो घर छाँड के, तजियो न माया संग ।
नाग तजी जिम काँचली, विष नहिं तजियो अंग ।।२५।।

आलस विषय-कषाय वश, आरंभ परिग्रह काज ।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ।।२६।।

आतम निंदा शुध भणी, गुणवंत वंदन भाव ।
राग-द्वेष उपशम करी, सबसे खमत-खमाव ।।२७।।

पुत्र कुपुत्र जे मैं हुओ, अवगुण भर्‌या अनंत ।
या हित बुद्धि विचार के, माफ करो भगवंत ।।२८।।

शासनपति वर्धमानजी, तुम लग मेरी दौड़ ।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौर ।।२९।।

भव भ्रमण संसार-दुःख, ताँका वार न पार ।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार ।।३०।।

भव सागर संसार में, दीपा श्री जिनराज ।
उद्यम करि पहुँच तीरे, बैठी धर्म जहाज ।।३१।।

पतित-उद्धारण नाथजी, अपना विरूद विचार ।
भूल-चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार ।।३२।।

माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष ।
दीन-दयाल देवो मुझे, श्रद्धा-शील संतोष ।।३३।।

देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुरु, संवर निर्जरा धर्म ।
केवली भाषित शास्त्र है, यही जैनमत मर्म ।।३४।।

इस असार संसार में, शरण नहीं अरु कोय ।
या ते तुम पद-कमल ही, भक्त सहायी होय ।।३५।।

छूंटूं पिछला पाप से, नवा न बांधू कोय ।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ।।३६।।

आरम्भ-परिग्रह तजी करी, समकित व्रत आराध ।
अंत अवसर आलोय के, अनशन चित्त समाध ।।३७।।

तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिवसुख-धन ।।३८।।

श्री पंच परमेष्ठी भगवंत ! गुरुदेव महाराज जी आपकी आज्ञा है । सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप-संयम-निर्जरा आदि मुक्ति-मार्ग

यथाशक्ति शुद्ध उपयोग सहित आराधने-फरसने सेवने की आज्ञा है, बारंबार शुभयोग संबंधी सज्झाय-ध्यानादिक, अभिग्रह- नियम व पच्चक्खाणादि करने-कराने की समिति-गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है ।

।। दोहा ।।

निश्चल चित शुध मुख पढ़त, तीन योग थिर थाय ।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित भाय ।।

अक्षर पद हीणो अधिक, भूल-चूक कही होय ।
भगवंत आतम-साख से, मिच्छा दुक्कडं मोय ।।

* * *

तीर्थ क्या है ?

ज्ञान तीर्थ है !
क्षमा तीर्थ है !
दया तीर्थ है !
दान तीर्थ है !
सत्य तीर्थ है !
ब्रह्मचर्य तीर्थ है !
सन्तोष तीर्थ है !
माता तीर्थ है !
पिता तीर्थ है !
गुरु तीर्थ है !

पाप की आलोचना (हो नाथजी पाप आलोऊं पाछला)

हो नाथ जी ! पाप आलोऊं पाछला,
केई भांतरा, दिन-रात रा,
किया पंचेन्द्रिय विनाश, मार्या गल देई पाश,
घणा खाया मद मांस- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१।।

हो नाथ जी ! लुट्यां छः काया रा प्राण ने,
केई जाण ने, केई अणजाण ने,
नहीं जांणी पर पीड़ा, दाब्या कुंथुवा ने कीड़ा,
चाब्या पाना हन्दा बीड़ा- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२।।

हो नाथ जी ! वनस्पति तीन जातरी,
केई भांतरी, छमकी सांतरी,
छेद्या पान फल फूल, सेक्या गाजर कंद मूल,
खाया भरी-भरी लूण- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।३।।

अहो नाथ जी ! अचार घाल्यां हाथ सूं,
चीर्या दांत सूं, घणी खांत सूं,

मांहे घाल्या है मसाला, खाया भर-भर प्याला,
आया लीलण-फूलण जाला- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।४।।

अहो नाथ जी ! पाणी उलीच्या तलाब रा,
कुआं बावड़ी, नदी नाल रा,
फोड़ी सरवरिया री पाल, तोड़ी तरवरिया री डाल,
बर्फ गडा दिया गाल- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।५।।

अहो नाथ जी ! अधर आकाश रा झेलिया,
भर-भर मेलिया, ऊना ठंडा भेलिया,
अर्थे अनर्थे दीया ढोल, किनो अणगल सूं अंगोल,
जाणे मांडी भैंसा रोल- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ...।।६।।

अहो नाथ जी ! मातासूं बाल बिछोहिया,
घणा रोइया, दूधां धोइया,
कोस्या नानड्या रा बाल, पर पेटां बाली झाल,
तोड्या पंखिड़ां रा माल- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।७।।

अहो नाथ जी ! जूं मांकड़ ने मांखियां,
रोकी राखिया, रास्ते नांखियां,
तड़के माचा दिया मेल, मांथे ऊंनां पाणी ठेल,
आगे होसी घणी हेल- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं .... ।।८।।

अहो नाथ जी ! सीयाले सिगड़ी करी,
खीरां भरी, चौड़े धरी,
मांय पड़-पड़ मरिया जीव, पाप किया निशदिव,
दीनी नरकां केरी नींव- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।९।।

अहो नाथ जी ! उनाले वायु बिजाविया,
फूल बिछाविया, जल सींचाविया,
किनी बागां मांही गोठ, खाया चूरमा ने रोठ,
बांधी पाप तणी पोट- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१०।।

अहो नाथ जी ! चौमासे हल हांकिया,
बैल भूखा राखिया, मार्या चाबख्या,
फोड़्या जमीं तणा पेट, मांये सांप सपलेट,
दया नहीं आणी ढ़ेट- दीनानाथ जी !

सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।११।।

अहो नाथ जी ! जूना नवा कर बेचिया,
सुलिया संचिया, नहीं सोचिया,
अणजोया लीया पीस, ईल्यां मांरी दस-बीस,
आगे रोसी देई चीस- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१२।।

अहो नाथ जी ! दूध दही आछ-छाछना,
शरबत दाखनां, केरी पाकना,
घाली बरतन तेल, दिया उघाड़ा ई मेल,
कीड़ियां आई रेलां पेल- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१३।।

अहो नाथ जी ! कूड़ कपट छल ताकिया,
छाने राखिया, नहीं भाखिया,
मुख बोले घणी झूठ, धाडा पाड़ लिया लूट,
जंत्र-मंत्र मारी मूठ- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१४।।

अहो नाथ जी, परनारी धन चोरिया,
खेली होलियां, गाई लोरियां,

देख्या तमाशा ने तीज, ताल्यां पीटी होई हींज,
गाल्यां गाई घणी रींझ- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१५।।

अहो नाथ जी ! अवगुणवाद गुरां तणा,
बोल्या घणा, असुहावणा,
दुःख दिया मैं अज्ञानी, निन्दा किनी छानी छानी,
नहीं दीनो अन्न पाणी- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१६।।

अहो नाथ जी ! भोजन भली-भली भांतरा,
आधी रातरा, खाया सांतरा,
पीया अणछाण्या इ पानी, मन, करुणा नहीं आणी,
पर पीड़ा न पिछाणी- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१७।।

अहो नाथ जी ! सासु शोक सुवासणी,
पाडोसण भणी, सताई घणी,
मुख सूं बोली मीठी गाल, केई कूड़ा दिया आल,
चाली छलकारी- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१८।।

अहो नाथ जी ! संशय या म्हें मोटका
केई छोटका, हुआ खोटका,
करी छाने राख्या पाप, सो तो देख रह्या आप,
म्हारे थे ही माय-बाप- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।१९।।

अहो नाथ जी ! स्त्री सुं भांत पड़ाविया,
गर्भ गलाविया, जीव जलाविया,
मारी जूं ने फोड़ी लीख, बैठी पापी रे नजीक,
नहीं मानी गुरु सीख- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२०।।

अहो नाथ जी ! थापण राखी पार की,
केई हजार की, साहूकार की,
देता कियां सिर पीठ, मांग्या कह्यो- गयो नीठ,
लीया समूचाई गिट- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२१।।

अहो नाथ जी ! तप जप संयम शील री,
देतां दान री, भणतां ज्ञान री,
दीनी मोटी अंतराय, तेतो भुगति नहीं जाय,
पडियो करसी हाय-हाय- दीनानाथ जी !

सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२२।।

अहो नाथ जी ! मात-पिता गुरु देवां तणो,
अविनय पणो, कीयो घणो,
बसियो चौरासी रे मांय, ज्यासुं कियो वैर भाव,
खमो खमो चित चाव- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२३।।

अहो नाथ जी ! सार करी ने संभारज्यो,
मती बिसारज्यो, पार उतारज्यो,
संवत् ऊगणीसे बासठ, झांको मती करो हठ,
दर्शन दीज्यो अब झठ- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ....।।२४।।

अहो नाथजी ! आलोयणा इम कीजिए,
मिच्छामि दुक्कड़ं दीजिए, करम छीजिए,
जयपुर मांहे 'जड़ाव', आणी उज्ज्वल भाव,
ढ़ाल कीनी धर चाव- दीनानाथ जी !
सुणो बात जी, जोडूं हाथ जी,
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं .... ।।२५।।

❋ ❋ ❋

आत्म शुध्दि

आत्म शुद्धि हित धर्मध्यान का चिंतन जो नर करता है ।
अशुभ कर्म को दूर हटाकर, मोक्ष मार्ग पग धरता है ।।१।।

जग में अकेला आया हूँ और यहाँ से अकेला जाऊँगा ।
कर्म शुभाशुभ संग में लेकर यथास्थान को पाऊँगा ।।२।।

मेरा-मेरा करके पचता, नहीं कोई जग में है तेरा ।
देह छोड़कर उड़ेगा पंछी, भिन्न स्थान होगा डेरा ।।३।।

महा विडंबना है परिजन की, अंत साथ नहीं आता है ।
निर्भय होकर देखो प्राणी, मरण अकेला पाता है ।।४।।

धन्य-धन्य नमिराज ऋषिवर, एकत्व भावना भाई थी ।
कंगन से लेकर प्रेरणा, जब मिथिला ठुकराई थी ।।५।।

स्वर्गपति ने दस प्रश्नों का भावपूर्ण उत्तर पाया ।
खुश होकर के स्वयं शक्रेन्द्र, ऋषिवर-गुण-गौरव गाया ।।६।।

क्षणभंगुर है तेरी काया क्षणभंगुर जग की माया ।
खूब खिलाया, खूब पिलाया, फिर भी है नश्वर काया ।।७।।

देख-देख तन की सुन्दरता, खुश होकर के फूल रहा ।
लुट गई तेरी रूप सम्पदा, सनत् चक्री को भूल रहा ।।८।।

वैभव में मतवाला होकर, घूम रहा जैसे हस्ती ।
रावण जैसे चले गये, फिर तेरी कौन बता हस्ती ।।९।।

पुद्गल के हैं रूप पराये, जिन्हें तूं अपना मान रहा ।
ज्ञानी कहते इन्हें छोड़ दे, क्यों तूं अपनी तान रहा ।।१०।।

त्यागी ममता जागी समता, नश्वरता चित में लाया ।
अनित्य भावना भाकर के ही भरत चक्री केवल पाया ।।११।।

रोग शत्रु जब तन को घेरे, नहीं किसी का दांव लगा ।
आत्मिक शांति जब ही पाता, मन में समता भाव जगा ।।१२।।

स्वयं बांधता स्वयं भोगता, नहीं कोई शरण दाता ।
त्राही-त्राही कर के रोता, कोई न दुःख छुड़वा पाता ।।१३।।

जन्म-जरा-मृत्यु के भय से, भयभीत बन पामर प्राणी ।
कुकृत्यों को नहीं छोड़ता, पील रहा दुःख की घाणी ।।१४।।

तीन खंड के स्वामी थे, पर मिला नहीं मरते पानी ।
पुरजन-परिजन पास न आये, बीती थी जब जिंदगाानी ।।१५।।

अहो अनाथी मुनि के, सिर पर घोर वेदना छाई थी ।
रहे ताकते पारिवारिक जन, चैन पलक नहीं पाई थी ।।१६।।

अरहट माला सम जग लीला, सदा पलटती रहती है ।
नहीं जगत में स्थिरवासा, जिनवाणी यूं कहती है ।।१७।।

अपना-अपना किसे पुकारे, जग-जीवन तो है सपना ।
छोड़ कल्पना अपने मन की, सत्य नाम प्रभु का जपना ।।१८।।

जग का सुख शाश्वत नहीं होता, जैसे बादल की छाया ।
क्यों भरमाया भौतिक सुख में, बिजली-सी चंचल माया ।।१९।।

कोई किसी का नहीं है शत्रु, नहीं किसी का मित्र कोई ।
कर्माधीन जगत् की लीला क्यों तूंने सन्मति खोई ।।२०।।

शालीभद्र क्या रिद्धि पाये, नृप श्रेणिक देखन आया ।
संसार भावना भाकर के ही, जग-बन्धन से मुक्ति पाया ।।२१।।

गौतम-रास

।। दोहा ।।

गुण गाऊँ गौतम तणा, लब्धि तणा भंडार ।
बड़ा शिष्य भगवंतना, जाणे सब संसार ।।१।।
प्रतिबुध्या प्रभुजी कन्हे, गणधर गौतम स्वाम ।
संजम पाली सिद्ध हुआ, लीजे नित प्रति नाम ।।२।।

श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।। टेर ।।

तीर्थनाथ त्रिभुवन धणी, प्रभु शासन ना सरदार ।
भक्ति कियां भगवंत री, मनवांछित फल दातार जी ।
प्रभु पहुंच्या मुक्ति मझार जी, (ज्यां) तीरथ थाप्या चार जी ।
चारों संघ मांहे सिरिकार जी, गौतम नाम गणधार जी ।
ज्यांने होजो म्हारो नमस्कारजी, दाहड़ा में दस-दसवार जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।१।।

सोलमा सोना सारिखो जी, सुंदर रूप शरीर ।
कनक कसोटी चढ़ावियो, भगवती में भाख्यो वीर जी ।
दीठां हरषे हिवड़ो हीर जी, स्वामी सायर जेम गंभीर जी ।
वलि खम शम दम ने धीर जी, ज्यांरी वाणी मीठी खीर जी ।
मीठो खीर-समुद्र नो नीर जी, षट्काय जीवां रा पीर जी ।
हुआ वीर रे तन्नु वजीर जी...।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।२।।

गोरा ने घणा फूटरा जी, कंचन कोमल गात ।
देह ज्यांरी दिपुं-दिपुं करे जी, देवता पिण कितरीक बात जी ।
रोग रहित काया सात हाथ जी, सेवा कीधी ज्यां दिन ने रात जी ।
घणा रह्या गुरुजी रे साथ जी, पूछा कीधी जोड़ी दोनूं हाथ जी ।
कहि जावे कठां तक बात जी, ज्यांरे वीर माथे दिया हाथ जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।३।।

प्रथम संघयण संठाण छे, स्वामी घोर गुणे भरपूर ।
घोर ब्रह्मचर्य में भर्‌या, वलि तपसी महासूर जी ।
कायर पुरुष कंपे जावे दूर जी, आठों कर्म किया चकचूर जी ।
वीर रे हुआ हुकम हजूर जी, म्हारी वंदना उगंते सूर जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।४।।

अभिग्रह कीधा आकरा, विस्तार भगवती रे मांय ।
चार ज्ञान चौदह पूर्व धणी, वलि तेजोलेश्या पिंड मांय जी ।
दपट राखी क्षमा मन लाय जी, उकडू बैठा शीश नमाय जी ।
वीर सूं नेड़ा, अलगा नहीं थाय जी, ज्यांरी करणी में कमियन काय जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।५।।

पूछा ज्यां कीधी घणी जी, आणी मन आनंद ।
श्रद्धा में संशय ऊपनो, उपज्यो कुतुहल उछरंग जी ।
वांद्या श्री वीर जिनंद जी, पूछिया देश-प्रदेश ने खंध जी ।
अनंत ज्ञानी त्रिशला-नंद जी, सूत्र मेल दिया संधोसंध जी ।
ज्यांने सेवे सुर-नर-वृंद जी, जिम शोभे तारा बीच चंद जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।६।।

सूत्र भगवती में पूछिया जी, प्रश्न अनेक प्रकार ।
वलि अंग-उपांग में पूछिया जी, पूछा कीधी पेले पार जी ।
तीर्थनाथ काढ्यो निस्तार जी, गौतम लीधो हृदये धार जी ।
ज्यांरी बुद्धि को छेह न पार जी, गांवां-नगरां किया उपकार जी ।
भवजीवां रा तारणहार जी, ज्यां पुरुषां री हूँ बलिहार जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।७।।

इंद्रभूति इम चिंतवे, मोने किम नहीं उपजे ज्ञान ।
खेद पामी प्रभु देखने, बोलाय लिया वर्द्धमान जी ।
गौतम ऊभा सन्मुख आन जी, प्रभु दियो आदर-सम्मान जी ।
मनवांछित फल दियो दान जी, चित्त निर्मल ज्यांरो ध्यान जी ।
गौतम गुण-रतनां री खान जी...।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।८।।

थांरे ने म्हांरे गोयमा, घणा जूना काल री प्रीत ।
आगे आपां भेला रह्या, रही ल्होड-बड़ाई री रीत जी ।
मोहनी कर्म लेवो थे जीत जी, केवल आडी आ ही भींत जी ।
शिष्य थे छो म्हारे सुविनीत जी, रूड़ी छे थांरी रीत जी ।
पूरी थांरी परतीत जी...।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।९।।

अबके इण भव आंतरे, आपां दोनूं बराबर होय ।
वीर-वचन श्रवणे सुणी, गौतम हिवड़े हर्षित होय जी ।
गुरु मोटा मिलिया मोय जी, म्हांरे कमिय न राखी कोय जी ।
रह्या वीर रे सामो जोय जी, राग-द्वेष खपाया दोय जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।१०।।

सम्मुख वीर बखाणियो जी, गौतम ने तिण वार ।
तो सरिखो बीजो नहीं, पाखंड्याँ रो जीतनहार जी ।
चर्चावादी तुरत तैयार जी, हेतु-युक्ति अनेक प्रकार जी ।
चौदह सहस्र साधु मझार जी, बीजा साधु सहू थांरे लार जी ।
गौतम ! सारा में थे सरदार जी, हुओ हियड़े हर्ष अपार जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।११।।

कार्तिक वद अमावसे जी, मुक्ति गया वर्द्धमान ।
इंद्रभूति ने ऊपनो तब निर्मल केवल ज्ञान जी,
धर्म दीपायो नगर-पुर-गाम जी, सिद्ध कीधा आतम-काम जी ।
गौतम पहुँच्या शिवपुर-ठाम जी, रिख 'रायचंद' किया गुणग्राम जी ।
धन-धन श्री गौतम स्वाम जी..।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।१२।।

पूज्य जयमल्लजी रा प्रसाद थी, कियो ज्ञान-अभ्यास ।
संवत् अठारे चौतीस में, नवमी सुद भाद्रवे मास जी ।
ए कीधो गौतम-रास जी, सुणजो सहु मन उल्लास जी ।
पायो अविचल लील-विलास जी, शहर बीकानेर चौमास जी ।।
श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ।।१३।।

- आचार्य श्री रायचंद्रजी म.सा.

❋ ❋ ❋

संग नहीं करना चाहिए

दुर्जन का, दुराचारी का, पाखंडी का, नशेबाज का, सट्टेबाज का ।

गणधरजी

श्री इन्द्रभूति जी को लीजे नाम, तो मनवाँछित सींझे काम ।
मोटा लब्धि तणा भण्डार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।१।।

अग्निभूति गौतम जी का भाई, वीरजी ने दीठाँ समता आई ।
ऋद्धि त्याग लियो संजम-भार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।२।।

वायुभूति मोटा मुनिराय, ये तीनों ही सगा भाय ।
पाँच-पाँच सौ निकल्या लार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।३।।

व्यक्तस्वामी जी चौथा जाण, भजन कियाँ मिले अमर-विमाण ।
देवलोक सुख रा झणकार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।४।।

स्वामी सुधर्मा वीर जी रे पाट, जन्म-मरण सेवक ना काट ।
मुझ ने आप तणो आधार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।४।।

मंडीपुत्र ने मौर्यपूत, मुक्ति जावण रो कर दियो सूत ।
त्रिविधे त्याग्या पाप अठार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।६।।

अंकपित ने अचलभ्रात, वीरजी रे वचने रह्या अनुरक्त ।
चवदह पूरब ना भंडार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।७।।

मेतारज ने श्री प्रभास, मोक्षनगर में कर दियो वास ।
जपताँ होवे जय-जयकार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।८।।

ये इग्यारह उत्तम जात, चम्मालीस सौ निकल्या साथ ।
ज्याँ कर दीनो खेवो पार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।९।।

इण नामे सहु आशा फले, दोषी दुश्मन दूरा टले ।
ऋद्धि-वृद्धि पामे सुख सार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।१०।।

इण नामे सब नाशे पाप, नित रो जपिये भविजन जाप ।
चित चोखा हृदय में धार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।११।।

संवत् अठारह (सौ) तियालिस जाण, पूज्य जयमलजी री अमृतवाण ।
चौमासे स्तवन कियो पीपाड़, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।१२।।

आषाढ़ सुदि सातम रे दिन, गणधर जी ने गाया इक मन ।
'आशकरण' पभणे अणगार, वंदूँ इग्यारह गणधार ।।१३।।

- आचार्य श्री आसकरणजी म.सा.

❋ ❋ ❋

मृत्यु के आते ही

धन छोड़ना होगा !
तन छोड़ना होगा !
कुटुम्ब छोड़ना होगा !
मित्र-दल छोड़ना होगा !
घर-बार छोड़ना होगा !

मुख्य दान है

अन्न दान !
ज्ञान दान !
औषधि दान !
अभय दान !

गौतम गणधर

गौतम स्वामी पूछे वीरजी ने, थांने मुगति में शैया किम कर हुई ।।
जीवन ज्योति में तप रमावतड़ा, म्हारे मुगत्यां में शैया इम कर हुई ।।

गौतम स्वामी पूछे वीरजी ने, थांरा अष्ट कर्म किम कर कटिया,
साढां बारा वर्ष लग तप करी, वीर गोदुउ आसन केवल करी,
म्हारा अष्ट कर्म, इम कर कटिया...।।१।।

सुधर्मा स्वामी पूछे गौतमजी ने, थांने मोटी लब्धि किम कर हुई,
अपणा गुरुजी रा गुणां ने गावतड़ा, विनय करी ने शीश झुकावतड़ा,
म्हारा अष्ट कर्म, इम कर कटिया...।।२।।

जम्बूस्वामी पूछे सुधर्माजी ने, थांने वीरजी रो पाट किम कर मिलियो,
नव गणधर मोक्ष सिधावतड़ा, गौतम स्वामीजी ने केवल पहुँचावतड़ा,
म्हांरे वीरजी रो पाट इम कर मिलियो...।।३।।

माता भद्राजी पूछे जम्बूजी ने, थांने वैराग्य रंग किम कर लाग्यो,
सुधर्माजी री वाणी सुणतड़ा, म्हांने वैराग को रंग इम कर लाग्यो,
म्हांने वैराग रंग इम कर लाग्यो...।।४।।

भवी जीव पूछे गुरुवर ने, म्हांने मुगति में शैया किम कर होसी,
कुदेव, कुगुरु, छोड़तरा, सुदेव, सुगुरु ध्यावतड़ा,
थांने मुगति में शैया इम कर होसी ।।५।।

❋ ❋ ❋

ज्ञान प्राप्ति में पांच बातें साधक हैं

अहंकार, क्रोध, प्रमाद, आलस्य तथा रोग !

गौतम गणधर, पाये जी लागूं

गौतम गणधर, पाये जी लागूं,
सांचो धर्म हिरदे कर लीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।१।।
पहला में जीव हिंसा मत कीजे,
जप-तप करीने संयम लीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।२।।
दूजा में मृषावाद मत कीजे,
भरिया सभा में झूठ मत बोलो ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।३।।
तीजा में अदत्त चोरी मत कीजे,
कहियां बिन वस्तु किणही मत लीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।४।।
चौथा में चोखो शील पालीजे,
मुगतपुरी में पांव धरिजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।५।।
पांचों ही परिग्रह री मर्यादा कीजे,
पांचों ही इन्द्रियां वश कर लीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।६।।
छठा में छः दिशा री मर्यादा कीजे,
लीलन-फूलन पांव मत दीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।७।।

सातमां उपभोग-परिभोग मर्यादा कीजे,
पच्चक्खाण ऊपर आहार मत लीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।८।।
आठवां अनर्थदण्ड मती लीजे,
खोटी अकल रा उपदेश मत दीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।९।।
नवमां सामायिक रो नियम करीजे,
सामायिक करीने आया ने आदर दीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।१०।।
दसमां देसावगासिक कीजे,
एक आसन ध्यान जी कीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।११।।
ग्यारहवां आठ प्रहर पौषध कीजे,
बारह प्रहर चौविहार कीजे ।
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।१२।।
बारहवां बारह भेदी तपस्या जी कीजे,
साधु संता ने सूझतो आहार दीजे,
सूझतो देने पछतावो मत कीजे...
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।१३।।
यह बारह व्रत नर-नारी पालीजे,
श्रवण वाला सदा सुख पावे,
ए म्हारी सैया बारह व्रत कहीजे ।।१४।।

✻ ✻ ✻

चौदह मंगल

पहलो मंगल तेहनो के जीव जतन करो जी ।
दूजो मंगल तेहनो के सांचो वचन बोलो जी ।।
तीजो मंगल तेहनो के परायो धन परिहरो जी ।
चौथो मंगल तेहनो के चौथे रो व्रत आदरो जी ।।
पांचमो मंगल तेहनो के पांचूं इन्द्रियां वश करो जी ।
छट्ठो मंगल तेहनो के छह काया री रक्षा करो जी ।।
सातमो मंगल तेहनो के सतगुरु री सेवा करो जी ।
आठमो मंगल तेहनो के आठोई कर्म क्षय करो जी ।।
नवमो मंगल तेहनो के सामायिक सविधि करो जी ।
दसमो मंगल तेहनो के देशावगासिक आदरो जी ।।
ग्यारहवो मंगल तेहनो के रेण पोसा करो जी ।
बारहवो मंगल तेहनो के बारह भेदी तप करो जी ।।
तेरहवो मंगल तेहनो के तेरह काठिया परिहरो जी ।
चौदहवो मंगल तेहनो के चौदह नियम चितारो जी ।।
ओ हाथी मद मास के अंकुस बाधो नहीं रेवे जी ।
ओ जोबन हट जाय के तप कर सुखावजो जी ।।
ओ जीव घणो रे भूखालू के बेला-तेला आदरो जी ।
ओ जीव घणो रे तिरसालू के काचो पाणी परिहरो जी ।।
ओ जीव घणो रे खेलालू के सूत्र पाना बांचजो जी ।
ओ जीव घणो रे थकालू के उग्र विहार थे करो जी ।।

ओ जीव घणो रे निन्दालू के ऊभा-ऊभा काउसग करो जी ।
ज्ञान केरा हलिया जोतो, वां में खेती बवारजो जी ।।
खेती आड़ी बाड़ दिरावे के दया धर्म निपजे जी ।
समुद्र री पेली तीर के राजुल रानी तप करे जी ।।
ऊभा रानीबाई सा रा वीरो के मत चालो उतावला जी ।
हम तुम वांदण चालां नेमकवरज सांवला जी ।।
सखी म्हांरो सपनो विचारो के आधी रात रा जी ।
सखी म्हांरो सपनो विचारो के झिलती रातरा जी ।।

* * *

लोक-प्रिय बनता है

निष्कपट हृदय वाला !
परनिंदा न करने वाला !
लोक-हित चाहने वाला !
निस्वार्थ सेवा करने वाला !
पाप-कार्य से डरने वाला !
गुण ग्रहण करने वाला !
सदाचार को पालने वाला !
मधुर वचन बोलने वाला !

* * *

पांच चीजें दुर्बल दिखते हुए भी नाश करने वाली होती है

अग्नि, रोग, ऋण, पाप एवं व्यसन ।

भगवान महावीर नो छोटो चोढ़ालियो

ढ़ाल - पहली

सिद्धारथ कुल में जी ऊपना, त्रिशलादे थांरी मात जी ।
वर्षीदान दियां पछै, संयम लियो जगनाथ जी ।।१।।
थे मन मोह्यो महावीर जी ।।टेर।।

कंचन वरणी कायजी, नयन न धापे प्रभु निरखतां ।
दीठां आवे छै दाय जी, थे मन मोह्यो महावीर जी ।।२।।

आप अकेला संयम आदर्‌यो, ऊपनो चौथो ज्ञान जी ।
उत्कृष्टो तप आदर्‌यो, धरता निर्मल ध्यान जी ।।३।।

प्रभु उग्र विहारज आदर्‌यो, केई वासा रया वनवास जी ।
केई वासा बस्ति रया, नहीं रह्या एक ठिकाने चौमास जी ।।४।।

प्रभु पहलो चौमासो थे कियो, अट्‌ठगाम मंझार जी ।
दूजो वणिजगाम में, पंच चम्पा सुखकार जी ।।५।।

पंच पृष्ठचम्पा कर्‌या, विशाला नगरी में तीन जी ।
राजगृही में चौदह किया, नालंदा पहाड़ा लयलीन जी ।।६।।

छः चौमासा मिथिला कर्‌या, भद्दिका नगरी में दोय जी ।
एक कर्‌यो रे आलम्भिका, एक सावत्थी में होय जी ।।७।।

एक अनारज देश मां, अपापा नगरी इक जाण जी ।
एक कर्‌या रे पावापुरी, जठे वीर पहुंच्या निर्वाण जी ।।८।।

हस्तिपाल राजा इम विनवे, मैं थांरे चरणां रो दास जी ।

मोटी शाला म्हारे सूझती, जठे आप करोनी चोमास जी ।।९।।

चालीस चोमासा शहर में, दाख्या दश नगरा नां नाम जी ।
एक अनारज देशमां, एक चोमासो वलिगाम जी ।।१०।।

प्रभु गामां नगरां पुर विचरिया, भव जीवां रा भाग जी ।
मारग बताायो प्रभु मोक्ष नो, कियो परउपकार अथागजी ।।११।।

साढ़ी बारह वर्षां लगे, ऊपर आधो मास जी ।
छद्‌मस्थ रह्या प्रभु एकला पछे केवलज्ञान प्रकाशजी ।।१२।।

वर्ष बैयालिस पालियो, संयम साहस धीर जी ।
तीस वर्ष घर में रह्या, मोक्षदायक महावीर जी ।।१३।।

पावापुरी में पधारिया, नर-नारी हुआ रे हुल्लास जी ।
ऋषि रायचन्दजी इम विनवे, हूं थांरे चरणां रो दास जी ।।१४।।

संवत् अठारह गुण चालीस में, नागोर शहर चौमास जी ।
पूज्य जयमलजी रे प्रसाद थी, यह करी अरदास जी ।।१५।।

ढ़ाल-दूसरी

शासननायक वीर जिनन्द, तीर्थनाथ जाणे पूनम चन्द ।
चरण लागे ज्यांरे चौसठ इन्द्र, सेवा सारे ज्यांरी सुर-नर वृन्द ।।

अब को चौमासो वीर जी अट्‌ठे करो जी,
थे पावापुरी सूं पग आगो मती धरोजी ।। टेर ।।

अट्‌ठे करो, अट्‌ठे करो, अट्‌ठे करो जी,
थे चरम चौमासो वीर जी अट्‌ठे करो जी ।।१।।

हस्तीपाल राजा विनवे कर जोड़,
पूरो प्रभुजी म्हारा मन तणां कोड़ ।
शीस नमाई ऊभो जोड़ी जी हाथ,
करुणासागर बाजो किरपा रा नाथ ।।२।।
राय नी राणी विनवे राज लोग,
पुण्य योगे मिल्यो म्हांने सेवा को संयोग ।
मनवंछित फलिया सहु काज ।
मयाकरी ने सामो जोवो जिनराज ।।३।।
श्रावक-श्राविका केई नर-नार,
मिली-मिली विनती करे बारम्बार ।
पावापुरी में पधार्‌या वीतराग,
प्रकटी पुण्याई म्हारा मोटाजी भाग ।।४।।
हस्तिपाल राजा विनवे जी भूपाल,
थे छो प्रभुजी म्हारा दीन दयाल ।
सूझती एक म्हारे मोटी जी साल,
लागी गयो हिव वर्षा रो काल ।।५।।
मानी विनती प्रभु रह्या रे चौमास,
पावापुरी मां हुआ हर्ष हुल्लास ।
गौतम गणधर गुरु जी के पास,
निशदिन ज्ञान को करे अभ्यास ।।६।।
साधु अनेक रह्या कर जोड़,
सेवा करे सदा होड़ा जी होड़ ।
चौदह हजार चेला रत्नां री माल,
लीधी दीक्षा ने छोड़्या मोह जंजाल ।।७।।

बड़ी चेली चन्दनबाला जी जाण,
हुई कुंवारी महासती चतुर सुजान ।
मोत्यां नी माला छत्तीस हजार,
सगली साधवियां में बड़ा सरदार ।।८।।
चारूं ही संघ सेवा नित्य करे,
प्रभु जी ने देखी-देखी आँख्या ठरे ।
नव मल्लि नव लच्छी जी राय,
ज्यारे तो चित्त मांहे दर्शन री चाय ।।९।।
संघ सगला मांहे हुई रंग रेली,
पुन्य योग प्रभु जी की सेवा मिली ।
ऋषि रायचन्दजी विनवे जोड़ी हाथ,
करुणा सागर वाजो किरपारा नाथ ।।१०।।
शहर नागौर में कियो रे चौमास,
प्रभु जी दीजो म्हांने मुक्ति नो वास ।
हूं सेवक तुम साहिब स्वाम,
अवर देवासूं म्हांरे नहीं कोई काम ।।११।।

ढ़ाल-तीसरी

शासन नायक श्री महावीर,
तीरथ नाथ त्रिभुवन धणी ।
पावापुरी मांहे कियो चरम चौमास,
मोक्ष दायक री महिमा घणी ।।१।।

गौतमजी ने भेज दिया महावीर,
देवशर्मा ने प्रतिबोधवा ।।टेर।।
उत्तराध्ययनजी का अध्ययन छत्तीस,
कार्तिक वद अमावस कह्या ।
एक सौ ने वलि दश अध्ययन,
सूत्र विपाक तणां लह्या ।।२।।
पौषा कीना श्री वीरजी रे पास,
देश अठारह ना राजिया ।
नव मल्ली ने नव लच्छी राय,
वीर ना भक्ता बाजिया ।।३।।
प्रभु शासन रा सरदार,
सर्व संघ ने सन्तोष ने ।
सोलह पहर लग देशना दीध,
पछे वीर वीराज्या मोक्ष में ।।४।।
तीन वर्ष ने साढ़ा आठ मास,
चौथा आरा ना बाकी रह्या ।
दिन दोय, तणो संथार,
मौन रही मुक्ति गया ।।५।।
इन्द्र आया चित्त उदास,
देव-देवी रे साथ में ।
लग रही जगामग ज्योत,
अमावस की रात में ।।६।।

मुक्ति पहुँता एकाएक,
सात सौ हुआ ज्यांरे केवली ।
चवदह सौ साध्वियां हुई सिद्ध,
हूँ सहुं ने वांदू मन रली ।।७।।
रह्या तीस वर्ष घर मांय,
वर्ष बयालीस संयम पालियो ।
प्रभु जग तारण जगदीश,
दया मार्ग उजवालियो ।।८।।
ओ जी देव-देवी ने वलि इन्द्र,
निर्वाण तणो महोच्छव कियो ।
अरिहन्त जी नो पड्यो रे विजोग,
सुर नर नो भरीजे हियो ।।९।।
साधु-साध्वियां करता शोक,
श्रावक ने श्राविका पण घणो ।
भरत क्षेत्र में पड़ियो विजोग,
आज पछे अरिहंत तणो ।।१०।।
पछे बैठा सुधर्मा स्वामी पाट,
चारों ही संघ चरण सेवता ।
ज्यांरी पालता अखण्डित आण,
सेवा करे देवी-देवता ।।११।।
मुक्ति पहोतां श्री महावीर,
परम सुख पाम्यां शाश्वता ।
ऋषि रायचन्द्रजी कहवे एम,
म्हांरे अरिहन्त वचनां री आसता ।।१२।।

ढ़ाल-चौथी

श्री महावीर तो पहुँता निर्वाणी ।
गौतम स्वामी, आ बातज जाणी ।।१।।
गुरांजी थे माने गोड़े ने राख्यो ।
मुक्ति जावण रो नाम न दाख्यो ।।२।।
हूं सगला पहली हुवो थांको चेलो ।
इण अवसर आगो किम मेल्यो ।।३।।
तुम चरणे म्हारो चित्त लागो ।
आप मोक्ष पहुँता म्हांने कर दियो आगो ।।४।।
आपरो दर्शन लगतो प्यारो ।
आप पहोंता निर्वाण मने कर दियो न्यारो ।।५।।
आपतो मुझ से अन्तर राख्यो ।
पिण मैं म्हारे मन रो दर्द नहीं दाख्यो ।।६।।
हूँ आडो मांडी ने झालतो पल्लो ।
पण शाबास काम लियो तुम भल्लो ।।७।।
हूँ तुम ने अन्तराय न देतो ।
मुक्ति मैं जागा बेंचाय न लेतो ।।८।।
हूँ संकडाई न करतो कांई ।
आप साथे हूँ मोक्ष मैं आई ।।९।।
अब हूं पूछा करस्यूं किण आगे ।
म्हारो तो मन थांसूं ही लागे ।।१०।।

म्हारो सांसो कहो कुण टाले ।
आप बिना पाखंड्या ना मद कुण गाले ।।११।।
हूंता चवदह पूर्व चउनाणी ।
पिण मोहनी कर्म लपेटा में आणी ।।१२।।
ऐसा गौतम स्वामी किय विलापातो ।
मोहनी कर्म नी इचरज बातो ।।१३।।
मोहनी कर्म ने दूरे टाली ।
गौतम स्वामी सुरती सम्भाली ।।१४।।
वीतराग राग-द्वेष से जीता ।
म्हारे मन में आई गई चितां ।।टेर....१५।।
तिण वेला निर्मल ध्यानज ध्यायो ।
केवलज्ञान गौतम स्वामी पायो ।।१६।।
बारह वर्ष रया केवलज्ञानी ।
बात जासूं नहीं रही कोई छानी ।।१७।।
गौतम स्वामी कियो मुक्ति में वासो ।
सांसर नो सर्व देखे तमासो ।।१८।।
जिण दिन मुक्ति गया वर्धमानो ।
इन्द्रभूतिजी ने उपनो केवलज्ञानो ।।१९।।
तिण दिन सूं आ बाजी दिवाली ।
मोटको दिन यह मंगल माली ।।२०।।
रात दिवाली नो शीयल पालो ।
रात्रि भोजन नो करदो जो टालो ।।२१।।

ऋषि रायचन्दजी कहे, सुणो हो सुज्ञानी ।
दया रूप दिवाली, थे लीजो मानी ।।२२।।

।। कलश ।।

श्री शासननायक मुक्तिदायक, दया मार्ग उजवालियो ।
श्री गौतमस्वामी मुक्तिगामी, कियो चित्त वल्लभ चौढ़ालियो ।।१।।
संवत् अठारे गुण चालीसे, नागौर चौमासो निर्मल मने ।
पूज्य जयमलजी प्रसादे, संपूर्ण कियो दिवाली के दिने ।।२।।

❋ ❋ ❋

सम-भाव रखो

लाभ तथा अभाव में !
दुःख तथा सुख में !
निंदा तथा प्रशंसा में !
मान तथा अपमान में !
शत्रु तथा मित्र में !
भवन तथा वन में !
योग तथा वियोग में !
अपने तथा पराए में !

❋ ❋ ❋

बढ़ कर घटने का नाम नहीं लेती
भूख, नींद, भय, तृष्णा एवं आसक्ति ।

❋ ❋ ❋

क्षमा-धर्म

(तर्ज : चर्णाली चामुंडा रिण चढे)

क्षमा धरम पहिलो खरो, इम भाख्यो जगदीशो रे ।
क्षमा करसो तो जीतसो, मत राखो कोई रीसो रे ।। क्षमा...।।१।।
क्षमा कियाँ सुख पांमिये, क्रोध कियाँ दुख होई रे ।
कलेस टले क्षमा कियाँ, क्षमा थी शिव सुख जोई रे ।। क्षमा...।।२।।
लोक आछो कहे नहीं, लड़तां लिछमी नासे रे ।
दुख दारिद्र घरमें धसे, गुण रा पूर विणासे रे ।। क्षमा...।।३।।
कोई वचन करड़ा कहे, अथवा आघा पाछा रे ।
क्षमा कियाँ शंका नहीं, आगेई फल आछा रे ।। क्षमा...।।४।।
क्रोधी नर कालो थको, विध री बात विगारे रे ।
आगो पाछो देखे नहीं, लाखिणी प्रीत गमारे रे ।। क्षमा...।।५।।
क्रोध कियां नफो नहीं, क्षमा कियां सुख सारो रे ।
क्षमा करे क्रोध टाल ने, ते पांमे भव पारो रे ।। क्षमा...।।६।।
क्रोधी काम बिगाड़ दे, रीस कियां देही छीजे रे ।
व्हाला पण वेरी हुवे, ऐसो काम किम कीजे रे ।। क्षमा...।।७।।
शस्त्र ने विष खाई मरे, ओकर वचन रा बाधा रे ।
दव रा दाधा पालवे, नहीं पालवे जीभ रा दाधा रे ।। क्षमा...।।८।।
क्रोध-दाहे दाधा नहीं, तिके रहे डेहडायमानो रे ।
सदा खुशाली ज्यां रे खरी, क्षमा करो धरो ज्ञानो रे ।। क्षमा...।।९।।
मरण समय मूष्के नहीं, क्रोधी क्रोध विशेषो रे ।
नहीं खमावे चौमासी छमछरी, ऐसो राखे मूरख द्वेषो रे ।। क्षमा...।।१०।।

बाप, बेटो, सासु, बहू, गुरु चेलो भाई भाई रे ।
क्रोधे इसड़ा ऊबले, न गिणे नेड़ी सगाई रे ।। क्षमा...।।११।।
रोग सोग आवे नहीं, वैरी सज्जन होवे जेहो रे ।
सुख पावे सद्गति लहे, क्षमा कियां फल एहो रे ।। क्षमा...।।१२।।
क्रोधी फल पांमे इसा, घणो रोग ने सोगो रे ।
व्हाला सज्जन वीछड़े, मिले दुशमण रो जोगो रे ।। क्षमा...।।१३।।
दुख पावे नर रीस थी भव भव में गति भूंडी रे ।
हाण बढे, लोकां में हासो, थे अकल विचारो ऊंडी रे ।। क्षमा...।।१४।।
रूड़ो नर ते रीस थी, बोले करड़ा बेणो रे ।
हिलणा होवे लोक में, शत्रु करे सेणो रे ।। क्षमा...।।१५।।
गुरु मावीत गिणे नहीं, अविनीत ओगुण गारो रे ।
छांदे चाले आपणे, बरज्यां करे विगारो रे ।। क्षमा...।।१६।।
गुरु काढ़े गच्छ मांहि थी, बाप काढ़े घर बहारे रे ।
लोक मांहे फिट-फिट हुवे, आलेय जमारो हारे रे ।। क्षमा...।।१७।।
क्रोधी सू अलगा रहे, सज्जन नहीं आवे नेरा रे ।
रीसे धम धम तो रहे, क्रोधी करे कांजर बेरा रे ।। क्षमा...।।१८।।
हिंसा धरमी सू राता रहे, ज्यों के जाडा पापो रे ।
साधु देखी रीसां बले, ते खोवे आपरो आपो रे ।। क्षमा...।।१९।।
तामस तपियो नर इसो, आंख मिरच जिम आंजी रे ।
क्रोध विणासे तप सही, दूध विणासे कांजी रे ।। क्षमा...।।२०।।
तप जप कोड़ पूरब तणो, क्रोधी खिण में खोवे रे ।
क्षमा कियां गुण यश बढ़े, तिको पंथ विरला जोवे रे ।। क्षमा...।।२१।।
अणहुँता अवगुण कहे, गुण सहु देवे ठेलो रे ।
आछा फल किम ऊतरे, क्रोधी विष री बेलो रे ।। क्षमा...।।२२।।

क्रोधी कोरा वैरां बले, घट जावे कुल लाजे रे ।
कोई खेदो मत करो ईसको, ओछा जीवन काजे रे ।। क्षमा...।।२३।।
एक घर में क्रोधी हुवे, सघलां ने तल तलावे रे ।
जिण घर में क्रोधी घणा, ज्यांरो दुख किम जावे रे ।। क्षमा...।।२४।।
पंडित नर क्रोधे चढ्यो, कहिये बाल अज्ञानी रे ।
नीच चंडाल री ओपमा, दीधी केवलज्ञानी रे ।। क्षमा...।।२५।।
कूंजड़ा जिम लड़ बोकरे, नीच घरां का चागा रे ।
किसा मनुष्य में मनुष्य छे, ते पहिर्यां कहीजे नागा रे ।। क्षमा...।।२६।।
रीस कटारी ले मरे, पासी लेई छुरी खावे रे ।
केई कुवे बावड़ी पड़े, केई परदेसां जावे रे ।। क्षमा...।।२७।।
घणा अधीरा आखता, रीस थी ऊठे धूंधी रे ।
आप बले औरां ने बाले, अकल तिणा री ऊंधी रे ।। क्षमा...।।२८।।
जाणे दुख सूं छूट सूं, मूढ मरे विश खायो रे ।
आगे ही अधिका होवसी, तिणरी खबर न कायो रे ।। क्षमा...।।२९।।
कोई हुवे भूत भूतणी, आयो उलटो भंडावे रे ।
मुख में दिरावे खासड़ा, भूंडी तरे कढावे रे ।। क्षमा...।।३०।।
ज्यूं क्रोध रूपी भूतज चढ्यां, कंपे डरावणी देहो रे ।
लाल आंख त्रिसूलो चढ़े, बके परवस तेहो रे ।। क्षमा...।।३१।।
रीस कियां गुण को नहीं, राखजो आपणी लाजो रे ।
रीस थकी रोता फिरे, नहीं सरे कोई काजो रे ।। क्षमा...।।३२।।
क्रोध कियां नरके पड़े, जिहां तो दुःख अपारो रे ।
छेदन भेदन वेदना, तिहां नहीं किण रो सारो रे ।। क्षमा...।।३३।।

घर छोडी केई लड़े, भावे गृही ज्यू बोले रे ।
भेख लजावे लोक में, वधे कठांसू तोले रे ।। क्षमा...।।३४।।
केई साध ने साधवी, देवे दुरासी ने गालो रे ।
मरम मोसा दाखे रीस थी, बोले आल पंपालो रे ।। क्षमा...।।३५।।
भेख लेई भोला थका, करे कजिया ने कारा रे ।
काण न राखे लोकरी, ते साधु नहीं ठगारा रे ।। क्षमा...।।३६।।
जोम मांहे मावे नहीं, क्रोध अंध विकरालो रे ।
न गिणे बडां रो कायदो, ते साधु नहीं चंडालो रे ।। क्षमा...।।३७।।
केई वडां सू वेढा वहे, सरस आहार ने हेतो रे ।
गुरु सू पिण गुदरे नहीं, लड़ काढे पाधरे खेतो रे ।। क्षमा...।।३८।।
वस्त्र आहार काजे कजिया करे, वले नाम धरावे साधो रे ।
रसना रा लोलुपी थका, अजेस वरते असमाधो रे ।। क्षमा...।।३९।।
केई देखतां चाले आछी तरे, अण देखतां चाल ऊंधी रे ।
केवल ज्ञानी इम कह्यो, इणरी क्रिया कपट बूंदी रे ।। क्षमा...।।४०।।
अवगुण काढ़े पार का हेता हेत न जांणे रे ।
परपूठे हलकी करे, ज्यांरो विश्वास कोई न आणे रे ।। क्षमा...।।४१।।
कोई बात कांई समचे कहे, क्रोधी आप में खांचे रे ।
तकतो ने बकतो रहे, चोर तणी पर राचे रे ।। क्षमा...।।४२।।
बाप बेटा दोनूं लड़ पड़े, गालम गाल्यां आवे रे ।
रीस थकी सूझे नहीं, उल्टी मांम गमावे रे ।। क्षमा....।।४३।।
माय बेटा न कूटती, ले लकड़ी ने दौड़े रे ।
क्रोध सू पीड़ जां नहीं, नान्हा चूट पांसु तोड रे ।। क्षमा....।।४४।।

भाई दुख दायी हुवे, अणख ईसको आणे रे ।
क्रोध मान माया लोभे भर्या, आप आपरी ताणे रे ।। क्षमा....।।४५।।
बूढा ते लड़तां थकां लक्षण छोरा नां थायो रे ।
नान्हा पण क्षमा करे, ते वडा माणस कहवायो रे ।। क्षमा...।।४६।।
सासु बहु ते लड़ पड़े, चुट्टा माहो माहि झाले रे ।
लाज लोपी लोकां तनी, हमें कहो कुण पाले रे ।। क्षमा...।।४७।।
नणंद भोजायां, बहनड़ी, लड़े देवराणी जेठाणी रे ।
पड़दा ऊघाड़े रीस थी, न गिणे सगपण सहनांणी रे ।। क्षमा...।।४८।।
राड़ बढ़े बुरी गारसूं, वास ग्राम भंडीजे रे ।
गम खाऊ गुण आगला, ज्यांकी लोक में शोभा कहीजे रे ।। क्षमा...।।४९।।
ठाम ठाम झगड़ा करे, बोले रीस रा भरिया रे ।
स्युं मुख पावे बापड़ा, क्रोध-जाल में कलिया रे ।। क्षमा...।।५०।।
खिण तोला मासो खिणे, वादी बडो विरोधी रे ।
पूरो किणसू न ऊतरे, निपगो निपट क्रोधी रे ।। क्षमा...।।५१।।
टाटी ते टूटी पड़े, भींत सहेसी भारो रे ।
ओछा कुल रा नहीं खम सके, खमेस भारी सारो रे ।। क्षमा...।।५२।।
मजो गमावे क्रोध सूं, जावे नरक दुवारो रे ।
सूलां के रे साथ सूं, ऊपर गुरजां की मारो रे ।। क्षमा...।।५३।।
क्रोधी सूं क्रोधी मिले, उल्टा उल्टा करम बंधावे रे ।
क्रोधी सूं क्षमा करे, तो वेर विघन टलि जावे रे ।। क्षमा...।।५४।।
कलहो लगावे पर घरे, ते पापी दुख पासी रे ।
कलहो मिटाबे पारको, ते सासता सुख थासी रे ।। क्षमा...।।५५।।

अधीरा नर ऊछले, बके क्रोध अंध अपारो रे ।
वचन काढ़े अविचारियो, पछे पिछतावे बारंबारो रे ।। क्षमा...।।५६।।
क्रोधी कुढ कुढ ने मरे, अकल गमावे आछी रे ।
भूंडो दीसे लोक में, नहीं लेवे तोही पाछी रे ।। क्षमा...।।५७।।
निज अवगुण सूझे नहीं, पर ने लगावे दागो रे ।
सीख दियां उल्टो पडे, जांणे कोप्यो कालो सांपो रे ।। क्षमा...।।५८।।
सीख दियां ऊंधी माने, लागो किसो संतापो रे ।
बतलांया विलगे धणो, जांणे कोप्यो कालो सांपो रे ।। क्षमा...।।५९।।
अणहूता अवगुण कहे, आल देवे कोई कूरो रे ।
पर ने संतावे द्वेष थी, दुष्टी क्रोध में पूरो रे ।। क्षमा...।।६०।।
भूंडी भूंडी बोले गालियां, लाज आणे नहीं कांई रे ।
लोक कहे ए साटिया, नितकी करे लड़ाई रे ।। क्षमा...।।६१।।
छाया पड़ जावे डील रे, कुछ कुछ ने होवे कालो रे ।
यू ही अनाड़ी लड़ पड़े, घाले रांधी हांडी कालो रे ।। क्षमा...।।६२।।
कालो मूंडो क्रोधी तणो, न गिणे सेण सगाई रे ।
कांगा ज्यूं कजिया करे, मुख सोभा देवे गमाई रे ।। क्षमा...।।६३।।
रीस बसे कजिया करे, तोड़े जूनि प्रीतो रे ।
हेत मिलाप गिणे नहीं, नहीं राखे कोई रीतो रे ।। क्षमा...।।६४।।
कौडी कारण लड़ पड़े, तोड़े तिण सूं प्रीतो रे ।
रुपैये राड़ करे नहीं, ए उत्तमां की रीतो रे ।। क्षमा...।।६५।।
मार कूट बाथां पड़े, देवे नरक री साई रे ।
ज्ञानी कहे ए मूरखा, यूं ही करे छोराई रे ।। क्षमा...।।६६।।

धिग धिग क्रोधी जीवने, लड़तां लाज न आवे रे ।
वरजे तिण ने वेरी गिणे, कुढ कुढ रोस उठावे रे ।। क्षमा...।।६७।।
क्रोधी जावे नरक में, सिंह सरप होवे नीचो रे ।
जिहां जाइ तिहां पर जले, मरेज भूंडी मीचो रे ।। क्षमा...।।६८।।
तप जप युद्ध सब सोहिलो, पिण सभाव मरणो दोरो रे ।
पर ने परचावे धणो, आपो रमीजे ते थोरो रे ।। क्षमा...।।६९।।
भूंडी भूंडी सहू ओपमा, दीधी क्रोधी नर ने रे ।
थोड़े कह्यां समझे घणो, सुख लो क्षमा करने रे ।। क्षमा...।।७०।।
आछी आछी सब ओपमा, क्षमावंत ने दीधी रे ।
अनंत गुण छै एह में, गाढा चतुरां लीधी रे ।। क्षमा...।।७१।।
रीस बसे मोटो मुनि धर्म ध्यान थी चूको रे ।
'प्रसन्नचंद्र' मुनि तिण समे, मन सूं जूंझण ढूको रे ।। क्षमा...।।७२।।
'गजसुकुमार' कीवी क्षमा, तुरत फल लह्यो आछो रे ।
'सोमल' पापी दुर्मती, लही दुर्मति की लाछो रे ।। क्षमा...।।७३।।
'खंधक' कुंवर, मोटो मुनि, क्षमा कीधी भारी रे ।
मन मांहे रीस आणी नहीं, देहनी खाल उतारी रे ।। क्षमा...।।७४।।
'खंधक' रिसी ना शिष्य पांच से, महा बुद्धिवंता तापी रे ।
ज्यां ने घाणी में पीलिया, ब्राह्मण 'पालक' पापी रे ।। क्षमा...।।७५।।
रीस हुती खंधक ऋषि सूं, पांच सौ पील्या साथे रे ।
तिणां मुनि क्षमा आदरी उण बांध्या करम माथे रे ।। क्षमा...।।७६।।
क्रोध ने अलगो टालिये, अकल हिया में आणो रे ।
क्षमा करी सुख लो खरो, आच्छो मिलियो टाणो रे ।। क्षमा...।।७७।।
क्रोध सगलां में छे सही, किण में घणो किण में थोड़ो रे ।
रीस हिया में न राखसी, ते आगे ही होसी सोरो रे ।। क्षमा...।।७८।।

केई समाई पोसा में लड़े, भिड़े करमां रो खेद्यो रे ।
साहमों लजावे सांगने, कासू धरम इणने भेद्यो रे ।। क्षमा...।।७६।।
क्रोध करीने हारियो, मनुष्य जमारो सारो रे ।
गम खावो अकल विचारने, जिम महिमा वधे अपारो रे ।। क्षमा...।।८०।।
रीस होवे घणा कालरी, मत राखो, दीर्घ क्रोधो रे ।
चौमासी आवे जरां, सगलासु खमावो सूधो रे ।। क्षमा...।।८१।।
दोस किसो सतगुरु तणो, कहेज साची बातो रे ।
भारी करमा नहीं भेदिया, ज्यारे घणी हिया में घातो रे ।। क्षमा...।।८२।।
रोस चढियो उतार दे, पाछो मारे माणो रे ।
ते नर ज्ञानी जाण ज्यो, ज्यांरा जिनवर किया बखाणो रे ।। क्षमा...।।८३।।
रीस न राखे केह सूं, ते साचा सूरबीरो रे ।
भव सागर हेलां तिरे, धरसी मन में धीरो रे ।। क्षमा...।।८४।।
क्षमा करसी ते जीत सी, क्रोधी जासी हारी रे ।
सिखामण सतगुरु तणी, सेंठी राखो धारी रे ।। क्षमा...।।८५।।
एक सिखामण सांभली, काढो हिया रो सालो रे ।
उपशम अमृत रस पीवो, होवो निरभय निहालो रे ।। क्षमा...।।८६।।
भिन भिन वाणी सांभली, हलु करमां होसी राजी रे ।
क्रोध कदाग्रह छोडसी, रहसी तिणांरी बाजी रे ।। क्षमा...।।८७।।
साधु क्षमा धर्म दाखवे, सूत्र तणे अनुसारे रे ।
पाले जिके प्ररूपसी, तिरे जिके हिज तारे रे ।। क्षमा....।।८८।।
इम जाणी क्रोध निवारिये, राखो क्षमासु प्रेमो रे ।
सेवा करो सतगुरु तणी, रिख 'जयमलजी' कहे एमो रे ।। क्षमा...।।८९।।

⁂

चौसठ सती वन्दना

नाम पणे ज्ञानी कथिया,
जिके मुगति गई चौसठ सतियां ।
बीजी पण सुणजो एक चित्ती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१।।

पूरब बांधी ते शाता,
श्री 'ऋषभ' तणी एहवी माता ।
'मोरादेवी' सुखे-सुखे शिवपुर पहुँती
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२।।

संजम पामी सुख चेनी,
'ब्राह्मी' ने 'सुन्दर' दोय बेनी ।
जिण वयणे ए अनुराग रती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३।।

तीर्थंकरों नी बड़ी सिखणी
धुर 'ब्राह्मी' व छेली 'चंदणी'।
दीपायो जेणे जैन मती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।४।।

'पदमावती' 'गोरी' 'गंधारी',
'लखणा' 'सुसमा' रुकमा नारी ।
'सत्यभामा' ने 'जाम्बवती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।५।।

'अठ अग्रमहिषी कृष्ण तणी'
वलि 'पुत्र बहु' हुई दोय जणी ।
छिटकाय दिवी है ऋद्धि छती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।६।।

'काली' आदिक दश राणी,
सांभल ने वीर तणी वाणी ।
देही खंकर करली मुगत गति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।७।।
'नंदादिक' तेरे हुई बीजी,
भींजाणी धर्म मांहे मींजी ।
संजम ले इन्द्रियां वश करती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।८।।
'तेबीस' नृप श्रेणक नी भज्जा,
चंदनबाला पे थई अज्जा ।
मुगति गई सारा कर्म हती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।९।।
धन 'भग्गू' घर 'जस्सा' धरणी
'कमलावती' आतम उद्धरणी ।
प्रतिबोध्यो 'इक्खुकार' पती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१०।।
संजम ले बणियो धर्म प्रेमी
जिण ड़िगतो राख्यो 'रहनेमी' ।
जगमें जस लीधो 'राजमती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।११।।
छोड़ दिया सब घर फंदा
मां वीर तणी 'देवा नंदा ।
पाली सब समिति ने गुप्ति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१२।।

'चंदणा' कष्ट सह्यां रे घणा,
भावे कर बाकुला उड़द तणां ।
प्रतिलाभ्या जेणे वीर जती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१३।।
प्रथम स्थानक नी दाता,
पाली शुद्ध आठों ही माता ।
जिण प्रश्न पूछिया जयवंती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१४।।
बेटी शतानिक राय तणी,
राणी 'मृगावती' नणद भणी ।
सब कर्म जीतिया 'जंयति',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१५।।
नारद आया नहीं ऊठि जरे,
'द्रौपदी' ने ले गयो समुद्र परे ।
मरजाद न मूकी मतिवंती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१६।।
छठ-छठ पारणो है कीधो,
पांणी मां घोली अन्न लिधो ।
सील पाल्यो द्रुपदी सती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१७।।
रावण पकड़ ले गयो लंका,
जब लोकां में पड़ गई शंका ।
धीज उतारी 'सीया' सतवंती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१८।।

अग्निकुण्ड जलराशि कियो,
सीता पिण तन रो सांच दियो ।
संजम लेइ देवलोक जती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।१६।।
गुरणीनी शुद्ध पाली शिक्षा
संग लेइ मांगी घर-घर भिक्षा ।
पिण गर्व न राख्यो गुणवन्ती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२०।।
गुरणी सीख कठिन दीधी,
सिखणी सांभल खमता कीधी ।
केवल पामी 'मृगावती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।
'पद्मावती' ने 'मयण-रेहा',
दाखूं सतियां ना गुण केहा ।
कष्ट पड्यां राख्यो शील अति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२२।।
'विजय' सेठ नारी 'विजया',
जिणे शील पाल्यो एकण सिजिया ।
संजम ले हुवा सुव्रती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२३।।
'प्रियदर्शना' वीर तणी बेटी,
महाव्रत लीधो मिथ्यामत मेटी
संजम ले देवलोक गति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२४।।

तेतली घर 'पोटिला' नारी,
पियू पर उपकार कियो भारी ।
सरधायो जिणे मारग धर्म ततो,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२५।।
नल राजा वन में है मूकी,
ते कष्ट पड्या सूं नहीं चुकी ।
वलि दीक्षा लीधी 'दमयंती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२६।।
पवनकुंवर 'अंजना' परणी
तिण कलंक लागो पूरव करणी ।
शील पाल्यो चूकी न रती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२७।।
शीले कर अंजना धुर सांची,
जिणरी कीरत जुग में बांची ।
जायो जिण 'हनुमत्' वीर जती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२८।।
बंधु ए बेहरवा आव्या,
शंका पड्यां कन्ते कर काप्या ।
नुवा कर आया 'कलावती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।२९।।
काचे तार सूं जल काढ्यो,
चंपापुरी 'सुभद्रा' जस चाढ्यो ।
परशंसे परजा भूमिपती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३०।।

'जंबू' नी कही 'आठे नारी',
मारग पामी सुध तंत सारी ।
सांभल जम्बू नी आठ कथी
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३१।।
तीर्थंकर नी पदवी पासी,
भव एक करी मुगति जासी ।
शुद्ध पाक बेहरायो 'रेवन्ती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३२।।
'चेलणा' राणी अरु 'ज्येष्ठा'
श्रुत धर्म तणी रही शुद्ध चेष्टा ।
'शिवा' 'सुज्येष्ठा' 'प्रभावती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३३।।
शालिभद्र नी बहिन सती,
पारख्या कीधी 'धन्ने' पति ।
चित्त चूकन बोली मुख चलती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३४।।
हरिचंदर नी 'तारा' राणी,
ब्राह्मण घर मोल लेई आणी ।
पिण राख्यो शील डिगी न रती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३५।।
'कौशल्या' दशरथ नी कान्ता,
महिमा घर राम तणी माता ।
संसार सराई शीलवती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३६।।

लंका सुख छोड़ी व्रत लीधो,
करणी कर करम दूरे कीधो ।
'मंदोदरी' शील सदा सुगति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३७।।
च्यारूं नर विषया रस गीधा,
सती कब्जे करी पेई में दीधा ।
सरम राखी निज 'शीलवती',
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३८।।
इत्यादिक सतियां मोटी,
जिण तज दीधी सरधा खोटी
केई मुक्ते जासी कर्म हती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।३९।।
लाख सैतालिस सर्व कही,
वलि आठ सहस सातसौ रे लही
चौबीसे नी सतियां हुई इति,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।४०।।
केतलीक तो सूत्र में चाली,
केतलीक कथा मांहि सुं घाली
पछे ज्ञानी वदे सोई तहत्ती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।४१।।
इन सतियां रा गुण जाणी,
बाचो सरधा उत्तम प्राणी
ऋषि 'जयमलजी' कहे आंणो धर्म रत्ती,
समरूं मन हरषे मोटि सती ।।४२।।

शान्ति जिन स्तवन

नगर हथिनापुर अति रे भलो,
ज्यां जनम्यां तीर्थकर त्रिभुवन तिलो ।
राह प्ररूप्यो जैन खरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१।।

सर्वार्थ सिद्ध थकी रे चवी,
तब देश नगर मां शान्ति हुई
शान्तिजी नाम दियो सखरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।२।।

विश्वसेन पिता अचिरा माया,
जेणे चउदे सुपना मोटा पाया ।
जनम्यां तीर्थकर अमिय झरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।३।।

छप्पन कुमारिका उल्लास घणो,
जेणे जन्मोच्छव कियो कुमर तणो ।
चौसठ इन्द्र आवि कलश भरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।४।।

भणावी है बहोत्तर कला,
जेणे सहस चौसठ परणी महिला ।
छः खण्ड साध्या इणीय परो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।५।।

सहस पिचत्तर वर्ष कह्या,
चक्रवर्ती पणे-घरवास रया ।
पछे मिटाय दियो सगलो ही झगड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।६।।

एक सहस पुरुष साथे शिक्षा,
श्री जिनवरजी लीनी दीक्षा ।
पछे सुर-नर आवि ने पाय पड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।७।।

प्रभु जी मोहा जाल सभी कापी,
चतुर्विध संघ तीरथ थापी ।
चौथे दुखम-सुखम आरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।८।।

बासठ सहस मुनिराज थया,
वलि सहस नव्यासी हुई अज्जिया ।
प्रभु तारो ने वलि आप तरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।९।।

दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी,
त्रण लाख तयांसी सहस श्राविका सुणी ।
और चतुर्विध संघ खरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१०।।

चार हजार ओहीनाणी जती,
वलि त्रणशे हुवा विपुल-मती ।

नेवु गणधर नो पाप हरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।११।।

चार हजार त्रणसे रे कह्या,
मुनि केवल लही ने मुगति गया ।
छः हजार मुनि वैक्रिया-धारो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१२।।

चौतीस सौ वादी भारी,
वलि आठ सौ चौदह-पूरबधारी ।
आठ करम सूं जाई लड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१३।।

नव पदवी मोटी रे कही,
जणे एकण भव माँ छए लही ।
एसो भरियो पुण्य घड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१४।।

पा पा लाख कुमर ने साध पणे,
वलि अध लाख वरस रह्या राज पणे ।
एक लाख वरसनो सर्व धड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१५।।

चालीस धनुष ऊंची रे देही,
वलि हेमवरणी उपमा रे कही ।
दीठे दिल दरयाव ठरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१६।।

जो नाम धरावो श्रावक यति,
तो अनाचार सेवो रे मती ।
परभव सेती कांई रे डरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१७।।

त्रिविधे त्रिविधे जीव मती रे हणो,
ए उपदेश छै जिनराज तणो ।
मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१८।।

ओ जीव राजा ने रंक थयो,
वलि नरक निगोदमां बहू रे रह्यो ।
रड़वड़ियो जेम गेड़ी-दड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।१९।।

चार गति रा दुःख कह्या,
जीवे अंनती अनंती बार लह्या ।
पची रह्यो जिम तेल-बड़ो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२०।।

श्रद्धा सहित तुमे ताप तपो,
भव्य जीवों सो तुमे जाप जपो ।
मार्ग मिल्यो छै निपट खरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२१।।

संथारो एक मास तणो,
सम्मेतशिखर सिद्ध ठाम भणो ।
नव सौ मुनि सुं मुगति वरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२२।।

मृग लंछन सेति ध्यान रह्या,
श्री शान्ति जिनेश्वर मुगति गया ।
पछे मेट दियो सब जन्म-मरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२३।।

तुम नाम लियां सब काज सरे,
तुम नाम मुगति महल मळे ।
तुम नामे शुभ भंडार भरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२४।।

ऋषि जयमलजी आ विनंति कही,
प्रभु तारो गुण नो पार नहीं ।
मुझ भव-भव नां दुःख दूर हरो,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ।।२५।।

- रचना : आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म. सा.

* * *

पांच सकार से सुख मिलता है-

सत्य, शील, सन्तोष, अरु, सत्संगत, शुभ काम ।
पांच सकार को आदरे, पावे सौख्य ललाम ।।

जय गुरु चालीसा

।। दोहा ।।

श्री गुरु चरण कमल में, वन्दु शीष नमाय ।
जय चालीसा मैं कहूँ, सुणजो चित्त लगाय ।।

जैन जगत का उज्ज्वल तारा,
माता महिमा देवी का प्यारा ।।१।।
सुदी भादवा तेरस प्यारी,
सतरह सौ पैंसठ सुखकारी ।।२।।
गाँव लाम्बिया है सुखकारा,
मोहन घर लीनो अवतारा ।
मुख सोहे ज्यूं पूनम चन्दा,
मात-पिता पावे आनन्दा ।।४।।
घर-घर मंगल गाई बधाई,
खुशियाँ सारां के मन छाई ।।५।।
सौदा लेने मेड़ता आये,
भूधर सरीखा गुरुवर पाये ।।६।।
सतरह सौ इठियासी मिगसर,
बदी दूज थी वार गुरु अतिथर ।।७।।
एक प्रहर में प्रतिक्रमण सीखा,
तुझसा कोई और न दीखा ।।८।।
बत्तीस आगम कण्ठस्थ कीना,
सत्य धर्म दिल में रख लीना ।।९।।

भूधर जी से दीक्षा पाई,
पकड़ी राह सदा सुखदाई ।।१०।।
एकान्तर तपस्या के धारी,
जय गुरुवर है मंगलकारी ।।११।।
अठारह सौ पांच की साल,
आए जोधपुर दीनदयाल ।।१२।।
अक्षय तृतीया शुभ दिन आया,
सब लोगों का मन हर्षाया ।।१३।।
आचार्य की पदवी पाई,
संघ चतुर्विध है हरसाई ।।१४।।
शिष्य इक्यावन हुए गुरुवर के,
एक से एक सभी बढ़कर के ।।१५।।
बीकानेर में जाकर गुरुवर,
सत्य धर्म का लगाया तरुवर ।।१६।।
यतियों का पाखण्ड मिटाया,
जैन धर्म का डंका बजाया ।।१७।।
आडा आसन पचास वर्ष तक,
नहीं किया गुरु मरणासन तक ।।१८।।
जय का नाम सदा सुखदाई,
भक्तों के गुरु सदा सहाई ।।१९
शीलव्रत में थे वे शूरा,
लब्धि प्रकट करे भरपूरा ।।२०।।

नाम लिया सब कष्ट टले हैं,
सारा ही सुख आय मिले है ।।२१।।
भूत पिशाच न आवे पासा,
जो राखे गुरु का विश्वासा ।।२२।।
शाकिन डाकिन नहीं सतावे,
जय का नाम सुनत भग जावे ।।२३।।
टोना टोटका तन्तर-मन्तर,
पल में हो जावे छू मन्तर ।।२४।।
जय गुरु जयमल जो कोई गावे,
दुश्मन उससे माफी चावे ।।२५।।
जो कोई जय का नाम सुनावे,
चिन्ता उसके पास न आवे ।।२६।।
एक माला जो नित की फेरे,
उसको मिलते सुख बहु तेरे ।।२७।।
भाव सहित जो शीष नमावे,
जीवन में दुःख कभी न आवे ।।२८।।
बिगड़े काम सभी बन जावे,
कोर्ट कचहरी में जय पावे ।।२९।।
दिन-दिन लक्ष्मी बढ़ती जावे,
सब लोगों में इज्जत पावे ।।३०।।
जो जय गुरु की महिमा गावे,
उससे छल कोई कर नहीं पावे ।।३१।।

जो जय गुरु की शरण में आवे,
मन इच्छा पूरी होय जावे ।।३२।।
जिसने जय का लिया है ओटा,
उसके कभी न आवे टोटा ।।३३।।
इधर-उधर तुम मत अब डोलो,
पूज्य जयमलजी की जय बोलो ।।३४।।
नृसिंह चऊदस अठारह सौ तेपन,
शहर नागौर हो रहा धन-धन ।।३५।।
इकत्तीस दिन संथारा लीना,
गुरुवर ने जग में यश लीना ।।३६।।
दो हजार चौपन सुखदाई,
गुरु पारस-पदम से प्रेरणा पाई ।।३७।।
महामन्दिर में किया चौमासा,
पूरी की श्री संघ की आसा ।।३८।।
पूज्य गुरुवर को नमन किया है,
गुरु चालीसा पूर्ण किया है ।।३९।।
जो कोई इसको पढ़े पढ़ावे,
उसके घर नव निध हो जावे ।।४०।।

।। दोहा ।।

नियम सहित इसको पढ़े, पूरी होवे आस ।
निश्चित ही विपदा टले, यूं गावे परकास ।।

- रचयिता : श्री प्रकाशमलजी चौरड़िया

❋ ❋ ❋

पूज्य जयमलजी रो जाप जपो

पूज्य जयमलजी हुवा अवतारी, ज्यांरा नाम-तणी महिमा भारी ।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

पूज्य-नामे सब कष्ट टले, वली भूत प्रेत पिण नांही छले ।
मिले न चोर हुवे गुप्प-चुपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे ।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

अड्यो काम तो हुय जावे, वली बिगड्यो काम भी बण जावे ।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

राज-काज में तेज रहे, वलि खमा-खमा सब लोग कहे ।
आछी जागा जाय रुपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यांरे कदे नहीं आवे टोटो ।
घर-घर-बारणे कांई तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

एक माला नित नेम रखो, किण बात तणो नहीं होय धको ।
खाली विमाण अरु टलेजी सप्पो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

स्व-भक्त तणी प्रति-पाल करे, मुनि 'राम' सदा तुम ध्यान धरे ।
कोई प्रत्यक्ष बात मती उथपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

पूज्य-नाम-प्रताप इसो जबरो, दुःख कष्ट रोग जावे सगरो ।
कई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।।

❋ ❋ ❋

महावीर प्रभु पालनीया

पालणीये परदे कीधो रतनां सूं जड़्या,
जड़्या मांहे सोना री सांकल मांहे,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।१।।
ए रेशम डोर बणिया तार-तार तणिया,
मांहे काली-काली धार रंगिया,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।२।।
देव आज्ञा दीधी माताजी आवे,
गावे माता त्रिशला दे हुलरावे,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।३।।
ए चरण कंवर जीवो, अमृत रा प्याला पीवो,
तीनों जगत कुल दीवलो,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।४।।
ए कंवर थासी, जब स्कूल पढवा जासी,
एणी माता-पिता री आशा पूरण थासी,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।५।।
ए कंवर रूसिया जावे, माताजी लारे आवे,
एणी माता मनाई घर लावे,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।६।।
ए चार हंस मैना पोपठ कंठ झीणा,
ए चालिया नंदी रे घर राजी,
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो ।।७।।

मासी सैया साथे, पोट कंठ साथे
ए देखिया मामी रा नैन ठरिया
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो
पग में नेवर बाजे, जांजरिया रूड़ा चमके,
चाले चतुराई ठमके
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो
पालणीये परदे कीधो, चरणा में चित्त दीनो,
ओ म्हारा गुरु लाल गुण गासी ।
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणिये झूलो
जो पालणियो गासी, सदा मुगत्यां तणां सुख थासी
ओ महावीर प्रभु झूलो पालणी ये झूलो ए पिव पेली मुक्ति में

* * *

देश का गौरव गिरता है

संस्कृति में विकृति आने से !
सद् विचारों के अभाव से !
न्याय-हीन सरकार से !
कर्त्तव्य-विमुख प्रजा से !
भ्रष्टाचार के प्रचार से !
विलासिता की प्रबलता से !
शिक्षा के अभाव से !
व्यापार की अप्रामाणिकता से !
आपस में फूट पड़ने से !

जंबूजी का स्तवन (म्हारा आलीजा भरतार)

म्हारा आलीजा भरतार, म्हारे हिवड़ा रा हार ।
म्हारी प्रीतड़ली ने मत छिटकाओ ओ जम्बूजी[२]
हिलमिल संग चालां ।। टेर ।।

म्हारी गुणवंती नार, म्हारी बुधवन्ती नार ।
थांने मुगति रा महलां में ले चालूं सजनी,
आपां लेस्यां संजम भार ।। टेर ।।

थांरी नाजुक आ जवानी, म्हारी बालुड़ी उमरिया,
थोड़ी जवानी ढ़लिया सूं संजम लेसा ओ जम्बूजी,
हिलमिल संग चालां ... ।।१।।

थांरी जवानी दिवानी, नदियाँ पूर ज्यों मानी,
ढ़लता घड़ी दोय देर नहीं लागे ए सजनी,
आपां लेस्यां संजम भार ... ।।२।।

नहीं बालूड़ा खेलाया, नहीं दूधड़ला पिलाया,
नहीं सावणिया रा झूला में झुलाया ओ जम्बूजी,
हिलमिल संग चालां ... ।।३।।

प्यारी ओ है मायाजाल, थांने सपनां रो ख्याल,
थांने मुगत्यां रे महलां में झुलाऊं ए सजनी,
आपां लेस्यां संजम भार ... ।।४।।

थांने कुण तो भरमाया, साचां प्रेम ने तोड़िया,

म्हारे बादलियां ज्यू नैणां नीर बरसे ओ जम्बूजी,
हिलमिल संग चालां ... ।।५।।

स्वामी सुधर्मा भरमाया, ज्ञान अमोलक सुनाया,
म्हारा हिरदा में गहरो रंग छायो ए सजनी,
आपां लेस्यां संजम भार ... ।।६।।

म्हारा साजन ओ सजनिया, बोले आठों ही कामणिया,
प्रीति पालो ओ बादलिया काया कांपे ओ जम्बूजी
हिलमिल संग चालां ... ।।७।।

बोले जम्बूकुमार, सुणो चन्द्रवदनी नार,
थे तो धन ने जोवनिया में कांई राची ए सजनी,
आपां लेस्यां संजम भार ... ।।८।।

म्हांनो 'रसिक' री सीख, म्हांने भली दीनी सीख,
मैं तो संजम लेई ने संग चालां ओ जम्बूजी,
आपां लेस्यां संजम भार ... ।।९।।

* * *

पांच की बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए

माता पिता की बात पर
शिक्षक की बात पर
धर्माचार्य की बात पर
सन्मित्र की बात पर
सुयोग्य पत्नी की बात पर !

सोलह सती रा लेसूँ नाम

शीतल जिनवर करूँ प्रणाम, सोलह सती रा लेसूँ नाम ।
ब्राह्मी चंदना राजमती, द्रौपदी कौशल्या मृगावती ।। १ ।।

सुलसा सीता सुभ्रद्रा जाण, शिवा कुंती शीलगुण खाण ।
नल-धरणी दमयंती सती, चेलणा प्रभावती पद्मावती ।।२ ।।

शील-गुण सुहावे सिरी, ऋषभदेव नी धिया सुन्दरी ।
सोलह सतियाँ शील-गुण भरी, भवियण प्रणमो भावे करी ।। ३ ।।

ये सुमर्याँ सब संकट टले, मन चिंतित मनोरथ फले ।
इण नामे सब सीझे काज, लहिये मुक्तिपुरी नो राज ।। ४ ।।

भूत-प्रेत इण नामे टले, ऋद्धि-सिद्धि घर आई मिले ।
इण नामे सहु होय जगीश, ये सतियाँ सुमरो निश-दिश ।। ५ ।।

* * *

गृहिणी कैसी हो ?

गृह कार्य में कुशल !
शान्त स्वभाव वाली !
कोमल हृदय वाली !
पवित्र विचार वाली !
विवेक विचार वाली !
सादा लिवास वाली !
सन्तोष वृत्ति वाली !
मृदु वाणी बोलने वाली !

इण शील वरत रो ल्हावो

इण शील वरत रो ल्हावो जग में सतियां ले गई रे ।। टेर ।।

ब्राह्मी सुंदरी दोनूं बहनां, रह गई अखड कंवारी रे ।
आदिनाथ सूं संयम लेकर, पहुंची मोक्ष मंझारी रे ।।१।।

चंदनबाला चोहटे बिकती धन्ना सेठ घर लाया रे ।
महावीर ने आहार बहरा कर, फिर बैरागण बन गई रे ।।२।।

महेन्द्रराय री धिया अंजना, सासू कलंक चढ़ायो रे ।
गुफा मांही सिंह धडूक्यो, वन में हनुमत जायो रे ।।३।।

सती सुभद्रा कांटो काढ्यो सासू कलंक लगायो रे ।
काचा तागा नीर निकाल्यो, खुल गई चंपा पोल्या रे ।।४।।

रामचन्द्र बनवास सिधाया, सिय रावण घर आणी रे ।
धीज करी सती सांची बण गई, पावक कर दियो पाणी रे ।।५।।

धातकी खंड रो राय पद्मोत्तर, ले गयो द्रौपदी नारी रे ।
शील में सांची रंग में रांची, पाँच पाडवों री नारी रे ।।६।।

नेमकंवर तोरण पर आया, राजुल लेरां ले रही रे ।
पशुअन री पुकार सुणी ने, चढ़ गया गढ़ गिरनारी रे ।।७।।

विजय सेठ ने विजया सेठाणी, पलंग बीच तलवार रे ।
सांची अणिया शीलज पाल्यो, हो गयी जय-जयकार रे ।।८।।

कष्ट पड्या रही शील में सांची, अमर नाम वे कर गई रे ।
'रसिक' होय गुण गाता रंग से, आतम पावन बन गई रे ।।१०।।

सरसत-सरसत करूं प्रणाम

सरसत-सरसत करूं प्रणाम, एक विनती मैं करूं ।
मांगूं लाख पचास, सरसत रा गुण गावस्यां ।।१।।

रायवर बेटी दोय, भणे गुणे सपने भणे ।
एक बाई बणै सुजान, दूजी बाई नाटक करे ।।२।।

रायभर एरी चूक, सखरो वर मैं जोवसां ।
चारों दिश बैठाओ राज, बैठा पंचरंग आपणे ।।३।।

मैना ने बुलावे तात, उठ बाई वर जोयलो ।
थारे मन गमतो वर जोय, ज्यों म्हारी कंवरी झिगमिगे ।।४।।

मैना बोले ओ तात, लादे करमां आपरे ।
बापरी दी न जाय, जासी कर्मां आपरे ।।५।।

भरिया मंडारा मांय, मान गयो मोलाय जो ।
तेड़ो फेरियो अपार, शिव राजा ने भेंटस्यां ।।६।।

सुन्दर देस्यां ओ राज, मैना देसा विरोधियां ।
सात सौ विरोधियां रे मांय, उमर राणा थापिया ।।७।।

बुरो कियो इण रात, नगरी में विसड़ो पड़ियो ।
थारो बाप दीधी रिसाय, तूं कंवरी वर जोयले ।।८।।

सब धर्म हमारो देह, म्हैं प्रकाशी कांई करूं ।
म्हें शीलवंती सुखमाल, वेण वचन नहीं बोलसां ।।९।।

म्हें जपसां श्री नवकार, शासन री देह हुसी ।
धन-धन थारी जीभ, उत्तम कुल छे मांय रो ।।१०।।

विरोधियां दो आशीष, इसड़ी करूं बोलावणी ।
चैत्र आसोजां रे मांय, नवपद-नवपद जे जपे ।।११।।

ज्यांरे पूरे मन की आश, घर बैठां नवनिधि सहु फले ।
म्हारे सकल विजोरो आज, आज मनोरथ सिद्ध फल्या ।।१२।।

म्हांरे हूंस रही मन मांय, म्हारी मैना मैं मुख जोवती ।
मिल्यो वियाणया रो साथ, पूछंता कुल आपरो ।।१३।।

जब जासां थानक बार, तब कुल केसा मांय रो ।
चम्पा नगरी मंझार, सिंहरथ राजा रा डीकरा ।।१४।।

म्हारो देवर लीनो देश, पूत्तर लई मैं निसरी ।
सातसौ कोढ़्यां रे मांय, जिणमें म्हारो पूत बरसां सूं बसे ।।१५।।

देश-देशान्तरा होय बेरी तो पाछां फिरिया ।
हुई अचम्भे बात, उमर राजा परणियां ।।१६।।

परणियां तेरह नार, आठां री पेरावणी ।
सब दास-दसोल्यां रे साथ, सरसी कुंवरी सुन्दरी ।।१७।।

नव नाटक के मांय, सरसा कुंवरी सुन्दरी ।
झबरक दिवलो हाथ, आगे मृगलो सांचरयो ।।१८।।

सांभलज्यो महाराज, पीयर जासां आपणे ।
मोटा मिल्या परधान, किम कर राज पधारसी ।।१९।।

कंधे कावडियां लेय, सो मिलवाने आवसी ।
बरस पड्या दो-चार, सुसरा-जंवाई नहीं ओलखे ।।२०।।

कुण ओलखावे तात, तात देख मन गेह गयो ।
मैं अपकर्मी हो राज, बाप कर्मी वा यूं रूले ।।२१।।

श्रीपाल गुणे मजाल, आगे की जो वीनवे ।
ज्यूं तूठ्या श्रीपाल, त्यूं सगला ने तूठज्यो ।।२२।।

भणे गुणे नर-नार, ज्यांरी मनसा पूरजो ।
गावे नर ने नार, आयंबिल रो फल पावसी ।।२३।।

सूती बाई बड़ला हेट, सूती ने सपनो आवियो ।
जाली झरोखा ओ राज, ए मन्दिर ए मालिया ।।२४।।

सरसत रा गुण गाविया ने चारों फल पाविया ।
अमरापुर में जावियां, मोक्ष मार्ग पहुंचावियाँ ।।२५।।

सब चेत आसोजां रे मांय, मैना रा गुण गावस्यां ।
बाई चेत आसोजां रे मांय श्रीपाल रा गुण गावस्यां ।।२६।।

बाई चेत आसोजा रे मांय नवपद गुण गावस्यां ।
बाई चेत आसोजां रे मांय सरसत रा गुण गावस्यां ।।२७।।

बाई आई जैसी आवज्यो म्हारासा रे चेल्यां लावज्यो ।
बायां-भायां ने ज्ञान सिखावजो, घर-घर में मंगल गावजो ।।२८।।

✲ ✲ ✲

पांच छोटे होकर भी भयंकर हैं-

रोग, शत्रु, ऋण, अग्नि अरु पंचम दोष विकार ।
आरम्भ में छोटा दिखे, पीछे करत बिगार ।।

महासती अन्जना

पतिवरता एक सती अंजना, राजा महेन्द्र की लड़की ।।होजी।।
कर्म पूरवलो आयो उदय में, दासी के संग वन फिरती ।।होजी।।
मान सरोवर तट के ऊपर, श्याम घणी छे मोहब्बत की ।।होजी।।
चकवा-चकवी रेण बिछोवा, सूरत लगी एक तिरिया की ।।होजी।।
आधी रात का आया पवन जी, तुरन्त गया छे महला में ।।होजी।।
जका दिना स्यूं गर्भ रह्यो छे, देखो प्रियतम कर्मा की ।।होजी।।
गरभवन्ती अन्जना ने देखी, सासू बोले कड़वन्ता ।।होजी।।
कुण को कंलक लगायो ए पापणी, इण में फरक न एक रती ।। होजी।।
हाथ जोड़ कर केवे अन्जना, सुणो सासुजी गुणवन्ता ।।होजी।।
कड़ा मुन्दड़ी देय निशानी, बगस गया मेरा प्राणपति ।।होजी।।
तूं झूठी थारी दासी झूठी, और झूठा थारा कुल का ।।होजी।।
दोन्यां ने ही देश निकालो, दासी के संग वन फिरती ।।होजी।।
माता पिता घर गयी अन्जना, वे देखी छे गर्भवती ।।होजी।।
आंगण में ऊबी नहीं राखी, पाछी काढ़ी वन मांही ।।होजी।।
हुई उदासी गई पहाड़ां में, आगे खड़िया है ग्यान जती ।।होजी।।
हाथ जोड़कर प्रभुजी ने पूछे, कद मिलसी म्हारो प्राणपति ।।होजी।।
प्रभुजी केवे सुनो अन्जना, धीरज रखो अपना मन में ।।होजी।।
चरम शरीरी पुत्र जी होसी, पति मिले थोड़ां दिन में ।।होजी।।
देय उपदेश प्रभुजी पधारियां, पुत्र हुयो वन गुफा में ।।होजी।।
चरण रेख देखी पुत्र की, इसी ज्योति जांणे सूरज की ।।होजी।।

घणां दिनां रो बिछड्यो मामो, आय मिल्यो छे उण वन में ।।होजी।।
पुत्र सेती देखी अन्जना, ले बैठ्या हनुमत रथ में ।।होजी।।
विमान मांये खेलत बालो, उछल पड्यो है पहाड़ां में ।।होजी।।
खण्डित-खण्डित शिला होगी, इचरज पाम्यो छे वन में ।।होजी।।
खेलत बालो देखत मामो, खुशी हुयो अपना मन में ।।होजी।।
हरख करी ने कंठ लगायो, उठाय लियो है गोदिया में ।।होजी।।
कटक जीत कर आया पवनजी, तुरन्त गया छे महला में ।।होजी।।
सती अन्जना नहीं दिख्या छे, घणी उदासी है मन में ।।होजी।।
हाथ जोड़कर माताजी ने पूछे, अन्जना नहीं दिखी घर में ।।होजी।।
माता केवे सुणो पवनजी, बात कहूँ छूं मैं थाने ।।होजी।।
किणको कंलक लगायो ए पापणी, कुण आयो छे लंकपती ।।होजी।।
जा दिन सेती माला डाली, जा दिन छोड्या तेरा पति ।।होजी।।
दोन्यां ने ही देश निकालो, काढ़ दिवी अपना घर सूं ।।होजी।।
महेंदपुरी में गया पवनजी, राजा मन में सोच करे ।।होजी।।
कंवरी ने घर में नहीं राखी, ए आया छे लेबा ने ।।होजी।।
छोटा सालाजी री छोटी पुत्री, ले बेठ्या छे गोद्या में ।।होजी।।
सुणो कंवरबाई थारा भुवासा, कांई करे रंग महलां में ।।होजी।।
सुणो फुफासा सांच केऊ छू, धीरज रखो अपना मन में ।।होजी।।
आंगण में ऊबा नहीं राख्या, पाछा काढ्या वन मांहीं ।।होजी।।
भोजन की तो हुई तैयारी, मंत्री केवे राजा ने ।।होजी।।
थारी अक्कल क्यूं गई रे डोसा, पुत्री ने नहीं राखी घर में ।।होजी।।

सासु सुसरा दियो पलोटो, बाप नहीं राखी घर में ।।होजी।।
होजी माय नहीं राखी घर में ।।होजी।।
मामाजी मोसाले लेग्या, जस फैल्यो सारा जग में ।।होजी।।
मामा के घर गया पवनजी, जाय उतर्या हनुमंत नगरी ।।होजी।।
पुत्र सेती देखी अन्जना, खुशी हुआ अपना मन में ।।होजी।।
पवन जी केवे सुनो अन्जना, बात कहूँ छू मैं थाने ।।होजी।।
झूठो दोष दियो माताजी, घर चालो अब तुम अपने ।।होजी।।
हाथ जोड़ कर केवे अन्जना, सुनो नाथ म्हारा प्राणपति ।।होजी।।
दोष तो म्हारे कर्मों को लाग्यो, कांई केवे सासु गुणवन्ती ।।होजी।।
"नानूराम" केवे देख तमासा, दया धर्म धारो मन में ।।होजी।।
चीरंजीव होया अन्जना पुत्र, साथ गया अपना घर में ।।होजी।।
मामोसा भंडारो भरियो, आनन्द पाम्यो सारा जग में ।।होजी।।
होजी आनन्द पाम्यो सारा जग में ।।

* * *

नकल कभी मत करो

बूढ़े की, अन्धे की !
काने की, लँगड़े की !
लूले की, गूँगे की !
तुतले की, बहरे की !

अंजना सती

एक दिवस सती अंजना, बैठी तरवर जाय ।
वसन्तमाला ओ सखी साथ में, नैनां नीर बहाय ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।१।।

मैं छु नाजुक सुन्दरी पिया पवन की नार ।
परणी ने प्रीतम परिहरी, बोल्या नहीं रे लिगार ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।२।।

बारह वर्ष इम बीतीया, झुरता दिन ने रात ।
सूरत न देखी नाथ री, मुख सूं नहीं किनी बात ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।३।।

रण सूं नाथ पधारिया सासू कलंक लगाय ।
हाथ पकड़ काढ़ी बारणे, म्हारी सुणी न लिगार ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।४।।

पीहर गई पिता नहीं राखी, माता नहीं दिवी धीर ।
भाई ने भोजाई नहीं बोलिया, नहीं पायो नगरी में नीर ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।५।।

मेवा ओ मोदक छुटिया, करती वन फल आहार ।
पिलंग पतरणा कहां रह्या, छूट्यो सै परिवार ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।६।।

कर्म कमायां पहले भव मांही, देती किणी नहीं दोष ।

भुगतियां बिना छूटे नहीं, धरती मन में संतोष ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।७।।

गर्भवती सती इण विध फिरती, घोर जंगल रे मांय ।
ज्यां दिन हनुमंत जनमिया, कष्ट गयो सब दूर ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।८।।

कर्म कथा आ विचित्र है, पावे कोई नहीं पार ।
कर्म थकी डरो मानवी, जो उतरो भवजल पार ।।
रूदन करे ओ सती अंजना ।।९।।

* * *

माता की गोद में ही

अच्छा बनता है बालक !
बुरा बनता है बालक !
वीर बनता है बालक !
भीरु बनता है बालक !
दयालु बनता है बालक !
निर्दयी बनता है बालक !
सच्चा बनता है बालक !
झूठा बनता है बालक !
विनीत बनता है बालक !
अविनीत बनता है बालक !

चन्दनबाला इक्कीसी

(तर्ज : तेजा री..)

हाथा में हथकड़ी ने, चरणों में बेड़ी हो ।
छाज में उड़द रा पड़िया बाकला ।।१।।
तीन दिवस री भूखी, आंख्या मांही आँसूं हो ।
ओ गिंगमिण उठाया, खावण बाकला ।।२।।
इतरे निहार्‌या आता, महावीर स्वामी जी ।
ओ हिवड़ो हरसाई, सूख्या आँसूड़ां ।।३।।
खुल्या खुल्या भाग देखो, चंदना रा आज जी ।
गंगा घर आई, पातक धोयवा ।।४।।
आओ आओ प्रभुवर, करुणानिधान जी ।
नावा तिराओ म्हारी डूबती ।।५।।
बारे बोल मिलिया पर आँसूं नहीं देख्या हो ।
आया पगां ही मुड़्या वीर जी ।।६।।
चन्दनबाला देख-देख बिलखाई रे ।
हिवड़ो भरीज्यो आँसूं चालियां ।।७।।
गद्-गद् स्वर सूं, वीर प्रभु ने बोले रे ।
आंतस भीजे, कांपे कालजो ।।८।।
जाणो खाली हाथ तो आणा रो स्यूं अर्थ रे
जाणी निर्भागण कै मुंह मोडियो ।।९।।
राजमहल छुट्‌या, बाप रो वियोग रे ।
लोह जंजीरा आज बांधिया ।।१०।।

बिछिया री छिम-छिम, उठती झणकार रे ।
बाजै चरणां में, खण-खण बेड़ियां ।।११।।
मैं बिकी बाजार बीच, दासी रे मोल रे ।
अकथ कहानी, म्हांरे दुःख री ।।१२।।
घायल री गति, घायल ही तो जाणे रे ।
फट्‌या बिवाई, परखे पीर ने ।।१३।।
उड़द रा बाकलां अे, भीलणी रा बोर रे ।
भगती रा आछा, भगवन् भूंगड़ा ।।१४।।
भगती रो क्रन्दन, पड्‌यो प्रभु कानां रे ।
चरण मोड्‌या, है पाछा वीर जी ।।१५।।
गज गति चलता अे, दुनियां रा नाथ रे ।
आया भगवान भगती बंधिया ।।१६।।
शीतल शशांक आंख्या, अमृत बरसे रे ।
घाव भरीज्यां प्रभु रै झांकता ।।१७।।
कर सम्पुट फैलायो महावीर जी ।
'उलट' भावां स्यूं दीना बाकला ।।१८।।
बरसै सोनैया, देवदुदुंभि बाजै रे ।
टूटे हथकड़िया, टूटे बेड़िया ।।१९।।
शादुलपुर शुभ, ''सेठिया'' सदन रे ।
गायो ''नागराज'' प्रभु-पारणो ।।२०।।
शती महावीर री पच्चीसवीं मनावां रे ।
पुष्प चढ़ावां पद इक्कीस अे ।।२१।।

* * *

मृगावती कैसे आवेसा

मृगावती कैसे आवे सा, ऐसी रात अंधेरी में २ ।।टेर ।।

पहला ऋषभनाथ, दूजा अजितनाथ,
तीजा संभवनाथ वांदूसा, ऐसी रात अंधेरी में ।।१।।

चांद, सूरज दोनों मूल पधार्‌या २
मृगावती भान भूल्यो सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।२।।

वीर प्रभु की आस्था विसारी २
गुरुणीसा उपालंभ देवे सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।३।।

अहो कायं काय संफासं,
आलोचना कर लेसा, ऐसी रात अंधेरी में ।।४।।

न बादल गरजे न बिजली चमके,
भुजंग कैसे दिख्यो सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।५।।

आप की कृपा गुरुणीसा की कृपा,
घनघाती कर्म खपाया सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।६।।

अशातना केवलियों की हुई,
शिष्या ने जाय खमाऊँ सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।७।।

बहुत-बहुत मन में पछताया,
गुरुणीसा केवल पाया सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।८।।

विनय आलोचना पाप नाशक ज्योत्स्ना,
जीवन में अपनाओ सा, ऐसी रात अंधेरी में ।।९

ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी

(तर्ज : कोयल बाई सिध चाल्या ...)

ए आबूजी गढ़ री रूखड़ी, ए जिणरो तो फेल्यो कपास,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१।।

ए ताणो तो तण्यो मेड़तो, ए फैल्यो गढ़ गुजरात,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।२।।

ए खाती का बेटा ने विनती, ए कांई थांरे चरखा रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।३।।

ए पिणहारी जी का बेटा ने विनती, ए कांई थारे पिणहार्‌यां रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।४।।

ए बंधाई का बेटा ने विनती, ए कांई थारे बंधाई रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।५।।

ए रंगरेजा रा बेटा ने विनती, ए कांई थारे रंगाई रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।६।।

ए बजाजी रा बेटा ने विनती, ए कांई थारे चुन्दड़ी रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।७।।

ए दर्जी का बेटा ने विनती, ए कांई थारे चुन्दड़ी सिलाई रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।८।।

ए सोनी रा बेटा ने विनती, ए कांई थारे जड़ाई रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।९।।

ए अल्ला जी पल्ला जी घूघरा, ए सवा लाख जड़ाई रो मोल,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१०।।

ए आय उतरी चंदन चौक में, सौदागर फिर-फिर जाय,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।११।।

ए कुणसा मौलावे ए चून्दड़ी, ए कुणसा खरचेला दाम,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१२।।

ए समुद्रविजय जी मौलावे चून्दड़ी, ए उग्रसेन जी खरचेला दाम,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१३।।

ए बीच में नेमीश्वर ले आया, ए रानी राजुल रे ओढ़ण जोग,
ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१४।।

ए पीयर राजुल निसरिया, ए प्रभु निसर्‌या,
ए चौपन दिनां रे आंतरे जाय ...ओढ़ो ए राजुल चुन्दड़ी ।।१५।।

* * *

दया है तो

सत्य भी है !
शील भी है !
दान भी है !
क्षमा भी है !
सेवा भी है !
सरलता भी है !

चौदह सपनां

दसवां स्वर्ग थकी चव्याजी, चौवीसवाँ जिनराय !
चौदह सुपनां देखिया जी, त्रिशला देवी माय ।।
जिनन्द माय दीठा हो सुपनां सार ।।टेर।।

पहले गयवर देखियाजी, सूंडा दंड प्रचंड ।

दूजे वृषभ देखियोजी, धोराधोरी संड ।।१।।

तीजो सिंह सुलक्षणो जी, मुख सूं करत बगास ।

चौथे लक्ष्मी देवता जी, कर रह्‌या लील विलास ।।२।।

पंचवरण फूलां तणीजी, मोटी देखी माल ।

छठे चन्द उजासियोजी, अमीय झरे त्रिकाल ।।३।।

दिनकर ऊगो तेजसुं जी, किरणा झाक झमाल ।
फरकंती देखी ध्वजाजी, ऊँची अति विशाल ।।४।।

कुंभ कलश रतना जड़्योजी, उदक भर्यो गलमाल ।

कमल फूलाँ को ढ़ाँकणो जी, नवमें स्वप्न रसाल ।।५।।

पद्‌म सरोवर जल भर्यो जी, कमला करी रे शोभाय ।

देव-देवी रंग में रमे जी, देख्यां आवे दाय ।।६।।

क्षीर समुद्र चारों दिशाजी, जेनो मीठो नीर ।

दूध जैसो पानी भर्‌यो जी, जेनो छेय न तीर ।।७।।

मोत्यां केरा झूमका जी, देख्या देव विमान ।

देव-देवी कौतुक करे जी, आवंता आसमान ।।८।।

रत्नां की राशि निरमली जी, देख्यो स्वप्नो सार ।

स्वप्नो देख्यो तेरमो जी, हिवड़े हर्ष अपार ।।९।।

ज्वाला देखी दीपती जी, अगन शिखा बहु तेज ।
इतने जाग्या पद्मणी जी, धर सपनां सूं हेज ।।१०।।

गज गति चाल्या मळकता जी, आया राजाजी रे पास ।
भद्रासन आसन दियो जी, राय पूछे हुल्लास ।।११।।

कहो राणीजी किम आवियाजी, कहो थांरा मनरी बात ।
चवदे स्वप्नां देखियाजी, जिणरो अर्थ करो स्वामीनाथ ।।१२।।

स्वप्ना सुणी राय हर्षिया जी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर तुम जनमसी जी, हम कुल नो आधार ।।१३।।

प्रभाते पंडित तेडियाजी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर चक्रवर्ती होवसी जी, तीन लोक आधार ।।१४।।

पंडितां ने बहु धन दियो जी, वस्त्र ने फूलमाल ।
गर्भमास पूरा थया जद, जनम्या पुण्यवंत बाल ।।१५।।

चौसठ इन्द्र आविया जी, छप्पन दिशाकुमार ।
अशुचि कर्म निवारने जी, गावे मंगलाचार ।।१६।।

प्रतिबिम्ब घर में धर्यो जी, माताजी ने विश्वास ।
शक्रेन्द्र लीधा हाथ में जी, करी पंच रूप प्रकाश ।।१७।।

मेरुशिखर न्हवराविया जी, तेहनो बहु विस्तार ।
इन्द्रादिक सुर नाचिया जी, नाची अप्सरा नार ।।१८।।

अट्ठाई महोत्सव सुर कियोजी, द्वीप नन्दीश्वर जाय ।
गुणगावे जिनराज का जी, हिवड़े हर्ष उमाय ।।१९।।

प्रभाते स्वप्नां जो भणे जी, भणता ही आनन्द पूर ।
रोग-शोक दूरा टले जी, अशुभ कर्म जावे दूर ।।२०।।

काया

(तर्ज : कांई रे मिजाज करे रसिया ...)

काया नगर में पाँच दरवाजा, पाँच दरवाजा ने, छठा मन राजा ।
कइयां दिशावर सूं आयो बिणजारो ।।१।।

मोक्ष मार्ग सूं आयो विणजारो, मूर्ख नहीं समझे धर्म री वाणी ।
कइयां दिशावर सूं आयो बिणजारो ।।२।।

काया नगर में तेलन राणी, तेल पीले बिना बलद ने घाणी ।
कइयां दिशावर सूं आयो बिणजारो ।।३।।

काया नगर में धोबण राणी, कपड़ा धोवे बिना साबुन ने पानी ।
कइयां दिशावर सूं आयो बिणजारो ।।४।।

काया नगर में डिंगी-डिंगी भित्तियां, भित्तियां चुणे बिना गारा ने पानी ।
कइयां दिशावर सूं आयो बिणजारो ।।५।।

काया नगर में अमृत कुंआं, अमृत कुंआं में ठण्डो जी पानी ।
कइयां दिशावर सूं आयो विणजारो ।।६।।

खुट गयो पानी विलखी पिणहार्यां, कायानगर में मंडियो है मेलो ।
कइयां दिशावर सूं आयो विणजारो ।।७।।

कुटुम्ब कबीलो भेलो जी डूबो, उड़ गयो हंसलो बिखर गयो मेलो ।
कइयां दिशावर सूं आयो विणजारो ।।८।।

दिशावर सूं आयो विणजारो, मोक्ष मार्ग सूं आयो विणजारो,
मूर्ख नहीं समझे धर्म री वाणी ।।९।।

ज्ञान वाटिका

भाव प्रतिक्रमण किसलिये ?

भावों की निर्मलता भवनाशिनी है । भाव प्रतिक्रमण आत्म-शुद्धि हेतु प्रातः उठकर एवं सायं सोने के पूर्व तन्मयता पूर्वक पढ़ना आवश्यक है । इसके पढ़ने में तो अल्प समय ही लगता है किन्तु परिणाम शुद्धि का यह अमोघ अस्त्र है, जिससे चित्त निर्मल एवं पवित्र बनता है । इस भाव प्रतिक्रमण के भाव यदि कंठस्थ हो जाय तो आत्मा को बहुत ही लाभ होगा, यह भाव यदि जीवन के अंतिम समय में याद आ जाय और आत्मा में शुभ परिणाम आ जाय तो जीव परभव में सुगति प्राप्त कर सकता है ।

भाव प्रतिक्रमण

१. अहो परम कृपालु गुरुदेव ! बीस तीर्थंकर प्रभुजी तथा अनंत सिद्ध प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अनाहारक (अर्थात् आहार-रहित) तो भी मेरी आत्मा ने सचित, अचित और मिश्र आहार करके, चिकने गाढ़े कर्म इसभव आश्री, परभव आश्री, अनंत भव आश्री उपार्जित किये हैं । जिस दिन आपके जैसा अनाहारक स्वरूप प्रगट करुंगा, वह दिन मेरा धन्य होगा ।

२. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अनारंभी (आरंभ और परिग्रह से रहित) तो भी मेरी आत्मा ने सरंभ, समारंभ और आरंभ किया, कराया व अनुमोदन कर चिकने गाढ़े कर्म इसभव आश्री, परभव आश्री, अनंतभव आश्री उपार्जित किये हैं । ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार कर आप जैसा अनारंभी स्वरुप प्रगट करने की मुझे भव-भव में शक्ति दो,

जिस दिन आप जैसा अनारंभी स्वरूप प्रगट करुंगा । वह दिन मेरा धन्य होगा ।

३. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अकषायी (क्रोध-रहित) तो भी मेरी आत्मा ने विभाव दशा में आकर क्रोध-कषाय, मान-कषाय, माया-कषाय और लोभ-कषाय का सेवन कर राग-द्वेष के द्वारा चिकने गाढ़े कर्म इस भव आश्री, परभव आश्री, अनंत भव आश्री उपार्जित किये हैं, जिस दिन आप जैसा निश्चय ही क्षमा का गुण प्रगट होगा, वह दिन मेरा धन्य होगा ।

४. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अहिंसक तो भी मेरी आत्मा ने त्रस जीव (बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरेंद्रिय, पंचेंद्रिय) और स्थावर जीव का (पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, और वनस्पति) मेरे शरीर के पोषण के लिये, मेरी आत्मा ने एकेंद्रिय से पंचेंद्रिय तक के भव में, जहाँ जहाँ जन्म-मरण किया, वहाँ सभी जीवों का हनन किया है, ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार, अनंत भव में, किसी भी जीव की दया नहीं पाली, आपके जैसा अहिंसक स्वरूप प्रगट होगा, वह दिन मेरा धन्य होगा ।

५. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अभाषक (मौन) तो भी मेरी आत्मा ने कर्कशकारी (कंकर के प्रहार जैसी) कठोरकारी (पत्थर के प्रहार जैसी) छेदकारी (तलवार के प्रहार जैसी) भेदकारी (भाले के प्रहार जैसी) वैरकारी, विरोधकारी, निश्चयकारी, सावद्यकारी और पर को पीड़ाकारी भाषा बोली । इस

भव आश्री, परभव आश्री, अनंत भव आश्री चिकने गाढ़े कर्म उपार्जित किये हैं । ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार-धिक्कार, आप जैसा अभाषक स्वरूप प्रगट होगा- वह दिन मेरा धन्य होगा । सत्य व व्यवहार भाषा बोलने की मुझे शक्ति दो ।

६. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अचौर्य (चोरी रहित) तो भी मेरी आत्मा ने जीव अदत्त, स्वामी अदत्त, तीर्थंकर अदत्त और गुरु अदत्त की- चोरी की, कराई, अनुमोदना करके चिकने गाढ़े कर्म उपार्जित किये, ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार-धिक्कार । आपके जैसा अचौर्य स्वरूप, प्रगट करने की मुझे शक्ति दो ।

७. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अवेदी (वेद रहति) तो भी मेरी आत्मा ने पुरुष वेद में, स्त्री वेद में, नपुंसक वेद में, कुदृष्टि से पोषक से खुराक से और भाषा से अब्रह्म का सेवन मन-वचन-काया के योग से किया हो, कराया हो, अनुमोदन किया हो, उससे चिकने गाढ़े कर्म उपार्जित किये । ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार-धिक्कार । आपके जैसा अवेदी, निर्विकारी स्वरूप प्रगट करने की मुझे भव-भव में शक्ति दो ! मेरी आत्मा का अवेदी स्वरूप प्रगट होगा, वह दिन मेरा धन्य होगा ।

८. बीस तीर्थंकर प्रभुजी मेरी आत्मा का स्वरूप है- अपरिग्रही । तो भी आत्मा ने सचित, अचित और मिश्र परिग्रह इकट्ठा किया, कराया, अनुमोदन किया ऐसी मेरी दुष्ट आत्मा को करोड़ बार धिक्कार-धिक्कार । नौ प्रकार का बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार का आभ्यंतर परिग्रह छोड़ने की मुझे शक्ति दो ।

९. अठारह प्रकार के पाप, सात प्रकार के कुव्यसन, पच्चीस प्रकार का मिथ्यात्व, चौदह प्रकार के समूर्च्छिम जीव तथा आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान संबंधी किसी प्रकार का पाप दोष लगा हो तो अरिहंत सिद्ध केवली, गुरुदेव और आत्मा की साक्षी से मिच्छामि दुक्कडं ।

१०. चौरासी लाख जीव योनि के जीवों को हालते-चालते, ऊठते-बैठते, जानते-अजानते कोई जीव को छेदा हो, भेदा हो, परिताप, किलामणा उपजाई हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

११. मैं जगत् के सभी जीवों को खमाता हूँ, जगत् के सभी जीव मेरे दोष माफ करें, सभी जीवों के साथ मेरी मित्रता है, किसी जीव के साथ मेरा वैर नहीं हैं ।

१२. जगत् के सभी जीव सुखी होवे, जगत् के सभी जीव निरोगी बने, जगत् की सभी आत्माओं का कल्याण हो, जगत् के सभी जीव दुःखों से मुक्त बने, सभी जीवों को शासन रसिक कब बनाऊँ, ऐसी भावना मेरे मन में उमड़ कर आवे ।

अहो परम पालु गुरुदेव ! इस भव-परभव, भवो भव के लिये आपका शरणा अंगीकार करते हैं, आपके शरण में आने से, आपकी स्तुति भक्ति और गुण-कीर्तन करने से, हमारा उपयोग आपके गुणों में प्रवर्तन करने से आप जैसे उज्ज्वल, निर्मल, निर्दोष और निर्विकार बन सकेंगे। हमारे मन, वचन, काया से हमारी अनादि काल की कुबुद्धि, कुदेव तथा कुसंस्कार सभी नष्ट होंगे तथा आपके जैसी सुबुद्धि, सुदेव एवं सुसंस्कार प्रगट होंगे और अनादिकाल के जन्म, जरा, मरण, वेदना, महावेदना, असह्य वेदना, भयंकर

वेदना, कर्कश वेदना, प्रतिकूल संयोग, दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यान्तराय, सभी गाढ़े चिकने कर्म प्रकृति के बंधनों का क्षय होगा ।

हमें पूरा विश्वास है कि जिनके चरणों में हम समर्पित होंगे, वैसे ही हम बनेंगे, अरिहंतों का शरण लिया तो अरिहंत बन सकेंगे, सिद्ध प्रभु का शरण लिया तो सिद्ध प्रभु जैसे बनेंगे । केवली भगवान की शरण में गये तो केवली भगवान जैसे बनेंगे । साधु-संतों की शरण में जाने से साधु संत जैसे बनेंगे। अर्थात् आपके जैसी चमकती-दमकती ज्योत प्रगट करने के लिये परम ज्ञान, परम दर्शन, परम चारित्र, परम सुख, परम शांति, परम आनंद प्राप्ति के लिये । सकल विश्व में नारकीय, तिर्यंच और देवताओं में से मैंने मेरे पूर्व भवों में तथा वर्तमान जीवन में आज तक किसी भी जीव को हणाया हो, परिताप उपजाया हो या कोई भी प्रकार का दुख जानते-अजानते दिया हो और किसी भी जीव के साथ मन-योग, वचन-योग, काय-योग से वैर-विरोध हुआ हो, उन सबके साथ मैं क्षमापना करता हूँ ।

मेरा किसी भी जीव के साथ वैर-विरोध नहीं और विश्व के सर्व जीवों के साथ मेरा संपूर्ण मैत्री भाव है । इसी भरत क्षेत्र में हुए श्री ऋषभदेवजी वगैरह वर्तमान अवसर्पिणी दरम्यान के तीर्थंकर भगवंतों को मैं त्रिकरण योग से वंदन करता हूँ । इस उपरान्त बाह्य आभ्यन्तर तप करने के लिए अनुकूलता होते हुए भी उभय प्रकार के तप की आराधना करने से मैं वंचित रहा । मैं अपनी प्रमाद प्रवृत्ति का मिच्छा मि दुक्कडं देता हूँ ।

श्रावक के इक्कीस गुण

१. अक्षुद्र (गंभीर स्वभावी) होवे ।
२. रूपवान् (सुन्दर तेजस्वी और सशक्त शरीर वाला) होवे ।
३. प्रकृति-सौम्य (शांत-दांत-क्षमावान और शीतल-स्वभावी) होवे ।
४. लोकप्रिय (इहलोक-परलोक के विरुद्ध कार्य न करने वाला) होवे ।
५. अक्रूर (क्रूरता रहित सरल एवं गुणग्राही) होवे ।
६. भीरु (लोकापवाद पाप-कर्म एवं अनीति से डरने वाला) होवे ।
७. अशठ (चतुर एवं विवेकी) होवे ।
८. सुदक्षिण (विचक्षण एवं अवसर का ज्ञाता) होवे ।
९. लज्जालु (कुकर्मों के प्रति लज्जाशील) होवे ।
१०. दयालु (परोपकारी एवं सभी जीवों के प्रति दयाशील) होवे ।
११. मध्यस्थ (अनुकूलता-प्रतिकूलता में समभाव रखने वाला) होवे ।
१२. सुदृष्टि (पवित्र दृष्टि वाला) होवे ।
१३. गुणानुरागी (गुणों का प्रेमी एवं प्रशंसक) होवे ।
१४. सुपक्षयुक्त (न्याय और न्यायी का पक्ष लेने वाला) होवे ।
१५. सुदीर्घ दृष्टि (दूरगामी दृष्टि वाला) होवे ।
१६. विशेषज्ञ (जीवादि तत्त्वों का एवं हिताहित का ज्ञाता) होवे ।
१७. वृद्धपनुग (गुणी-वृद्ध वयोवृद्ध का आज्ञापालक) होवे ।
१८. विनीत (गुणीजनों-गुरुजनों के प्रति विनम्र) होवे ।

१९. कृतज्ञ (किये हुए उपकार को नहीं भूलने वाला) होवे ।
२०. परहितकर्ता (मन-वचन-काय से दूसरों का हित करने वाला) होवे ।
२१. लब्धलक्ष्य (लक्ष्य-प्राप्ति के लिए अधिकाधिक शास्त्रों का ज्ञान करने वाला) होवे ।

श्रावक के प्रकार

१. माता-पिता के समान	१. आदर्श के समान
२. भाई के समान	२. पताका के समान
३. मित्र के समान	३. कीले के समान
४. सौत के समान	४. तीखे काँटे के समान (ठाणांग-४)

श्रावक का वचन व्यवहार

१. श्रावक थोड़ा बोले ।
२. श्रावक आवश्यकता होने पर बोले ।
३. श्रावक मीठा बोले ।
४. श्रावक चतुराई-पूर्वक अवसर के अनुसार बोले ।
५. श्रावक अहंकार-रहित बोले ।
६. श्रावक मर्मकारी व आघात-जनक वचन न बोले ।
७. श्रावक सूत्र-सिद्धान्त के विपरीत न बोले ।
८. श्रावक सभी जीवों के लिए साताकारी, हितकारी वचन बोले ।

❋ ❋ ❋

श्रावक की व्यावहारिक पहचान

१. बिना छाना पानी न पिये ।
२. खुले मुँह बात न करे ।
३. व्यसन का त्यागी हो ।
४. प्रदर्शन से दूर रहे ।
५. रात्रि भोजन का त्यागी हो ।
६. जमीकंद का त्यागी हो ।
७. सुपात्रदान देने में उत्साही हो ।
८. जीवन प्रामाणिक हो ।
९. व्यवहार में क्रूरता न हो ।

श्रावक के इक्कीस लक्षण

१. अल्प इच्छा (इच्छा-तृष्णा को कम करने) वाला होवे ।
२. अल्प-आरंभी (हिंसाकारी प्रवृत्तियों को कम करने वाला) होवे ।
३. अल्प-परिग्रही (परिग्रह को कम करने वाला) होवे ।
४. सुशील (आचार-विचार की शुद्धता रखने वाला शीलवान) होवे ।
५. सुव्रती (ग्रहण किये हुए व्रतों का शुद्धता पूर्वक पालन करने वाला) होवे ।
६. धर्मनिष्ठ (धर्म-कार्यों में निष्ठा रखने वाला) होवे ।
७. धर्मवृत्ति (मन-वचन'काय से धर्म-मार्ग में प्रवृत्ति करने वाला) होवे ।
८. कल्प-उग्रविहारी (उपसर्ग आने पर भी मर्यादा के विरुद्ध कार्य

न करने वाला) होवे ।

९. महासंवेग-विहारी (निवृत्ति-मार्ग में लीन रहने वाला) होवे ।

१०. उदासीन (संसार की प्रवृत्तियों के प्रति उदासीनता रखने वाला) होवे ।

११. वैराग्यवान् (आरंभ-परिग्रह को छोड़ने की इच्छा रखने वाला) होवे ।

१२. एकांत आर्य (निष्कपटी सरल-स्वभावी) होवे ।

१३. सम्यग्मार्गी (सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र के मार्ग पर चलने वाला) होवे ।

१४. सुसाधु (आत्म-साधना करने वाला) होवे ।

१५. सुपात्र (सद्गुण एवं सम्यग्ज्ञान को सुरक्षित रखने वाला) होवे ।

१६. उत्तम (सद्गुणों से युक्त एवं सद्गुणानुरागी) होवे ।

१७. क्रियावादी (शुद्ध-क्रिया करने वाला) होवे ।

१८. आस्तिक (देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा-निष्ठ) होवे ।

१९. आराधक (जिन-आज्ञा के अनुसार धर्म की आारधना करने वाला) होवे ।

२०. प्रभावक (जिन-शासन की प्रभावना करने वाला) होवे ।

२१. अरिहंत-शिष्य (अरिहंत भगवान् के प्रति सश्रद्ध भक्ति रखने वाला एवं उनके बताए मार्ग पर चनने वाला) होवे ।

❋ ❋ ❋

इनकी मदद दिल खोल कर करो

निर्धन की,असमर्थ की,रोगी की, अनाथ की, विपत्तिग्रस्त की ।

चन्द्रगुप्त राजा के 16 स्वप्नों का फल

पांचवें आरे के प्रारंभ में चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र नगर का राजा था । वह श्रमणोपासक था । जीव-अजीव आदि तत्त्वों का जानकार था । उसकी रग-रग में धर्म व्याप्त था ।

एक बार वह पाक्षिक पौषध ग्रहण करके धर्म जागरणा कर रहा था । रात्रि के तीसरे प्रहर में जब कुछ जग रहा था और कुछ सो रहा था, तब उसने सोलह स्वप्न देखें ।

उन्हीं दिनों ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए चौदह पूर्वधर श्री भद्रबाहु स्वामी पांच सौ शिष्यों के साथ पाटलीपुत्र पधारे । चन्द्रगुप्त उन्हें वन्दना करने गया और विनय पूर्वक स्वप्नों का फल पूछा । भद्रबाहु स्वामी ने उन सभी स्वप्नों का सम्यक् अर्थ बताते हुए पांचवें आरे में होने वाले विकट भविष्य का कथन निम्न प्रकार से किया-

पहले स्वप्न में राजा चन्द्रगुप्त ने कल्पवृक्ष की शाखा को टूटी हुई देखा । भद्रबाहु स्वामी ने उसका फल बताया- "भविष्य में कोई संयम ग्रहण नहीं करेगा ।"

दूसरे स्वप्न में सूर्य को अकाल में अस्त होते हुए देखा । फल- भविष्य में कोई केवलज्ञानी न होगा अर्थात् केवलज्ञान का विच्छेद हो जाएगा ।

तीसरे स्वप्न में चन्द्रमा को छिद्र सहित देखा । फल- दया धर्म अनेक मार्गों वाला हो जाएगा अर्थात् एक आचार्य की परम्परा

को छोड़कर भिन्न-भिन्न आचार्य बन कर अपनी-अपनी परम्परा चलायेंगे । अनेक प्रकार की सामाचारी प्रचलित हो जाएगी ।

चौथे स्वप्न में भयंकर अट्टहास तथा कौतूहल करते हुए और नाचते हुए भूतों को देखा । फल- कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की मान्यता होगी । आगम और परम्परा से विरूद्ध चलने वाले, स्वच्छंदाचारी, अपने आप दीक्षित होने वाले, आकाश से गिरे हुए की तरह बिना आधार के सूत्र विरूद्ध प्ररूपणा करने वाले, बिना आचार के द्रव्य लिंग धारण करने वाले, इधर-उधर से सूत्र के कुछ पदों को सुनकर उनके वास्तवकि अर्थ को न जानने वाले, तप के चोर, वचन के चोर, सूत्र के चोर, अर्थ के चोर अर्थात् इन सब में दोष लगाने वाले, ढ़ोंगी तथा वेशधारी साधु बहुत माने जावेंगे ।

पांचवें स्वप्न में बारह फणों वाले काले सांप को देखा । फल- बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

छठे स्वप्न में आए हुए विमान को वापिस लौटता देखा । फल- जंघाचरण लब्धि को धारण करने वाले साधु भारत वर्ष में नहीं होंगे अर्थात् जंघाचरण विद्या विच्छिन्न हो जाएगी ।

सातवें स्वप्न में कमल को कचरे के ढ़ेर/उकरड़े पर उगे हुए देखा । फल- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्णों में से वैश्य के पास धर्म रहेगा । सभी बनिए जुदे-जुदे मत को पकड़ कर खींचातानी करेंगे और बहुत से विराधक हो जायेंगे । सूत्रों में रूचि वाले थोड़े रहेंगे । सौतों की तरह एक दूसरे से लड़ने वाले होंगे । आचार्य, उपाध्याय तथा चतुर्विध संघ के प्रत्यनीक, विपरीतगामी,

उनका अवर्णवाद करने वाले, अपयश फैलाने वाले तथा विनय रहित होंगे । अपनी प्रशंसा करने वाले, बड़ों की बात न मानने वाले होंगे । चौपाई, ढाल, कथा, स्वप्न आदि में रूचि ज्यादा रहेगी ।

आठवें स्वप्न में खद्योत आगिये के प्रकाश को देखा । फल- द्रव्यलिंगी साधु धर्म के सच्चे मार्ग को छोड़कर छोटी-छोटी बाह्य क्रियाओं द्वारा आडम्बर रचेंगे अर्थात् बाह्य क्रियाओं पर अधिक ध्यान देंगे और क्षमा अहिंसा आदि धर्म की मुख्य बातों में अंधेरा रहेगा । असली साधुओं का सत्कार कम हो जाएगा । ऊपर का दिखावा करने वाले अधिक सम्मान प्राप्त करेंगे ।

नवमें स्वप्न में तीनों दिशाओं में सूखे हुए तथा दक्षिण में थोड़े पानी वाले समुद्र को देखा । फल- दक्षिण दिशा में थोड़ा धर्म रहेगा । बाकी तीनों दिशाओं में उसका विच्छेद हो जाएगा । जहाँ-जहाँ तीर्थंकर के पांचों कल्याण हुए हैं, वहाँ-वहाँ धर्म की हानि होगी ।

दसवें स्वप्न में सोने की थाली में कुत्ते को खीर खाते हुए देखा । फल- उच्च कुल की लक्ष्मी नीच कुल में चली जाएगी । चोर, चुगलखोर और मिथ्यात्वी अधिक होंगे, उन्हीं के पास लक्ष्मी रहेगी । कई उत्तम पुरुष उत्तम मार्ग को छोड़कर नीच मार्ग में चलने लगेंगे ।

ग्यारहवें स्वप्न में बन्दर को हाथी पर बैठे देखा । फल- राजद्वार तथा दूसरे स्थानों में दुर्जन तथा नीच पुरूष ऊँचे स्थान प्राप्त करेंगे । उन्हीं को प्रतिष्ठा मिलेगी । सज्जन और भले लोगों

का मान थोड़ा होगा । अशुद्ध वंश वाले राजाओं के सेवक होंगे । सुधर्मास्वामी से लेकर उत्तरोत्तर पाट पर होने वाले एक आचार्य की परम्परा टूट जाएगी ।

बारहवें स्वप्न में समुद्र को मर्यादा छोड़ते हुए देखा । फल- राजा लोग विश्वासघाती होंगे अर्थात् वचन देकर उसका पालन नहीं करेंगे । कई साधु वेशधारी पांच महाव्रत छोड़कर झूठ बोलेंगे । झूठ-कपट करने में चतुर होंगे । उत्तम आचार के बहाने विश्वासघात करेंगे ।

तेरहवें स्वप्न में दो बछड़ों को बड़े रथ में जुते हुए देखा । फल- बालक अधिक संख्या में वैराग्य प्राप्त करके चारित्र ग्रहण करेंगे । वृद्धों में प्रमाद आ जाएगा ।

चौदहवें स्वप्न में महामूल्य रत्न को तेजहीन देखा । फल- भारत वर्ष के साधुओ में चारित्र तेज घट जाएगा । वे कलह करने वाले, झगडालू, अविनीत, ईर्ष्यालू, संयम में दुख समझने वाले, आपस में प्रेमभाव थोड़ा रखने वाले, लिंग, प्रवचन और साधर्मिकों का अवगुण निकालने वाले, दूसरे की निन्दा तथा अपनी प्रशंसा करने वाले, संवेगधारी, श्रुतधारी तथा सच्चे धर्म की प्ररूपक साधुओं से ईर्ष्या करने वाले अधिक हो जायेंगे ।

पन्द्रहवें स्वप्न में राजकुमार को बैल की पीठ पर चढ़े हुए देखा । फल- क्षत्रिय राजा जिन धर्म को छोड़कर मिथ्यात्व स्वीकार कर लेंगे, न्यायी पुरुष को नहीं मानेंगे, नीच की बातें अच्छी लगेंगी, कुबुद्धि को अधिक मानेंगे तथा दुर्जनों का विश्वास करेंगे ।

सोलहवें स्वप्न में दो काले हाथियों को युद्ध करते हुए देखा । फल- अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा अकालवृष्टि अधिक होगी । पुत्र और शिष्य आज्ञा में नहीं रहेंगे । देव, गुरु तथा माता-पिता की सेवा नहीं करेंगे ।

भद्रबाहु स्वामी से भविष्य सूचक सोलह स्वप्नों के भाव सुनकर चन्द्रगुप्त राजा जैन धर्म में स्थिर बने ।

* * *

सदा बचो

गंदे साहित्य से !
गंदे विचारों से !
नशे-बाजी से !
फैशन की छाया से !
गंदे नाच-गानों से !
दुर्जनों के संग से !
निंदा बुराई से !
लड़ाई झगड़े से !

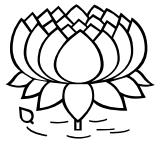

छोड़ो

जूए का खेलना !
माँस का खाना !
शराब का पीना !
वेश्या का संग !
शिकार का खेलना !
चोरी का करना !
पर-स्त्री का सेवन !

सामायिक क्या है ?

सामायिक समता और सभ्यता की साधना है ।
सामायिक आवश्यक क्रिया का प्रथम चरण है ।
सामायिक सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की चाबी है ।
सामायिक जैन दर्शन का प्रारंभ है ।
सामायिक आत्मधर्म का दर्शन है ।
सामायिक बच्चों का संस्कार है ।
सामायिक युवकों का पुरुषार्थ है ।
सामायिक नारी का शृंगार है ।
सामायिक मानव का आदर्श है ।
सामायिक आत्मा का स्वास्थ्य है ।
सामायिक आत्मा का औषध है ।
सामायिक पवित्रता का प्रतीक है ।
सामयिक मुक्ति का महामार्ग है ।
सामायिक निजानंद की मस्ती है ।

* * *

कार्य-सिध्दि के लिए

निरन्तर प्रयत्न करो !
साहस से काम लो !
धैर्य से काम लो !
शक्ति का उपयोग करो !
बड़ों की सलाह लो !
धर्म की राह लो !

सामायिक से लाभ

सामायिक से व्यसन मुक्ति होती है ।
सामायिक से चिंता चली जाती है ।
सामायिक से वैर समाप्त होता है ।
सामायिक से घर नंदनवन बनता है ।
सामायिक से प्रेम प्रकट होता है ।
सामायिक से साधुता आती है ।
सामायिक से सच्चा बल मिलता है ।
सामायिक से कार्य में सफलता मिलती है ।
सामायिक से आत्मशुद्धि होती है ।
सामायिक से पारिवारिक शांति मिलती है ।
सामायिक से बुद्धि में वृद्धि होती है ।
सामायिक से सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।
सामायिक से दुश्मन भी मित्र बन जाता है ।
सामायिक से सर्वत्र सम्मान मिलता है ।
सामायिक से रोग नष्ट होता है ।
सामायिक से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।
सामायिक से समभाव की प्राप्ति होती है ।
समायिक से जीव-रक्षा की भावना बढ़ती है ।
सामायिक से जिनवाणी श्रवण, चिंतन, मनन का अवसर मिलता है ।
सामायिक से अशुभ कर्म नष्ट, पुण्य कर्म का उपार्जन होता है ।
सामायिक से साधु जीवन की शिक्षा मिलती है ।
सामायिक से अठारह पाप छूटते हैं ।
सामायिक से इंद्रिय संयम होता है ।

तप का महत्व

ज्ञानार्जन के साथ-साथ तपस्या भी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है । तप से आत्मा का शुद्धिकरण होता है, परन्तु तप का आचरण करना तलवार की धार पर चलने के समान दुष्कर है ।

जो कुछ मानव प्राप्त करने में असमर्थ है, उन सबको मानव तप द्वारा प्राप्त कर सकता है । तप अपने बाह्य रूप में लौकिकता का पूरक है । सुख-समृद्धियों को देने वाला है और आन्तरिक रूप में मन और इन्द्रियों की समस्त उच्छृंखलताओं को समाप्त कर परमात्म तत्व की प्राप्ति का अमोघ साधन है । जैन संस्कृति तप के द्वारा सांसारिक कामनाओं की पूर्ति को तुच्छ मानती है । तप द्वारा साधक को सिद्धि अथवा लब्धि-प्राप्ति की कामना नहीं करनी चाहिये ।

फिर भी जहाँ केसर पड़ी होगी, वहाँ आसपास के वातावरण में रहने वाला सुगंध को चाहे या ना चाहे, सुगन्ध उसे मिलेगी ही । इस प्रकार जब आत्म-साधना के लक्ष्य से तप किया जायेगा तो आत्मा के आवास रूप शरीर के चारों ओर सुख-समृद्धियां स्वतः ही एकत्रित हुए बिना नहीं रह सकती ।

करोड़ों जन्मों के संचित कर्मों को क्षय करने का एकमात्र अस्त्र 'तप' ही है । तप से ही आत्मा उज्ज्वल होती है ।

❋ ❋ ❋

तप करने का फल

नरक में जितने काल दुःख भोगने से अशुभ कर्म नष्ट होते हैं, उतने कर्म नीचे लिखे तपों की शुद्ध आराधना से क्षीण होते हैं ।

१.	नवकारसी	सौ वर्ष
२.	पोरसी	एक हजार वर्ष
३.	डेढ़ पोरसी	दस हजार वर्ष
४.	पुरिमड्ढ	एक लाख वर्ष
५.	एकासना	दस लाख वर्ष
६.	नीवी	एक करोड़ वर्ष
७.	एकलठाणा	दस करोड़ वर्ष
८.	एकलदत्ती	सौ करोड़ वर्ष
९.	आयंबिल	एक हजार करोड़ वर्ष
१०.	उपवास	दस हजार करोड़ वर्ष
११.	छट्ठम (बेला)	एक लाख करोड़ वर्ष
१२.	अट्ठम (तेला)	दस लाख करोड़ वर्ष

एक अट्ठम के बाद हर एक उपवास की वृद्धि से दस गुने वर्षों के कर्म क्षय का भाव समझ लेना चाहिये ।

पांच आदतें जरूर छोड़नी चाहिए

१-अपनली बड़ाई

२-दूसरे की निन्दा

३-चिल्लाकर बोलना

४-दूसरे की बात काटना

५- बिना प्रयोजन हंसते रहना

जैनों के विशेष नियम

१. सब जीवों में मैत्री भाव रखें ।
२. झूठ न बोलें ।
३. दगाबाजी न करें ।
४. किसी की बगैर दी हुई वस्तु ग्रहण न करें ।
५. शीलवान हो यानि अपने विचार, अपने आचार एवं व्रत पर दृढ़ रहें ।
६. संसार को असार समझें ।
७. नैतिक, व्यावहारिक, धार्मिक और राष्ट्रीय कार्यों में सबसे प्रथम भाग लें ।
८. जाति, देश, धर्म व संघ की सेवा में अपना बलिदान तक करने को तत्पर रहें ।
९. अनंतकाय, अभक्ष्य और अशुद्ध भोजन, वस्त्र, मकान, आदि काम में न लेवें ।
१०. बगैर छाना हुआ पानी न पीयें और न ही उससे शरीर, वस्त्र आदि साफ करें यानि हर एक कार्य में छना हुआ पानी ही काम में ले ।
११. रात्रि भोजन न करें ।
१२. भांग, गांजा, चरस, चण्डू, अफीम, तम्बाकू आदि नशीली चीजों का सेवन न करें ।
१३. घर पर जल, औषधी बांटने के पत्थर, घट्टी, चूल्हा, भोजन बिलोवने और सोने की जगह चन्द्रवे रखें ।

१४. घी, तेल, छाछ आदि पीने की चीजें छाने बगैर काम में न लेवें ।
१५. सब जीवों को आत्मवत् जानकर उसकी सेवा में तत्पर रहें ।
१६. कागज, बहीखाता आदि के शिरों पर अर्हम् शब्द लिखें ।
१७. प्रातःकाल या हर समय अपने मिलने वालों से जय जिनेन्द्र शब्द से व्यवहार करें ।
१८. मांसाहारी तथा सरागी देवों को न ध्यावें, न नमस्कार करें ।
१९. किसी भी धार्मिक पुस्तक को खुले मुंह से न पढ़ें और मुनि महात्माओं से खुले मुंह न बोलें ।
२०. अष्टमी, चतुदर्शी आदि पर्व तिथियों में अपना व्यावहारिक कार्य बंद रखे और धर्माराधना करें ।
२१. प्रातःकाल, सायंकाल आदि में जिन-स्मरण जितना समय मिले उतना समय अवश्य करें ।
२२. धार्मिक और सामाजिक कार्यों में धन का सदुपयोग करें ।
२३. आसन, मुखवस्त्रिका, माला और पुस्तकें हिफाजत व शुद्धता से रखें ।

* * *

स्त्रियों के पांच सामान्य कर्त्तव्य

बिना देखे चूल्हा जलाना नहीं !
छाने बिना पानी काम में लेना नहीं !
घर वालों को भोजन कराए बिना करना नहीं !
दूध दही आदि के भांड खुला रखना नहीं !
कलह कोलाहल में भाग लेना नहीं !

आजकल के हम जैन

लेडिज एण्ड जेण्टल मैन, आजकल के हम जैन ।
पहनते वेस्टर्न शर्ट और पैंट, उन पर लगाते इम्पोर्टेड सेण्ट ।
टी. वी. विडियो चलता दिन रैन, आजकल के हम जैन ।

कर लेते हम कोई भी ट्रैंड, शराब चमड़े या अण्डे का ब्रेड ।
फैशन परैड का मिलता है ट्रैंड, नहीं जा सकते मंदिर भी विदाउट फ्रैन्ड,
फिल्मी सितारों के हम सब फैन, आजकल के हम जैन ।

होटल क्लब सिनेमा की देन, नहीं है नान-वेज पर भी बेन ।
कानों में कुण्डल गले में चैन, आवारा घूमते दिखते यंग मेन ।
छीनकर माता-पिता का चैन, कहते आजकल के हम जैन ।

लाखों की दौलत पर नहीं मन का चैन, कैसे हो सकते हैं हम असली जैन ।
गुरु से जाकर जब पाओगे ज्ञान, तभी हो सकता है अपना कल्याण ।
जैन धर्म को बनाकर अपना फैन, फिर कहो आज के हम जैन ।

❋ ❋ ❋

पांच कारण से रोग होते हैं

अधिक खाने से
अधिक शयन करने से
अति विषय सेवन से
एकासन- अधिक देर बैठने से
मलमूत्र आदि के निरोध से

जय घोष

जब तक सूरज चाँद है	-	जैन धर्म की शान है !
हम सब की एक आवाज	-	जगमग चमके जैन समाज !
घर-घर से आई पुकार	-	जैन धर्म की जय जयकार !
गली-गली से आई पुकार	-	जैन धर्म की जय जयकार !
भगवान महावीर का अमर संदेश	-	जियो और जीने दो !
लगता कौन जगत को आला	-	महावीर तेरा नाम निराला !
सत्य अहिंसा प्यारा है	-	यही हमारा नारा है !
त्रिशला नन्दनवीर की	-	जय बोलो महावीर की !
जैन जगत के कौन सितारे	-	महावीर प्रभु हम सबको प्यारे
जब तक सूरज चाँद रहेगा	-	जिनशासन का नाम रहेगा !
महावीर प्रभु ने क्या किया	-	अहिंसा का संदेश दिया !
प्रभुजी हमारे तारणहार	-	जैन शासन का है शृंगार !
जैन धर्म की शान है	-	महावीर हमारी जान है !
सब जीवों से प्यार करो	-	अहिंसा का प्रचार करो !
दो और दो चार है	-	महावीर की जय जयकार है
एक रुपया में सौ पैसा	-	महावीर का धर्म अहिंसा !
महावीर पर हमको नाज है	-	जैन जगत का वह ताज है!
महावीर के सिपाही बनेंगे	-	तूफानों से नहीं डरेंगे !
प्रभुजी हमारा अन्तर्नाद	-	हमको देना अशीर्वाद !
तपस्वी	-	अमर रहो !
घर-घर मंगलाचार है	-	तपस्वी की जय-जयकार है!

1, 2, 3, 4	- जैन धर्म की जय जयकार !
5, 6, 7, 8	- जैन धर्म की ठाट बाट !
9, 10, 11, 12	- जैन धर्म का बजे नगारा !
13, 14, 15, 16	- जैन धर्म का लगा है मेला !
17, 18, 19, 20	- जैन धर्म के बीसों बीस !
21, 22, 23, 24	- जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस
वन्दे	- वीरम्
जैनियों बोलो जोर से	- जैनम् जयति शासनम् !
छोड़ दो छोड़ दो	- जीव हिंसा छोड़ दो !
श्रावक संघ करे पुकार	- महावीर स्वामी की जयजयकार
एक धक्का और दो	- रात्रि भोजन छोड़ दो !
चार चवन्नी चाँदी की	- सारी दुनियां महावीर की !
माता-पिता को करो प्रणाम	- जग में पाओ ऊँचा नाम !
हाय हेलो छोड़िए	- जय जिनेन्द्र बोलिये !
आप कर रहे है प्रवास	- हम को कर चले उदास !
जाते सुनते जाना	- लौट के वापस जल्दी आना
खीर पूरी खाते जाना	- म.सा. हमको भूल न जाना!
गुरुवर सा आए है	- नई रोशनी लाए है !
चमकते हुए सितारे क्या कहते हैं	- महावीर स्वामी सुपर स्टार !

दिलों दिमाग में लाओ जोश, सब भाई-बहनों करो जय घोष,
उत्साह लाओ हर्ष छायेगा, और मिलेगा मन को संतोष ।

प्रत्येक कार्य विवेक पूर्वक करें ।

ए, बी, सी, डी, बुध्दि बहुत है बढ़ी

ए, बी, सी, डी, - बुध्दि बहुत है बढ़ी ।
विनय के भावों की, पुस्तक कितनी है पढ़ी ।।

ई. एफ. जी - ज्यादा मत पीवो टी ।
शक्ति भी घटती है और आदत भी खोटी ।।

एच. आई जे - अब सुस्ती छोड़ दे ।
ज्ञान से अज्ञान की जंजीर तोड़ दे ।।

के, एल, एम - मत करो तुम अहम् ।
अहम् से बढ़ता है केवल आपस में वहम् ।।

एन. ओ. पी - तू जाग रे अभी ।
सोने वाला खोता है, कुछ पाता न कभी ।

क्यूं, आर एस - क्यों करते हो व्यर्थ में बहस ।
धीरज से पहचान ले, तू सत्य को सहर्ष ।।

टी, यू, वी - तू तो अच्छा जीवन जी ।
सच्चाई के पथ पर चलकर देख तो सही ।।

डब्ल्यू,एक्स,वाई,जेड- समझलो असली अपनी ग्रेड ।
लाभ या नुकसान में, चलता है जीवन ट्रेड ।।

* * *

माता पिता, गुरु, अधिकारी, मूर्ख तथा अपने से सबल या निर्बल के साथ वाद-विवाद नहीं करना चाहिये ।

क, ख, ग, घ, ङ - मत करो झगड़ा

क, ख, ग, घ, ड़ा - मत करो झगड़ा ।
झगड़ा करने वाला- कोई होता न बड़ा ।।१।।

च, छ, ज, झ, ञा - मत करो बतियां ।
ज्ञान ध्यान सीखो बच्चो, सुधरे मतियां ।।२।।

ट, ठ, ड़, ढ़, णा - समता में रमणा ।
हाथ जोड़ मान मोड़, सीखो नमणा ।।३।।

त, थ, द, ध, ना - धर्म पाठ पढ़ना ।
सच्चाई के पथ पर, निर्भीक बढ़ना ।।४।।

प, फ, ब, भ, मा - मन धर्म में रमा ।
महावीर प्रभु से हम सीखेंगे - क्षमा ।।५।।

य, र, ल, वा - मत दौड़ मनवा ।
मर्यादा में रहने की, संतों से दवा ।।६।।

श, ष, स हा, - जाग, क्यों सो रहा ।
मक्खन पाने पानी को, तू क्यों बिलो रहा ।।७।।

✲ ✲ ✲

अनछाना जल

बिना छाने पीओ मती, पानी चतुर सुजान ।
अपने तन में रोग हो, पर जीवों की हान ।।
पानी जग का प्राण है, पानी जग आधार ।
बिना मतलब ढ़ोलो मती, होता जीवन संहार ।।

अच्छा बच्चा

जो न किसी का हृदय दुखाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता ।

जो झगड़ों में नहीं उलझता, झूठ बोलना पाप समझता ।
अपने मन में प्रभु से डरता, नहीं काम मन-माना करता,
सुख से विद्या पढ़ने जाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता !

दया दिखाने में सुख मानो, माता-पिता की आज्ञा मानो ।
नहीं करेगा पाप कभी वह, क्या देगा संताप कभी वह ?
वीर प्रभु का जो गुण गाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता ।।

जो अपना काम हाथ से करता, तन और मन को साफ है रखता ।
जैसा कहता, वैसा करता, छल-कपट मन में नहीं रखता ।
वृद्ध जनों का आदर करता, वह अच्छा बच्चा कहलाता ।।

विनय

हे भगवान् ! दया-निधान !!
हम पाएँ इतना वरदान !

चाहे दुःख हो, चाहे सुख हो,
रहे सत्य का हरदम ध्यान !

बाधाओं में, विपदाओं में,
धीरज धरें, बनें बलवान !

तन मन वारें, जीवन वारें,
देश-धर्म पर हों बलिदान !

बोलो क्या चाहते हो ?

१. देना चाहते हो ? - दूसरों को सुख दो ।
२. लेना चाहते हो ? - बड़ों का आशीर्वाद लो ।
३. लिखना चाहते हो ? - गुरु महिमा लिखो ।
४. देखना चाहते हो ? - अपने दोषों को देखो ।
५. मारना चाहते हो ? - विषय, कषाय को मारो ।
६. जीतना चाहते हो ? - अपनी इन्द्रियों को जीतो ।
७. रखना चाहते हो ? - सादा जीवन उच्च विचार रखो ।
८. करना चाहते हो ? - दीन दुखियों की सेवा करो ।
९. बोलना चाहते हो ? - सबसे मीठा बोलो ।

जीवन में तीन बातें हमेशा ध्यान रखो

१. कभी छोटा मत समझो - कर्ज, शत्रु, बीमारी ।
२. इन्हें कोई चुरा नहीं सकता - हुनर, ज्ञान, अक्ल ।
३. जो निकल गया, वापिस नहीं आता - तीर, मुँह के बोल, शरीर से प्राण ।
४. तीन बातें कभी न भूलें - कर्ज, फर्ज, मर्ज ।
५. इन तीनों का सम्मान करो - माता, पिता, गुरु ।
६. इन तीनों को वश में रखो - मन, काम, क्रोध ।
७. तीन बातें मानो - कम खाओ, गम खाओ, नम जाओ ।
८. तीन चीजें इंतजार नहीं करती - समय, मौत, ग्राहक
९. तीन चीजें एक बार मिलती है - मां, बाप, जवानी ।

कुछ लाभदायक बातें

१. सदा डरो । किससे ? पापों से ।
२. चुप मत बैठो । कहाँ पर ? धर्म प्रचार में ।
३. चले चलो । कहाँ पर ? सत्संग में ।
४. गूंगे बहरे बन जाओ । कहाँ पर ? निंदा व निंदक के स्थान पर
५. दूर भगाओ । किसको ? क्रोध व आलस्य को ।
६. धिक्कार दो । किसको ? अंहकार को ।
७. बहादुर बनो । किसमें ? क्षमा धारण में ।
८. देख मत हंसो । किसको ? दुःखियों को ।
९. आदर करो । किसका ? गुरुओं/महापुरुषों का ।

कौन सी संस्कृति का प्रभाव

वृद्ध व्यक्ति ने अपने गाँव में नये व्यक्ति को देखा,
जिज्ञासावश पूछा ? आप श्रीमान् कौन है ?
मैं आपके गाँव में स्कूल टीचर हूँ ?
वृद्ध ने पूछा- आप यहाँ कहाँ रहते है ?
आपके सामने वाले मकान में ।
आपके परिवार में कौन-कौन है ?
मैं हूँ, पत्नी है, मेरे दो बच्चे है ।
बूढ़ी माँ है । उसको भी हमने अपने पास रख लिया है ।
कुछ समय पश्चात्
फिर एक नया व्यक्ति गाँव में दिखाई दिया
वृद्ध ने जिज्ञासा शांत करने के लिये पूछा, आप श्रीमान् कौन है ?

मैं गाँव के पोस्ट ऑफिस में नया कर्मचारी हूँ ।
वृद्ध ने पूछा- आप कहाँ रहते हैं ?
आपके पास वाले मकान में ।
आपके परिवार में कौन-कौन रहते है ?
मैं हूँ, पत्नी है, मेरे दो बच्चे हैं ।
हम अपनी माँ के साथ रहते हैं ।
वृद्ध दोनों व्यक्तियों के उत्तर सुनकर चिन्तन में लीन हुआ ।
जननी । माँ की सेवा में, उपकार का भाव
यह है कौन सी संस्कृति का प्रभाव ?
माता-पिता पराये ? परोपकारी पशु-पक्षी पराये
वृद्धों को वृद्धाश्रम, पशु-पक्षियों को वधशाला, कत्लखाने
देखा पश्चिम की विकृति का परिणाम ।
अपनी संस्कृति में होगा सबका कल्याण
पश्चिम की विकृति से, अपनी संस्कृति को बचाएँ ।
जगे जगाए, ज्ञानियों का भारत बनाएँ ।

* * *

''अपने जीवन को सभी प्रकार के कुव्यसनों से बचाकर रखना तथा अपने आपको अच्छे से अच्छा बनाने का प्रयत्न करना परिवार, समाज देश और राष्ट्र की सबसे पहली सेवा हैं ।''

- डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा.

* * *

प्रसन्नता प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है ।

* * *

शुभ प्रभात

सूर्योदय के साथ ही बिस्तर छोड़ देना चाहिए, ऐसा न करने से सिर पर पाप चढ़ता है ।

महिलाएं जो कि घर की लक्ष्मी हैं इन लक्ष्मियों को सूर्योदय के साथ ही उठ जाना चाहिए ।

लक्ष्मण थोड़ी देर से उठे तो एक बार चल जायेगा, पर लक्ष्मी का देर से उठना बिल्कुल नहीं चलेगा ।

जिन घर-परिवारों में लक्ष्मण के साथ लक्ष्मी भी देर सुबह तक सोई पड़ी रहती है, उन घरों की धन-लक्ष्मी रूठ जाया करती है और घर छोड़कर चली जाया करती है ।

जिस घर में और सब कुछ हो मगर प्रेम न हो, वह घर, घर नहीं, श्मशान है । श्मशान में भी बहुत मुर्दे होते हैं, मगर वे आपस में न तो कभी मिलते हैं और न ही कभी बतियाते हैं । जिस घर में पति-पत्नी, सास-बहू और बाप-बेटे साथ रहते हो मगर एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते न हों तो क्या वह घर भी श्मशान ही है । परिवार में प्रेम और समर्पण है तो जीवन स्वर्ग है । मैं पूछता हूँ; प्रेम से भी बड़ा क्या दुनियाँ में कोई स्वर्ग है ? घृणा और नफरत से भी बड़ा क्या दुनियाँ में कोई नरक है ?

- मुनि श्री तरूणसागरजी

हे सूर्य भगवान मैं आपको नमन करता/करती हूँ । हे सूर्य भगवान धरती का कण-कण मंगल हो, प्राणी सुखी हो, संसार में शान्ति हो, पाप का प्रायश्चित हो, पुण्य का उदय हो, जीवन का आचरण मंगल हो ।

उगतो सूरज, चढ़तो दिवान कासब देव
कंवरियां राजल रोटी रा देवाल रामादे रा भरतार,
धन्नाजी री तपस्या दीजो । शालिभद्रजी री रिद्धि दीजो ।
गौतमस्वामीजी री सिद्धि दीजो । अभयकुमारजी री बुद्धि दीजो ।

रात को सोते समय बोलना

शील म्हांरे शीराथे, ज्ञान म्हांरे हृदय में ।
पाप म्हारे पगाते, भजन रो किवाड़, लोभ रो तालो ।।
चार प्रहर रात में, गौतम स्वामीजी रखवाला ।
पंडित मरण आयजो, दो घड़ी रो संथारो आयजो ।।
रात रा जन्म आयजो, दिन रा मरण आयजो ।
प्रभात रो सुमिरणो, शांतिनाथजी रो शरणो ।।
अरिहन्त जी रो ज्ञान, खोटो सपनो आवे तो
महावीर स्वामीजी रो आधार ।
आहार शरीर उपधि पचक्खूं, पचक्खूं पाप अठार ।
मरण होवे तो वोसिरे, जीवूं तो आगार ।।

⁂

सभा में पांच बातें वर्जित हैं
निद्रा लेना
अन्यमनस्क होना
बातचीत या कानाफूसी करना
बीच में होकर आगे बढ़ने की चेष्टा करना
सभा के बीच में अकारण उठना ।

आत्म विश्वास

जिस इंसान में आत्म विश्वास होता है उसको सफलता निश्चित रूप से मिलती है, आत्म विश्वासी इंसान कठिन से भी कठिन समय में संयम, संस्कार और विनय से बाधाओं को दूर करके जीवन को शांतमय बना लेता है ।

आत्म विश्वासी का प्रयत्न दिव्यता का दर्शन कराता है और प्रयत्न में आत्मविश्वासी का समावेश होने पर कोई भी बाधा व्यक्ति के मार्ग में रूकावट नहीं डाल सकती है । बस ! मन में आध्यात्मिकता और आत्मविश्वास उत्पन्न करने की जरूरत है ।

– डॉ. श्री पदमचन्द्रजी म.सा.

सात वैरी

एक तो वेरण जीव है, दूजो है शैतान ।
तीजी वेरण नींद छे, काम गिणे नहीं काज ।।
चौथो वेरण कुटुम्ब छे, नित धंधा छे काम ।
पांचमो वेरण मुख से, नहीं भजन दे राम ।।
छठो वैरी धन छे, नित को करे गुमान ।
सातमो वैरी काल है, आन खड्यो तत्काल ।।
हम कहिये तूं सुण्यो, सातां रा परिणाम ।
सुनकर हिया में राखजो, इतां रा परिणाम ।।

प्रार्थना

श्री आदि जिनंदं (चौबीसी)

श्री आदि जिनंदं, समरस कन्दं, अजित जिनंदं, भज प्राणी ।
संभव जग त्राता, शिव मग राता, द्यो सुखसाता, हित आणी ।
अभिनन्दन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित मेवा, रिपु घाता ।
चौबीस जिनराया, मन-वच-काया, प्रणमूं पाया, द्यो साता ।।

श्री पद्म सुपासं, शशि गुण रासं, सुविधि सुवासं, हितकारी ।
श्री शीतल स्वामी, अंतरयामी, शिवगति गामी, उपकारी ।
श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भविजन वाला, जग त्राता ।
चौबीस जिनराया, मन-वच-काया, प्रणमूं पाया, द्यो साता ॥२॥

वासुपूज्य सुकंतं, विमल अनंतं, धर्म श्री संतं, संतकारी ।
कुंथू अरनाथं, तज जग साथं, मल्लि सुआथं, संग धारी ।
मुनिसुव्रत सुनमि, आत्मा ने दमी, दुर्मति ने वमि, तप राता ।
चौबीस जिनराया, मन-वच-काया, प्रणमूं पाया, द्यो साता ॥३॥

रिष्ठनेमि बड़ाई, नार न ब्याही, तोरण जाई, छिटकाई ।
नाग नागण तांई, दिया बचाई, पारस सांई, सुखदाई ।
जय-जय वर्द्धमानं, गुणनिधि खानं, त्रिजग भानं, शुद्ध आता ।
चौबीस जिनराया, मन-वच-काया, प्रणमूं पाया, द्यो साता ॥४॥

संसार का फन्दा, दूर निकन्दा, धर्म का छन्दा, जिन लीना ।
प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भवि समझाया, मुनि कीना ।
कहे 'रिख तिलोकं', सदा तस धोकं, दो सुख थोकं, चित चाता ।
चौबीस जिनराया, मन-वच-काया, प्रणमूं पाया, द्यो साता ॥५॥

श्री जिनवर मुझ करो कल्याण (पैसठिया छन्द)

22	3	9	15	16
14	20	21	2	8
1	7	13	19	25
18	24	5	6	12
10	11	17	23	4

श्री नेमिश्वर संभव स्वाम, सुविधि धर्म शांति अभिराम ।
अनंत सुव्रत नमिनाथ सुजाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
अजितनाथ चन्दाप्रभु धीर, आदेश्वर सुपार्श्व गंभीर ।
विमलनाथ विमल जग जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
मल्लीनाथ जिन मंगलरूप, धनुष पच्चीसे सुन्दर स्वरूप ।
अरनाथ प्रणमूं वर्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
सुमति पद्मप्रभू अवतंस, वासुपूज्य शीतल श्रेयांस ।
कुन्थू पार्श्व अभिनन्दन जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
इण पर श्री जिन संभारिये, दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये ।
पच्चीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
ए भणतां दुःख नहीं आवे कदा, जो निज पासे राखो सदा ।
धरिये पंच तणो मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।।
जिनवर नामे वांछित मिले, मन चिंतित सब आशा फले ।
'धर्मसिंह' मुनि नाम निधान, जिनवर मुझ करो कल्याण ।।

(इस स्तुति का 9 बार स्मरण करें, अत्यन्त प्रभावक छन्द है ।)

सेवो सिध्द सदा जयकार

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जाँसे होवे मंगलाचार ।। टेर ।।

अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार ।
अन्तर्यामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भंडार.... ।। १ ।।

कर पणट्ठ-कमट्ठ-अट्ठ गुण, युक्त मुक्त संसार ।
पायो पद परमेष्ठी तास पद, वन्दू वारम्बार.... ।। २ ।।

सिद्ध प्रभु का सुमिरण जग में, सकल सिद्धि दातार ।
मनवांछित पूरण सुर-तरु-सम, चिंता चूरणहार.... ।। ३ ।।

जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मंझार ।
तीर्थंकर हूं प्रणमें उनको, जब होवे अणगार.... ।। ४ ।।

सूर्योदय के समय भक्तियुत, स्थिर चित्त दृढ़ता धार ।
जपे सिद्ध यह जाप तास घर, होवे ऋद्धि अपार.... ।। ५ ।।

सिद्ध स्तुति यह पढ़े भाव से, प्रतिदिन जो नर-नार ।
सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार.... ।। ६ ।।

''माधव मुनि'' कहे सकल संघ में, बढ़े हमेशा प्यार ।
विद्या-विनय-विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार.... ।। ७ ।।

❋ ❋ ❋

इन्हें छोटा न समझिए

शत्रु को, रोग को, अग्नि को, पाप को, राजा को एवं सर्प को !

समरो मंत्र भलो नवकार

समरो मन्त्र भलो नवकार, ए छे चवदे पूरव नो सार ।
अेनी महिमा नो नहीं पार, अेनो अर्थ अनन्त अपार ।।१।।

सुखमां सुमरो, दुःखमां समरो, सुमरो दिवस ने रात ।
जीवतां सुमरो, मरतां सुमरो, सुमरो सौ संगात ।।२।।

रोगी सुमरे, भोगी सुमरे, सुमरे राजा रंक ।
देवा सुमरे, दानव समरे, सुमरे सौ निशंक ।।३।।

अड़सठ अक्षर अेहना जाणो, अड़सठ तीरथ सार ।
आठ संपदा थी परमाणो, अष्ट सिद्धि दातार ।।४।।

नवपद अेहना नवनिधि आपे, भवोभवना दुःख कापे ।
'वीर' वचन थी हृदये व्यापे, परमातम पद आपे ।।५।।

❋ ❋ ❋

अध्यापक जन

सादा जीवन व्यतीत करें !
कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहें !
लोभ तथा क्रोध त्यागें !
समय के पाबन्द रहें !
छात्र वर्ग को पुत्रवत् समझें !
ऊँच नीच की भावना से दूर रहें !
सुरा माँसादि दुर्व्यसनों से बचें !
नैतिक जीवन का स्तर ऊँचा रखें !
सदा धार्मिक विचार रखें !

भजो एक सार मंत्र नवकार

भजो एक सार मंत्र नवकार,
जिन्हों से उतरोगे भव पार ।।टेर।।

मैनासुन्दरी श्रीपाल के, नवपद को आधार ।
मन का हुआ मनोरथ पूरा, मिट गये कुष्ट विकार ।।१।।

सेठ सुदर्शन सूली ऊपर, जाप जप्यो नवकार ।
सूली का तब हुआ सिंहासन, माया अपरम्पार ।।२।।

जलतो नाग आग से काढ्यो, दियो पार्श्व नवकार ।
धरणेन्द्र की पदवी पायी, भुवनपति सरदार ।।३।।

यह प्रतापी महामंत्र है, चौदह पूरव सार ।
कहे 'लाल' शुभ भावे भजिये, वरते जय जयकार ।।४।।

* * *

परीक्षा होती है

आपत्ति में मित्र की !
संग्राम में वीर की !
निर्धनता में स्त्री की !
दुःख में बन्धु की !
कार्य में नौकर की !
सभा में विद्वान् की !
परिषहों में सन्त की !

नवकार मंत्र है महामंत्र

नवकार मंत्र है महामंत्र, इस मंत्र की महिमा भारी है ।
आगम में कथी गुरुवर से सुनी, जीवन में जिसे उतारी है ।।

'अरिहंताणं' पद पहला है, अरि आरति दूर भगाता है ।
'सिद्धाणं' सुमिरण करने से, मन इच्छित सिद्धि पाता है ।
'आयरियाणं' तो अष्ट सिद्धि और नव निधि के भंडारी है ।।१।।

'उवज्झायाणं' अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है ।
'सव्वसाहूणं' सब सुख दाता, तन-मन को स्वस्थ बनाता है ।
पद पाँच का सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बिमारी है ।।२।।

श्रीपाल सुदर्शन मेणरया, जिसने भी जपा आनंद पाया ।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया ।
मन नंदन वन में रमण करे, यह ऐसा मंगलकारी है ।।३।।

नित्य नई बधाई सुनें कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती ।
'अशोक मुनि' जय-विजय मिले, शांति-प्रसन्नता बढ़ जाती ।।
सन्मान मिले, सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है ।।४।।

* * *

नहीं बनता

सिर के मूँडाने मात्र से श्रमण !
ॐ के जप-मात्र से ब्राह्मण !
जंगल में रहने मात्र से मुनि !
भगवाँ पहनने मात्र से तापस !

नवकार है गुणकारी

(तर्ज : होठों से छूलो तुम...)

नवकार है गुणकारी, शुद्ध मन से ध्या लेना ।
भव-भव के बंधन से तुम मुक्ति पा लेना ।। टेर ।।

हृदय में रखो इसको, आतम शुद्ध बन जाता ।
सदा दिल से रटो इसको, जाना नरक में नहीं पड़ता ।
सब मंत्रों से बलशाली, नया जीवन बना लेना ।
भव-भव के... ।।१।।

ये शाश्वत अनादि है, और मंगलकारी है ।
मिट जाती उपाधि है, आत्म-आनन्दकारी है ।
है चवदह पूर्व का सार, नहीं इसको भुला देना ।
भव-भव के... ।।२।।

सदा होवे मंगलाचार, हो जायेगी नैया पार ।
जीवन का है आधार, मिल जायेगा मुक्ति-द्वार ।
नवकार का ले शरणा, सुख-शांति को पा लेना
भव-भव के... ।।३।।

जीवन की ज्योति यही, है शांति सुख धाम ।
महामंत्र की महिमा अपार, बन जायेंगे बिगड़े काम ।
श्रद्धा से कहे 'भारती', सदा सुमिरन कर लेना ।
भव-भव के... ।।४।।

❋ ❋ ❋

नवकार जपने से

(तर्ज : क्या खूब लगती हो ...)

नवकार जपने से, सारे सुख मिलते हैं ।
जीवन में तन मन के, सारे दुःख मिटते हैं ।
जाप जपो, जपते रहो, बन्धन कटते हैं ।
मन उपवन में खुशियों के, फूल खिलते हैं ।।

अड़सठ अक्षर हैं, इसके हाँ इसके ।
जो ध्याता है दुःख टल जाते उसके ।।
परमेष्ठी पाँच है पावन, हाँ पावन ।
नवपद जी भी पवित्र, है मन भावन ।।
जाप जपो, जपते रहो, बन्धन कटते हैं, मन उपवन में...।।१।।

पापों से बचकर रहना, हाँ रहना ।
दुःख आये तो, हँसते-हँसते सहना ।।
नवकार करेगा रक्षा, हाँ रक्षा ।
ये अरिहंत है, प्रसन्नता का नक्शा ।।
जाप जपो, जपते रहो, संकट कटते हैं, मन उपवन में...।।२।।

जब कोई हमसे रूठे, हाँ रूठे ।
दिल टूटे और, रिश्ता कोई छूटे ।।
मन में न उदासी लाना, नहीं लाना ।
परमेष्ठी से दिल का, नाता रचाना ।।
जाप जपो, जपते रहो, दीपक जलते हैं, मन उपवन में...।।३।।

❋ ❋ ❋

जय जयकार करे (रविवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय जयकार करे, स्वामी जय जयकार करे ।
पद्म प्रभु जिन सुमिरे, मंगलाचार करे ।। ध्रुव ।।

'श्रीधर' नन्द निरूपम, सुषमा के जाये ।
'कोशाम्बी' में घर-घर, सुर-नर गुण गाये ।।१।।

शुभ्रस्कन्ध-सुआनन, सुन्दर भुज प्यारी ।
लक्षण नेत्र अरु काया, पद्मवरण धारी ।।२।।

वर्षी दे, संयम ले, बन केवलज्ञानी ।
भविजनों हित प्रभु ने, प्रकट करी वाणी ।।३।।

पूरण-परम दयालु, पुरुषोत्तम नामी ।
अधम उद्धारण जग में, तुम-सा नहीं स्वामी ।।४।।

'चौथमल' कहे जो जन, शुद्ध मन से ध्यावे ।
लीला लहर करे वहाँ, नित्य मंगल छावे ।।५।।

❋ ❋ ❋

सूर्य का जाप

ॐ सूर्याय नमः लाल रंग की माला

प्रार्थना

पद्मप्रभ जिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर !
शांति तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ।।

❋ ❋ ❋

जय जिनवर चन्दा (सोमवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय जिनवर चन्दा, स्वामी जय जिनवर चन्दा ।
सुख-सम्पति के दाता, वरते आनन्दा ।। ध्रुव ।।

'जयन्त' विमान से आये, 'लक्ष्मी' के नन्दा ।
'महासेन' घर जन्मे, 'चंद्रपुरी' चन्दा ।।१।।

'शशि' लक्षण युत सोहे, श्वेत वरण काया ।
राज-रमणी ऋद्ध भोगी, संयम पद पाया ।।२।।

केवलज्ञान अनुपम, दर्शन के धारी ।
अमित सुखोत्तम पाये, गुण के भंडारी ।।३।।

प्रातः समय शुद्ध मन से चन्दा चित चावे ।
कमला केलि करे वहाँ, जग सुयश छावे ।।४।।

'चौथमुनि' चमके चहुँ दिशि में, चन्दा चित्त धारे ।
विजय-बधाई बरसे, भवजल से तारे ।।५।।

❋ ❋ ❋

चंद्र का जाप

ॐ चंद्राय नमः सफेद रंग की माला

प्रार्थना

चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिपः ।
प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षा कुरु जयश्रियम् ।।

❋ ❋ ❋

जय वासुपूज्य देवा (मंगलवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय 'वासुपूज्य' देवा, स्वामी जय वासुपूज्य देवा ।
भाव-भक्ति से सुर-नर, करे चरण सेवा ।। ध्रुव ।।

पिता 'वसु' महाराया, 'चम्पापुरी' भारी ।
मात 'जया' गुणधारी, छवि अद्‌भुत प्यारी ।।१।।

माणक द्युति सम काया, चिन्ह 'महिष' धारी ।
राज्य-लक्ष्मी भोगी, आतम उजवारी ।।२।।

गो-स्वामी जग पूजित, हैं जग के स्वामी ।
प्रतिबोधित कई प्राणी, बन गये शिवगामी ।।३।।

जो कोई तुम भक्ति में, तन्मय हो जावे ।
ग्रह शान्ति हो घर में, मंगल बरतावे ।।४।।

'चौथमल' शुभ भावों से, शरण तेरी च्हावे ।
शुद्ध समकित हो मेरी, यही भाव भावे ।।५।।

❋ ❋ ❋

मंगल का जाप

ॐ मंगलाय नमः लाल रंग की माला

प्रार्थना

सर्वदा वासुपूज्यस्यः नाम्ना शांति जयश्रियम् ।
रक्षां कुरु धरासुनो ! अशुभो पि शुभो भव ।।

❋ ❋ ❋

जिन जयकार करे (बुधवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जिन जयकार करे, स्वामी जिन जयकार करे ।
'वर्द्धमान' गुण प्रगटे, जो नर ध्यान धरे ।। ध्रुव ।।

'कुण्डलपुर' 'सिद्धार्थ', 'त्रिशला' सुत प्यारे ।
जन्मे वीर जिनेश्वर, सुर-सेवा सारे ।।१।।

कंचन वरण अनुपम, शुभ सुन्दर काया ।
निरखत नैन न हारे, 'शार्दूल' चिन्ह पाया ।।२।।

वैभव विश्व का भोगी, बन पूर्ण ज्ञानी ।
सत्य धर्म समझाकर, तारे भवि प्राणी ।।३।।

सति-पति-सुत माता को, गज-भूधर सुमिरे ।
मैं गौतम गुरु सुमिरूँ, वांछित काज सरे ।।४।।

'चौथमल' श्रद्धायुत, जो शुद्ध मन ध्यावे ।
ऋद्धि-सिद्धि हो वृद्धि , सब सुख यश पावे ।।५।।

❋ ❋ ❋

बुध का जाप

ॐ बुधाय नमः पीले रंग की माला

प्रार्थना

विमलानन्तधर्माराः, शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा;
महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभोभव सदा बुध !

❋ ❋ ❋

जय जिनवर ज्ञानी (गुरुवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय जिनवर प्यारा, स्वामी जय जिनवर प्यारा ।
'सुमतिनाथ' प्रभु जग में, सुमति के दानी ।। ध्रुव ।।

'मेघरथ' नृप के घर में, 'मंगला' पटरानी ।
स्वप्न चतुर्दश देखी, हृदय हरषानी ।।१।।

'कौशलपुर' है सुन्दर, जन्मे जिनराया ।
'क्रौंच पक्षी' पद लक्षण, कनक वरण काया ।।२।।

संयम ले केवल पद पा, ज्योति विकसाई ।
सब प्राणी हित प्रभु ने, वाणी प्रगटाई ।।३।।

ब्रह्म लग्न में एक चित्त से, सुमति गुण गावे ।
भक्त शिरोमणि होकर, नित्यानन्द पावे ।।४।।

'चौथमल' कहे प्रभु का, पावन नाम सरे ।
शुद्ध-बुद्ध वाणी हो, दुर्गुण दोष हरे ।।५।।

❋ ❋ ❋

गुरु का जाप

ॐ गुरवे नमः पीले रंग की माला

प्रार्थना

ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनन्दन शीतलौ;
सुमतिः संभव स्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमा ।।१।।
एतत्तीर्थक तां नाम्ना, पूज्या य शुभो भव,
शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च कुरु देवगणार्चित ! ।।२।।

जय जिनवर प्यारा (शुक्रवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय जिनवर प्यारा, स्वामी जय जिनवर प्यारा ।
'सुविधिनाथ' सुखकारी, जाने जग सारा ।। ध्रुव ।।

'काकन्दी नगरी' अति सुन्दर, 'सुग्रीव' महाराया ।
'रामा' रानी जाया, सब जन सुख पाया ।।१।।

नाम नाथ का नीका, 'पुष्पदन्त' सोहे ।
'मकर' चिन्ह के धारी, सुर-नर मन मोहे ।।२।।

शुभ्रानन-शुभ ज्योति, लेश्या शुभ पावे ।
उज्ज्वल-दर्शन धारी, उच्च गति पावे ।।३।।

शुद्ध हृदय से जो नर, सुविधिनाथ ध्यावे ।
सुबुद्धि हो उसकी, सुन्दर फल पावे ।।४।।

'चौथमल' आशा कर, शरण लिया तेरा ।
कृपा-किरण से हृदय-कमल खिले मेरा ।।५।।

❋ ❋ ❋

शुक्र का जाप

ॐ शुक्राय नमः सफेद रंग की माला

प्रार्थना

पुष्पदन्त जिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित।
प्रसन्नोभव शांतिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम्।।

❋ ❋ ❋

ओम् मुनिसुव्रत स्वामी (शनिवार)

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

ॐ 'मुनिसुव्रत स्वामी, जय मुनिसुव्रत स्वामी ।
संकट-नाशक प्रभुवर, प्रणमूँ शिरनामी ।। ध्रुव ।।

'अपराजित' से च्यवकर, 'राजगृही' आये ।
नृप 'सुमित्र' कुलदीपक, 'पद्मा' के जाये ।।१।।

'कूर्म' सुलक्षण सोहे, श्यामवरण धारे ।
केवलज्ञान उजागर, भक्तन रखवारे ।।२।।

विचर-विचर कर प्रभु ने, लाखों जन तारे ।
आवागमन मिटाकर, पाये सुख सारे ।।३।।

'ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रत', जाप जपे भारी ।
मन्द ग्रह टल जावे, पावे सुख भारी ।।४।।

जो नर शुचि मन ध्यावे, सब दुःख विनसावे ।
'चौथमुनि' मन वांछित, सुख-सम्पति पावे ।।५।।

* * *

शनि का जाप

ॐ शनैश्चराय नमः काले रंग की माला

प्रार्थना

श्री सुव्रत जिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यांगसम्भव !
प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ।।

* * *

नव ग्रह शांति आरती

(लय : ॐ जय जगदीश हरे....)

जय जिनराज रटे, भवि जय जिनराज रटे ।
जाप जपे जिनवर का, संकट दूर हटे ।। ध्रुव ।।

रविवार पद्मेश्वर, ध्यावो नर-नारी ।
चन्द्रवार दिन चन्दा, है आनन्दकारी ।।१।।

मंगल वासुपूज्यवर, जपता जयकारी ।
वर्द्धमान, शांति प्रभु, बुध को है साताकारी ।।२।।

गुरुवार दिन ऋषभदेव, सुमति को ध्यावे ।
सुविधि शुक्र जिनेश्वर, ध्याता सुख पावे ।।३।।

मुनिसुव्रत भगवान को, शनिवारे सुमरे ।
अरिष्टनेमि जिन जपता, राहू दूर रहे ।।४।।

पार्श्वनाथ के जप से, केतु सह पावे ।
इस विधि सुमिरण करता, नित्य आनन्द पावे ।।५।।

'चौथमल' शुद्ध मन से, जिनवर का ध्यान ।
सब जन के मनवांछित, पूरण आस फले ।।६।।

* * *

मूर्ख वह

जो बिना बात के हँसे ! जो अपनी बड़ाई खुद करे !
जो व्यर्थ की बातें करे ! जो बड़ों का निरादर करे !
जो निज घर की बुराई करे ! जो बिना बुलाए बीच में बोले ।

श्री शांतिनाथ भगवान अरजी सुन लीजो

(तर्ज : कोरो काजलियो.....)

श्री शांतिनाथ भगवान ! अरजी सुण लीजो ।
कर जोड़ करुं गुणगान, अरजी सुण लीजो ।।टेर।।

थे तो अचिरादेजी रा लाडला ।
थांरो नाम लिया दुःख जाय, अरजी सुण लीजो ।।१।।

म्हांने भवजल पार उतारिये ।
म्हांरे दूजी नहीं चाय, अरजी सुण लीजो ।।२।।

इन्द्र-चन्द्र-नर-देवता ।
थांरे लुल-लुल लागे पाय, अरजी सुण लीजो ।।३।।

म्हैं तो ओलख लिया आपने ।
म्हांरे दूजो न आवे दाय, अरजी सुण लीजो ।।४।।

स्वामी नाथ-शिष्य चौथमल कहे ।
म्हांरे शांतिनाथ वर दाय, अरजी सुण लीजो ।।४।।

* * *

दूसरों को झगड़ते देख मनुष्य उपदेश देता है
किन्तु स्वयं के जीवन में सहनशीलता नहीं अपनाता,
संयम और विवेक से काम नहीं लेता ।

* * *

साता कीजोजी

साता कीजोजी,
श्री शांतिनाथ प्रभु शिव सुख दीजोजी ।। टेर ।।

शांतिनाथ है नाम आपको, सबने साताकारी जी ।
तीन भुवन में चावा प्रभुजी, मिरगी निवारी जी ।। १ ।।

आप सरीखा देव जगत में, और नजर नहीं आवेजी ।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावेजी ।। २ ।।

शांतिनाथ मन मांही जपतां, चाहे सो फल पावेजी ।
ताव-तेजरो दुःख दारिद्र, सब मिट जावेजी ।। ३ ।।

विश्वसेन राजाजी के नंदन, अचलादेवी जायाजी ।
गुरुप्रसादे "चौथमल" कहे, घणां सुहायाजी ।। ४ ।।

* * *

भावना

शिवमस्तु सर्व जगतः, परहित निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकः ।।

जगत् के सभी जीव सुखी हो ।
सभी जीवों का कल्याण हो ।
सभी जीव धर्मनिष्ठ बनें तथा सभी जीव
शाश्वत आनन्द प्राप्त करें ।

* * *

ले लो शान्ति प्रभु रो नाम

ले लो शान्ति प्रभु रो नाम, जिनवर शान्ति-शान्ति रो धाम,
धो लो दिल रा पाप तमाम, वेगी मुक्ति मिलसी ।।१।।

नहीं है जीवन रो विश्वास, अचानक रुक जावेला श्वांस,
पूरी हुई न किणरी आस, मन री मन में रह जासी ।।२।।

बांधो मत कर्मां रो भार, सुनकर जिनवाणी रो सार,
जग में भरियो दुःख अपार, आखिर जाणो पड़सी ।।३।।

कोई मत करजो रे प्रमाद, करलो ब्रह्म चक्री ने याद,
ले लो नरभव रो शुभ स्वाद, सूरज निश्चय ढ़लसी ।।४।।

छोड़ो सगला आर्तध्यान, करलो समता रस रो पान ।
जग में होनहार बलवान, टाल्यो नहीं टलसी ।।५।।

❋ ❋ ❋

जैन जीवन शैली के सप्त-सूत्र

- जय जिनेन्द्र से अभिवादन करें ।
- सप्त-कुव्यसन का त्याग करें ।
- साप्ताहिक सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय करें ।
- भोजन में झूठा नहीं छोड़ें ।
- साम्प्रदायिक निंदा-विकथा से दूर रहें ।
- वर्ष में एक बार सपरिवार सन्त दर्शन का लाभ लें ।
- सौन्दर्य प्रसाधनों और प्राणी हिंसा के अंश मिश्रित खाद्य पदार्थों का त्याग कर अहिंसक जीवन शैली अपनाएं ।

चेतन ले लो शरणा चार

चेतन ले लो शरणा चार, सांचो ओ ही है आधार ।
बाकी स्वारथ भर्‌यो संसार, थारो कोई नहीं है ।।१।।

अरिहन्त सिद्ध साधु अणगार, सांचो धर्म हियां में धार ।
वो ही करसी बेड़ो पार, और चारो नहीं है ।।२।।

जीवड़ा होकर रह सचेत, ए चारों सूं राखो हेत ।
नहीं तो चुगसी चिड़ियां खेत, कोई रखवालो नहीं है ।।३।।

थारे पग-पग पर लुटांग, थां पर रह्‌या निशानां ताक ।
ए चारों ने साथे राख, कोई पतियारो नहीं है ।।४।।

ये है त्राणों का भी त्राण, ये है प्राणों का भी प्राण ।
ये ही करे क्रोड़ कल्याण, थारो-मारो नहीं है ।।५।।

❋ ❋ ❋

हित शिक्षाएं

क्रोध जैसा विष नहीं,
क्षमा जैसा अमृत नहीं, लोभ जैसा दुख नहीं,
सन्तोष जैसा सुख नहीं, पाप जैसा वैरी नहीं,
धर्म जैसा मित्र नहीं, कुशील जैसा भय नहीं,
शील के जैसा शरणभूत नहीं,
जीवन में यह याद रखें ।

❋ ❋ ❋

श्री मुनिसुव्रत साहिबा

(तर्ज : चेतरे चेतरे मानवी....)

श्री मुनिसुव्रत साहिबा, दीनदयाल देवाँ तणाँ देव के ।
तारण-तरण प्रभु मो भणी, उज्ज्वल चित्त सुमरु नितमेव के ।।१।।

हूँ अपराधी अनादि को, जनम-जनम गुनाह किया भरपूर के ।
लूटिया प्राण छः काय ना, सेविया पाप अठार करूर के ।।२।।

पूरब अशुभ कर्त्तव्यता, तेहने प्रभु तुम नाँहि विचार के ।
अधम-उधारण विरूद छे, सरण आयो अब कीजिये सार के ।।३।।

किंचित् पुण्य प्रभाव थी, इण भव ओलख्यो श्री जिनधर्म के ।
निर्वर्तूं नरक-निगोद थी, एहवो अनुग्रह करो परिब्रह्म के ।।४।।

साधुपणो नहीं संग्रह्यो, श्रावक-व्रत नहीं किया अंगीकार के ।
आदर्या तो न आराधिया, तेहथी रुलियो हूँ अनंत संसार के ।।५।।

अब समकित व्रत आदर्यो, तेने आराधी उतरूँ भव-पार के ।
जनम-जीतब सफलो हुवे, इण पर वीनवूं बार हजार के ।।६।।

सुमति नराधिप तुम पिता, धन-धन श्री पदमावती मांय के ।
तस सुत त्रिभुवन-तिलक तूं, वंदत विनयचंद सीस नवाय के ।।७।।

❋ ❋ ❋

गृहस्थ को ये कार्य प्रतिदिन करने चाहिये-

देव-भक्ति, गुरु-सेवा, स्वाध्याय
संयम, तप और दान

तुमसे लागी लगन

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण ।
पारस प्यारा, मेटो-मेटो जी संकट हमारा ।।
निश-दिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूँ ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा ।।

अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे ।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुँह मोड़ा, संयम धारा ।।१।।

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये ।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थांरा ।।२।।

जग के दुःख की परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है ।
मेटो जनम-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ।।३।।

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा ।।४।।

❋ ❋ ❋

देश का गौरव गिरता है

संस्कृति में विकृति आने से, सद्विचारों के अभाव से,
भाग्यवाद के प्रचार से, विलासिता की प्रबलता से,
शिक्षा के अभाव से, व्यापार की अप्रामणिकता से,
न्यायहीन संस्कार से, कर्तव्य-विमुख प्रजा से,
आपस में फूट पड़ने से ।

वामा देवी के प्यारे

(तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...)

वामादेवी के प्यारे, तुम अश्वसेन दुलारे,
ओ पारसनाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम सबका वंदन है[२] ।।ध्रुव।।
जलते नाग का जोड़ा, प्रभु तुमने आके बचाया,
महामंत्र नवकार सुनाकर, उनको देव बनाया,
नागेश्वर वाले स्वामी, तुम प्रभु हो अन्तरयामी,
ओ पारसनाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम सबका वंदन है,[२] ।।१।।
तुम ही मेरे जीवन हो, तुम्हें देख-देख जी लूंगी,
मैं तो तुम्हारे खातिर दुनियां से रिश्ता तोड़ दूंगी,
तेरे पावन चरणों में, हम अपना शीश झुकाये,
ओ पारसनाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम सबका वंदन है,[२] ।।२।।
मेरे मन मंदिर की तूं, है सबसे प्यारी मूरत,
स्वर्ग नजर आता है, जब देखूं तेरी सूरत,
जब-जब दुनियां में आऊं, तेरा ही ध्यान लगाऊं,
ओ पारसनाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम सबका वंदन है,[२] ।।३।।

❋ ❋ ❋

याद रखने योग्य

भाग्य के अनुसार सिद्धि मिलती है ।
कर्म के अनुसार बुद्धि उपजती है ।
दान के अनुसार कीर्ति मिलती है ।
पुण्य के अनुसार लक्ष्मी मिलती है ।

पारसनाथ भगवान की प्रार्थना

समरूं-समरूं रे पारस देव ने,
कांई समर्‌या संकट जाय, वामा सुत प्यारो रे ।।टेर।।
वासी-वासी रे काशी देश रा,
कांई वाराणसी रो वास ... वामा सुत प्यारो रे ।।१।।
कुल रो दिवलो रे, कुंवर अश्वसेन रो,
कांई त्रिभुवन में विख्यात ... वामा सुत प्यारो रे ।।२।।
तार्‌या-तार्‌या रे नाग और नागणी,
कांई फरमायो मंत्र नवकार ... वामा सुत प्यारो रे ।।३।।
त्यागी-त्यागी रे राणी पद्‌मावती,
कांई त्याग्यो राज भंडार ... वामा सुत प्यारो रे ।।४।।
गावे-गावे रे भगत थारा गीतड़ला,
कांई गावे थारा गुणगान ... वामा सुत प्यारो रे ।।५।।
भजन बणयो रे नाकोड़ा तीर्थ में,
कांई गावे "मुनि मुलतान" ... वामा सुत प्यारो रे ।।६।।

❋ ❋ ❋

मुक्तक

गंगा के जल सा कोई निर्मल जल नहीं होता ।
माता के दिल सा कोई कोमल नहीं होता ।
दुनियाँ में जन-बल भी होता है धन-बल भी ।
मगर श्रद्धा के बल सा कोई बल नहीं होता ।

श्री गौतम स्वामी का स्तवन

मंगल वरतेजी, मंगल वरते जी,
म्हांरे गौतम गणधर मन में बसते जी ।। टेर ।।

धन्ना शालिभद्र की ऋद्धि, और अष्ट महासिद्धि जी ।
गौतम नामे प्रगट म्हांरे, नव निधि जी ।।१।।

लब्धि का भण्डार ज्ञान के, गौतम हैं आगारे जी ।
आप नाम म्हांरे सब सुख बरते मंगलचारे जी ।।२।।

आप नाम अति आनंदकारी, चिंता दुःख सब भाजे जी ।
सुख संपद का मंगल बाजा, मुझ घर बाजे जी ।।३।।

नाम कल्पतरु म्हारे आंगन, दारिद्र भग जावे जी ।
मनवांछित म्हारे ऋद्धि संपदा, घर में आवे जी ।।४।।

अमृत कुंभ मैं पाया चिंतामणि, दुःख गया सब भागी जी ।
अमृत सम मीठे गौतम तुम, मनसा लागी जी ।।५।।

मन कमल तुम नाम हंस है, बैठा अति सुखकारे जी ।
हर्षित प्राण हुए सब मेरे, अपरम्पारे जी ।।६।।

किसी बात की कमी न मेरे, गौतम गणधर पाया जी ।
तीन लोक की लक्ष्मी मुझ घर, बास बसाया जी ।।७।।

❋ ❋ ❋

जब तलक है जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से ।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम करलो भगवान से ।।

आओ भगवन् आओ

(लय : बच्चे मन के सच्चे)

आओ भगवन् आओ, इस अन्तर मन में आओ ।
मेरे जीवन के कण-कण में, बनकर प्राण समाओ ... ।। टेर ।।

लिया तुम्हारा शरणा है, मोह निराकृत करना है,
इसने मुझको मारा है, तुमने इसे संहारा है ।
तब ही जिन कहलाते हो, सबको राह बताते हो,
बनकर निर्देशक इस रण में, मुझको विजय दिलाओ ।।१।।

चारों ओर अंधेरा है, एक सहारा तेरा है,
जीवन सूना-सूना है, पिछड़ा दूना-दूना है ।
बुझा हुआ हूँ दीप प्रभु, आया आप समीप प्रभु,
तुम जलते दीपक हो मुझको अपने तुल्य बनाओ ।।२।।

निज को इतना भूल गया, बिल्कुल ही बन धूल गया,
आसमान का तारा हूँ, इस धरती से न्यारा हूँ ।
इस जग से विच्छेद मिले, तेरा मुझे अभेद मिले,
अपनी ऊँची श्रेणी में, अब मुझको भी बिठलाओ ।।३।।

बोधि बीज जो पाया है, तरु बनकर मुस्काया है,
सत्य ज्ञान का हो सिंचन, झंझाओं से हो रक्षण ।
फल आने की ऋतु आये, भव्य साधना बन जाये,
पत्रित-पुष्पित और फलित हो, वो करुणा रस बरसाओ ।।४।।

❋ ❋ ❋

आया हूँ बन कर तेरा पुजारी

आया हूँ बन कर तेरा पुजारी, पूजा मेरी ठुकराओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।टेर।।

दया के सागर दया करो तो, मन में साहस शौर्य भरो तो,
कभी पुकारुं अन्तर मन से, मेरे प्रभु आ जाओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।१।।

नहीं निराशाओं में भटकूं, आए बाधा कभी ना अटकूं,
चला चलूं मैं मंजिल अपनी, मंजिल मुझे पहुँचाओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।२।।

मुझको ऐसा ज्ञान दीजिए, मुक्ति का वरदान दीजिए,
समझ सकूं मैं सबको अपना, प्रेमी मुझे कर जाओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।३।।

सागर में जीवन की नैया, तुमसे बढ़ कर कौन खिवैया,
लहर-लहर में तिरा-तिराकर, पार उस ले जाओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।४।।

मंगलमय हम तुम्हें पुकारे, तुम बिन बिगड़ी कौन सुधारे,
आकुल -व्याकुल इस जीवन में, मंगलमय बन जाओगे क्या ?
मुझे समझ कर छोटा सा बालक, मेरे प्रभु दुलराओगे क्या ।।५।।

* * *

धर्म क्या है ?

धर्म है- मन की शुद्धता में, वाणी की निरवद्यता में, कर्म की पवित्रता में ।
धर्म से मनुष्य की आत्म-जागृति होती है ।

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा प्रभुवर ऐसी भक्ति दो ।
समभावों से कष्ट सहूं, बस मुझमें ऐसी शक्ति दो ।। टेर ।।

किन जन्मों में कर्म किये थे, आज उदय में आये हैं,
कष्टों का कुछ पार नहीं है, मुझ पर वो मंडराये हैं,
डिगे न मन मेरा समता से, चरणों में अनुरक्ति दो ।।१।।

कायिक दर्द भले बढ़ जावें, किन्तु मुझ में क्षोभ न हो,
रोम-रोम हो पीड़ित मेरा, किंचित् मन विक्षोभ न हो,
दीन भाव नहीं आवे मन में, ऐसी शुभ अभिव्यक्ति दो ।।२।।

आर्त्तध्यान नहीं आवे मन में, दुःख दर्दों को पी जाऊं,
ध्यान लगालूं प्रभु-चरणों में, हंस-हंस कर मैं जी जाऊं,
रोने से ना कष्ट मिटे, यह पावन चिन्तन शक्ति दो ।।३।।

महावेदना भले सतावे, ध्यान तुम्हारा ना छोड़ूं,
जीवन की अंतिम सांसों तक, अपनी समता ना छोड़ूं ।
कभी न मांगू प्रभुवर तुम से, कष्टों से मुझे मुक्ति दो ।।४।।

भले न तन दे साथ जरा, पर मन साधना अनुरक्त रहे,
जीवन की हर सांस तुम्हारे, चरणों की ही भक्त रहे,
रहे समाधि अविचल मेरी, शांति की अभिव्यक्ति दो ।।५।।

* * *

है समय नदी की धार कि जिसमें सब बह जाया करते हैं ।
है समय बड़ा तूफान प्रबल, पर्वत झुक जाया करते हैं ।।
अक्सर दुनियाँ के लोग, समय के चक्कर खाया करते हैं ।
लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो इतिहसा बनाया करते हैं ।।

खत भगवान को लिखता

भगवान तुम्हें मैं खत लिखता पर पता मुझे मालूम नहीं ।।टेर।।
चाँद से पूछा, सूरज से पूछा
और पूछा गगन के तारों से ।
तारों ने कहा- तारों ने कहा,
आसमान में है पर पता मुझे मालूम नहीं ।।१।।
बागों में पूछा माली से,
और खेतों में पूछा हाली से ।
हाली ने कहा- हाली ने कहा,
इस मिट्टी में पर पता मुझे मालूम नहीं ।।२।।
गंगा से पूछा, जमुना से पूछा
और पूछा गहरे सागर से,
सागर ने कहा-सागर ने कहा,
इस पानी में पर पता मुझे मालूम नहीं ।।३।।
इधर से पूछा, उधर से पूछा,
अंत में पूछा गुरुवर से,
गुरुवर ने कहा-गुरुवर ने कहा,
तेरे दिल में पर पता मुझे मालूम नहीं ।।४।।

***

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुंह मांही ।
मनुवा फिरत बाजार में, यह तो सुमिरण नाहीं ।
मंदिर तीर्थ भटकते, वृद्ध हो गया छैला ।
पग की पनही घिस गई, घिसा न मन का मैला ।।

जीवन अच्छा नहीं लगता

जीवन अच्छा नहीं लगता धर्म बिना,
जीवन अच्छा नहीं लगता संयम बिना ।। टेर ।।
चाहे कितना ही शीष सजालो,
शीष अच्छा नहीं लगता झुके बिना ।।१।।
चाहे कितना ही कान सजालो,
कान अच्छा नहीं लगते ज्ञान बिना ।।२।।
चाहे कितना ही नैन सजालो,
नैन अच्छे नहीं लगते (संत) दर्शन बिना ।।३।।
चाहे कितना ही नाक सजालो,
नाक अच्छा नहीं लगता इज्जत बिना ।।४।।
चाहे कितना ही होठ सजालो,
होठ अच्छे नहीं लगते भजन बिना ।।५।।
चाहे कितना ही हाथ सजालो,
हाथ अच्छे नहीं लगते दान बिना ।।६।।
चाहे कितना ही पैर सजालो,
पैर अच्छे नहीं लगते सत्संग बिना ।।७।।
चाहे कितना ही अंग सजालो,
अंग अच्छे नहीं लगते शील बिना ।।८।।
चाहे कितना ही रूप सजालो,
रूप अच्छा नहीं लगता गुण बिना ।।९।।
चाहे कितना ही वैभव सजालो,
वैभव अच्छा नहीं लगता शांति बिना ।।१०।।
चाहे कितना ही देह सजालो,
देह अच्छा नहीं लगता 'विनय' बिना ।।११।।

भावना दिन रात मेरी

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का, व्यवहार बारम्बार हो ।।

धर्म के विस्तार से, संसार का उद्धार हो ।
पाप का परित्याग हो और पुण्य का संचार हो ।।

ज्ञान की सद् ज्योति से, अज्ञानतम का नाश हो ।
धर्म के सद् आचरण से, शांति का आभास हो ।।

शांति सुख-आनन्द का, प्रत्येक घर में वास हो ।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो ।।

रोग भय और शोक, होवे दूर सब परमात्मा !
ज्योति से परिपूर्ण होवे, सब जगत् की आत्मा ।।

* * *

व्यर्थ है-

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है ।
विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है ।
उपयोग न आये तो धन व्यर्थ है ।
साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है ।
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है ।
होश न हो तो जोश व्यर्थ है ।
परोपकार न करे तो जीवन ही व्यर्थ है ।

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।।
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ।।

विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य-भाव-धन रखते हैं ।
निज-पर के हित-साधन में, जो निशदिन तत्पर रहते हैं ।।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के, दुःख-समूह को हरते हैं ।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ।।

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ।।

मैत्री-भाव जगत् में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे ।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे ।।
दुर्जन क्रूर कुमार्ग-रतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे ।
साम्य-भाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ।।

गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ।।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ।।

कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे ।।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ।।

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे ।
पर्वत-नदी-श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ।।
रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे ।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे ।।

सुखी रहें सब जीव जगत् के कोई कभी न घबरावे ।
वैर, पाप, अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे ।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म-फल सब पावें ।।

ईति-भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ।।
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे ।
परम अहिंसा धर्म जगत् में, फैल सर्व-हित किया करे ।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे ।।
बनकर सब "युगवीर" हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करे ।
वस्तु-स्वरूप विचार खुशी से, निजानंद में रमा करे ।।

बारह भावना

१. अनित्य-भावना- (भावक : भरत चक्रवर्ती)

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ।।

२. अशरण-भावना- (भावक : अनाथी मुनि)

दल-बल देवी देवता, मात-पिता परिवार ।
मरती विरियाँ जीव को, कोई न राखनहार ।।

३. संसार-भावना- (भावक : धन्ना-शालिभद्र)

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा-वश धनवान ।
कहुं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ।।

४. एकत्व-भावना- (भावक : नमिराजर्षि)

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय ।
यों कबहुँ या जीव को, साथी-सगो न कोय ।।

५. अन्यत्व-भावना- (भावक : मृगापुत्र)

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय ।
घर-संपत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन-लोय ।।

६. अशुचि-भावना- (भावक : सनत्कुमार)

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पिंजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन-गेह ।।

७. आस्रव-भावना- (भावक : समुद्रपाल मुनि)

जगवासी घूमें सदा, मोह-नींद के जोर ।
सब लूटे नहीं दीसता, कर्म-चोर चहुँ ओर ।।

८. संवर-भावना- (भावक : हरिकेशी अणगार)

मोह-नींद जब उपशमे, सद्गुरु देय जगाय ।
कर्म-चोर आवत रुके, तब कुछ बने उपाय ।।

९. निर्जरा-भावना- (भावक : अर्जुनमाली अणगार)

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर ।।
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार ।
प्रबल पंच-इंद्रिय-विजय, धार निर्जरा-सार ।।

१०. लोक-भावना- (भावक : शिवराज ऋषीश्वर)

चौदह राजु उत्तंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
ता में जीव अनादि ते, भरमत है बिन ज्ञान ।।

११. बोधि-दुर्लभ-भावना- (भावक : भ. आदिनाथ के ९८ पुत्र)

धन-जन-कंचन-राजसुख, सबहि सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ।।

१२. धर्म-भावना- (भावक : धर्मरुचि अणगार)

याचे सुर-तरु देय सुख, चिंतित चिंता रैन ।
बिन याचे बिन चिंतिये, धर्म सकल सुख देन ।।

* * *

राजस्थानी दोहा

तन की तृष्णा अल्प है, तीन पाव या सेर ।
मन की तृष्णा अमिट है, गले मेर के मेर ।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता !

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना ।।ध्रुव।।
दूर अज्ञान के हो अंधेरे,
तूं हमें ज्ञान की रोशनी दे ।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे ।
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना ।।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना ।।१।।
हम न सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।
फूल खुशियों के बांटे सभी को,
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन ।।
अपनी करुणा का जल तूं बहा के,
कर दे पावन हर मन को कोना ।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना ।।२।।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।

ए मालिक ! तेरे बंदे हम

(फिल्म : दो आँखें बारह हाथ)

ए मालिक ! तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे करम,
नेकी पर चले, और बदी से टले, ताकि हँसते हुए निकले दम,
ए मालिक तेरे बंदे हम...।।ध्रुव।।

है अंधेरा घना छा रहा, मेरा इन्सान घबरा रहा,
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर,
सुख का सूरज छुपा जा रहा,
है तेरी रोशनी में वो दम, जो अमावस को कर दे पूनम,
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुए निकले दम ।
ए मालिक तेरे बंदे हम ...।।१।।

जब जुल्मों से हो सामना, तब तूं ही हमें थामना,
वो बुराई करें, हम भलाई करें, नहीं बदले की हो भावना,
बढ़ चले प्यार का हर कदम, और मिटे वैर का ये भरम,
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुए निकले दम ।
ए मालिक तेरे बंदे हम ...।।२।।

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी,
पर तूं जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से हैं हम सभी,
दिया तूंने हमें जब जनम, हँस करके सहेंगे सितम,
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुए निकले दम ।
ए मालिक तेरे बंदे हम ...।।३।।

चैत सुदी तेरस को जन्मे

(तर्ज : देख तेरे संसार कर हालत क्या हो गई भगवान...)

चैत सुदी तेरस को जन्मे, जग में श्री वर्धमान ।
जय-जय महावीर भगवान् ।।
केवलज्ञानी धर्म धुंरधर, जैन के संत महान् ।।
जय-जय महावीर भगवान् ।।टेर।।

काली घटा हिंसा की छाई, फूट-कलह ने धाक जमाई ।
पाखण्ड छाया उस युग मांही, हुआ जन्म तेरा सुखदाई ।
सिद्धारथ राजा हरषाये, घर-घर मंगलगान, जय-जय महावीर.. ।।१।।

स्वयं इन्द्र इन्द्राणी आके, मेरूशिखर तुमको ले जाके ।
नभ से अचित सुमन बरसाके, देवी-देव हरषे पाकर के ।
छप्पनकुमारी मंगल गाके, किया जन्मकल्याण,जय-जय महावीर..।।२।।

त्रिशला माँ का पुण्य सवाया, तीन लोक में सुयश छाया ।
ऐसे पुत्र रत्न को जाया, तीर्थंकर के पद को पाया ।
घर-घर बँटी बधाई दीना, भूपति ने बहुदान,जय-जय महावीर..।।३।।

यौवन-वय में वैभव छोड़ा, झूठे जग से मुख को मोड़ा ।
कर करणी कर्मों को तोड़ा, शिवरमणी से नेहा जोड़ा ।
हिंसा-अधर्म मिटाया जग को, देकर सच्चा ज्ञान, जय-जय महावीर..।।४।।

जैन धर्म-झण्डा लहराया, सत्य-अहिंसा बिगुल बजाया ।
आज जयंति का दिन आया, 'जीत' तेरे गुण गा हरषाया ।
अहिंसा के हैं सच्चे पुजारी, जैन जगत् की शान, जय-जय महावीर..।।५।।

बधाई

(तर्ज : उड़े जब-जब जुल्फें ...)

बजे कुण्डलपुर में बधाई,
क नगरी में वीर जन्मे, महावीरजी ।।ध्रुव।।
जागे भाग है त्रिशला माँ के,
क त्रिभुवन स्वामी जन्मे, महावीरजी ।।१।।
शुभ घड़ी जन्म की आई,
क स्वर्ग से देव आये, महावीरजी ।।२।।
तेरा न्हावण करे मेरू पर,
क इन्द्र जल भर लावे, महावीरजी ।।३।।
तुझे देवियां झुलावे पालणा,
क मन में मगन होवे, महावीरजी ।।४।।
पालणा में हीरे-मोती,
क पालणा में झुला झूले, महावीरजी ।।५।।
अब ज्योति तेरी जागी,
क सूर्य-चन्द्र छिप जावे, महावीरजी ।।६।।
तेरे पिताजी लुटावे मोहरें,
क खजाना सब खुल जावे, महावीरजी ।।७।।
हम दर्शन को तेरे आये,
क पाप सब कट जावे, महावीरजी ।।८।।
बजे कुण्डलपुर में बधाई,
क नगरी में वीर जन्मे, महावीरजी ।।९।।

मन पंछी

(तर्ज : परदेसी-परदेसी...)

मन पंछी मन पंछी जाये वहाँ, जहाँ है गुरु, जहाँ है गुरु ।
मन पंछी मेरा जाये, भक्ति जगाये, गुरु गुण गाये,
शुभ आशीष पाये...मन पंछी ...।।ध्रुव।।

गुरु दर्शन बिन आंखें नीर बहाती है,
गुरु दर्शन बिन बात न कोई सुहाती है,
गुरु चरणों में आकर मन को चैन मिले,
मन हर्षे दुःख चिन्ता सारी दूर हटे,
मन पंछी, वहाँ जाये, अति हुलसाये, गुरु गुण गाये
शुभ आशीष पाये ... मन पंछी ... ।।१।।

गुरु कृपा ही शाश्वत सुख की कुंजी है,
गुरु वाणी ही जीवन धन की पूंजी है,
गुरु आज्ञा पालन ही जीवन लक्ष्य बनें,
गुरु चिन्हों पर चलने में हम दक्ष बनें,
मन पंछी वहाँ जाये, भाग्य चमकाये, गुरु गुण गाये,
शुभ आशीष पाये ... मन पंछी ... ।।२।।

गुरु वंदन भव बंधन मुक्ति दिलवाये,
जागृत हो शुभ स्पंदन युक्ति सिखलाये,
स्मृति दिन पर संकल्प, यही हम अपनायें,
गुरु कार्यों को प्रगति पथ पर ले जायें,
मन पंछी, वहाँ जाये, शक्ति जगाये, गुरु गुण गाये,
शुभ आशीष पाये ... मन पंछी ... ।।३।।

गुरु जयमल गाये जा

(तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की...)

गुरु जयमल-जयमल गाये जा ।
चरणों में शीश झुकाये जा ।। टेर ।।

आचार्य देव गुणधारी हैं ।
जन-जन के मंगलधारी हैं ।।
अन्तर में ध्यान लगाये जा ।।१।।
चरणों में शीश झुकाये जा... ।।१।।

मोहन के तात कहाये हैं ।
माता महिमा के जाये हैं ।।
लाम्बिया ग्राम लुभाये जा ।।२।।
चरणों में शीश झुकाये जा... ।।२।।

वो श्रमण सुमेरू कहलाते थे ।
वो सन्मति पथ बतलाते थे ।।
इस पथ पर कदम बढ़ाये जा ।।३।।
चरणों में शीश झुकाये जा... ।।३।।

गुरु जयमल निर्मल नाम रटो ।
कलिमल भावों से दूर हटो ।।
जन-जन को गीत सुनाये जा ।।४।।
चरणों में शीश झुकाये जा... ।।४।।

❋ ❋ ❋

जयमल गुणगान

महिमा जायो लाल ने, चांदणी सी रात में ।
मोहनदास रा बाल हो, जयमल गुरुजी ।। टेर ।।
सूरज उग्यो पूरब में, मोती निपज्या मरुधर में ।
ज्ञान री गंगा बहाई हो, जयमल गुरुजी ।।१।।
जन्म लियो थे लाम्बियां में, दीक्षा लीनी थे मेड़ता में ।
भूधर जी रा शिष्य हो, जयमल गुरुजी ।।२।।
आगम में विख्याता हो, साधु वन्दना रा रचयिता हो ।
कठिन अभिग्रह धारी हो, जयमल गुरुजी ।। ३ ।।
संयम में शूरा बणिया, प्रहर में प्रतिक्रमण भणिया ।
संघ रा मनोरथ पूरिया हो, जयमल गुरुजी ।।४।।
केई राजादिक नमिया हो, सप्त व्यसन ने तजिया हो ।
घणां जीवां ने तार्‌या हो, जयमल गुरुजी ।।५।।
चालीस मासखमण कर्‌या हो, एकान्तर तप ने वर्‌या हो ।
एक भव अवतारी हो, जयमल गुरुजी ।।६।।
रंजना आई शरणां में, पार्श्व पदम गुरु चरणां में ।
काटो भव रा बन्धन सब रा, जयमल गुरुजी ।।७।।

❋ ❋ ❋

सादगी सीखिये

खान-पान में, शादी-विवाह में, बोल-चाल में,
रहन-सहन में, वेश-भूषा में, जीवन-व्यवहार में ।

गुरु गणेश महिमा

(तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की ...)

नित गुरु गणेश को ध्याये जा,
चरणों में आनंद पाये जा ।। टेर।।

ये जन-जन के सुखकारी थे,
पूज्य पावन बहु उपकारी थे,
उनकी महिमा नित गाये जा, नित गुरु ... ।।१।।

धुली माता के नंदन थे,
पिता पूनमचन्द कुल चन्दन थे,
हुआ जन्म बिलाड़ा सुनाये जा, नित गुरु ... ।।२।।

ये तप एकान्तर धारी थे,
धारे खादी अवतारी थे,
इनकी भक्ति में समाये जा, नित गुरु ... ।।३।।

नित उठ जो इनको ध्यायेगा,
नित्य नई बधाई पायेगा,
तूं रोज दिवाली मनाये जा, नित गुरु ... ।।४।।

कहता है 'ऋषभ' ये पावन है,
जन-जन के ये मन भावन है,
तूं आनन्द रस को लुटाये जा, नित गुरु ... ।।५।।

* * *

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात है, शिल पर पड़त निसान ।।

अभ्यास करने से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है ।

सब बोलो जय जयकार आनंद ऋषिवर की

सब बोलो जय-जयकार, आनंद ऋषिवर की ।
सब बोलो जय-जयकार, आनंद गुरुवर की ।। टेर ।।

देवीचंदजी का लाड़ला, कांई मां हुलसा रा हार ...
आनंद ऋषिवर की... ।।१।।

तेरह बरस की उम्र में, कांई छोड़ दियो घर-बार ...
आनंद ऋषिवर की... ।।२।।

रत्नऋषिजी रा पाट ने, कांई दीपा दियो संसार ...
आनंद ऋषिवर की... ।।३।।

सम्यक् ज्ञान रा था रत्नाकर, कियो श्रमण संघ उद्धार..
आनंद ऋषिवर की... ।।४।।

आनंद नाम सूं आनंद बरते, होवे घर-घर मंगलाचार...
आनंद ऋषिवर की... ।।५।।

लाखों भक्तों रा कालजिया, क्यूं छोड़ गया मंझधार ...
आनंद ऋषिवर की... ।।६।।

चेत वदी दसमी जब आई, छायो दसों दिशा अंधकार...
आनंद ऋषिवर की... ।।७।।

"आदर्श" री या हैं विनती, गुरु करजो बेड़ो पार ...
आनंद ऋषिवर की... ।।८।।

* * *

आचार्य प्रवर श्री शुभ गणीश्वर

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...)

आचार्य प्रवर श्री शुभ गणीश्वर, संयम के साकार,
इनको वन्दन बारम्बार ।
छत्तीस गुण भण्डारी गुरुवर, धन्य-धन्य अणगार,
इनको वन्दन बारम्बार ।।टेर।।

सरल स्वभावी आप गुरुवर, क्षमा-दया के आप सरोवर,
शांत-दांत हो आप मुनिवर, संयम जैसा मेरु शिखर वर,
ऐसा है चारित्र आपका, ज्यों खांडे की धार, इनको वन्दन बारम्बार।।१।।

पारस गुरु जी रस बरसाते, पी कर नर-नारी हरसाते,
पदम मुनि जी ज्ञान जगाते, धरम-ध्यान का मार्ग बताते,
इन तीनों मुनिराजों का है छाया सुयश अपार, इनको वन्दन बारम्बार ।।२।।

रत्नत्रय के आराधक हो, कठिन साधना के साधक हो,
भक्तजनों के उपकारक हो, तिरते हो और तुम तारक हो,
महिमामय जीवन को नमता, यह सारा संसार, इनको वन्दन बारम्बार ।।३।।

पावन ज्यों गंगा की धारा, हिमगिरि से हो उच्च विशाला,
प्रखर सूर्य हो लिये उजाला, वाणी ज्यों अमृत का प्याला,
संतजनों से ही मिटता है, इस धरती का भार, इनको वन्दन बारम्बार ।।४।।

स्वयं तीर्थ हो तीर्थ बनाते, जो आते पावन बन जाते,
गुण सागर तुम हम गुण गाते, पार नहीं हम तेरा पाते,
गाँव-गाँव और नगर-नगर में, गूंज रहा जयकार, इनको वन्दन बारम्बार ।।४।।

- पं. मुनीन्द्रकुमार जैन

सियाट में छायो बडो ठाट

(तर्ज : देखन वाली रो नवाब...)

सियाट में छायो बड़ो ठाट, भयो म्हारा गुरुवर से ।।
गुरुवर री महिमा अपार, भयो म्हारा गुरुवर से ।। टेर ।।

गुरुवर प्यारे हैं उपकारी, पंच महाव्रत पालनकारी,
लाग्यो हैं मोटो ठाट, कहियो मैं तो प्रभुवर से ।।१।।

आचार्य कल्प श्री शुभमुनिसा, जयमल गच्छ के हैं धणीसा,
हो रही जय-जय कार, कहियो मैं तो प्रभुवर से ।।२।।

संयम शिरोमणी पारसमुनि सा, जगमग-जगमग दीप रहे सा,
जादू है वाणी में अपार, कहियो मैं तो प्रभुवर से ।।३।।

युवा संत पदममुनि सा, शिविर रा प्रचार करे सा,
बच्चे दौड़े आये द्वार, कहियो मैं तो प्रभुवर से ।।४।।

कोई तो त्याग-तपस्या करे सा, बाकी तो सीरो-खीर जीमे सा,
जाग्या है सियाट रा भाग, कहियो मैं तो प्रभुवर से ।।५।।

* * *

जन्म से मृत्यु तक दौड़ता आदमी

जन्म से मृत्यु तक दौड़ता है आदमी,
दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी,
दो रोटी, एक लंगोटी, तीन गज कच्ची जमीन,
जिन्दगी में जोड़ता है आदमी,
जोड़ते ही जोड़ते दम तोड़ता है आदमी ।

समणीजी का वंदन गीत

समणी जी को हम सब वंदन करते हैं,
मत्थएण वंदामि कहते-कहते झुकते हैं ।
वंदन करके विनय भाव अपनाएंगे,
मस्तक झुकाकर शत्-शत् वंदन करते हैं ।।

वंदन...

गुणियों को वंदन किये, आतम निर्मल होय,
ज्ञान चेतना प्रकट हो, मुक्ति मारग जोय ।
विनय भाव सद्भाव से, उज्ज्वलता अभिराम,
सबल बने निज साधना, सुधरे आतम काम ।।

वंदन...

मन वचन शुद्ध योग से, पांचों अंग नमाय,
सम्यक् दर्शन ज्ञान का वह, संयम मार्ग बताय ।
पर्युपासना मिल करे, उर में श्रद्धा धार,
रमण करे रत्नत्रय में, पावे मोक्ष का द्वार ।।

वंदन...

❋ ❋ ❋

अपना दुःख स्वयं सहन करने का साहस जीवन का अनिवार्य अंग है और उसके लिए समत्व की साधना करनी चाहिए । समता जब जग जायेगी तो राग भी दुःख देने वाले नहीं होंगे ।

❋ ❋ ❋

किस स्थिति में केवलज्ञान पाया

इलाईची कुमार ने नाचते-नाचते
आषाढ़भूति ने नाटक करते-करते
गौतमस्वामी ने विलाप करते-करते
पृथ्वीचन्द्र राजा ने राज सिंहासन पर बैठे-बैठे
मरुदेवी माता ने हाथी के होदे पर बैठे-बैठे
रतिसार कुमार ने पत्नि को सजाते-सजाते
कुमारपुत्र ने घर में बैठे-बैठे
साध्वी पुष्पचूला ने गोचरी लाते-लाते
अयंवता मुनि ने इरियावाही करते-करते
भरत चक्रवर्ती ने आरसी भवन में
अरणक मुनि ने नदी में उतरते-उतरते
प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ने ध्यान करते-करते
स्कंदक मुनि के पाँच सौ शिष्यों को घाणी में पीलते-पीलते
खंदक मुनि ने राज सेवकों द्वारा चमड़ी उतारते-उतारते
गजसुकुमाल ने सिर पर अग्नि जलते-जलते

❋ ❋ ❋

जिन्दगी में माँ, महात्मा और परमात्मा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है । जीवन में तीन आशीर्वाद जरूरी है- बचपन में माँ का, जवानी में महात्मा का और बुढ़ापे में परमात्मा का । माँ बचपन को संभाल देती है, जवानी में नीयत बिगड़े तो उपदेश देकर महात्मा सुधार देता है और बुढ़ापे में मौत बिगड़े तो परमात्मा संभाल लेता है । धर्म, पुराण और इतिहास में से अगर ये तीन शब्द निकाल दें तो वे महज कागजों के पुलिन्दें मात्र रह जायेंगे ।

नैतिकता के स्वर

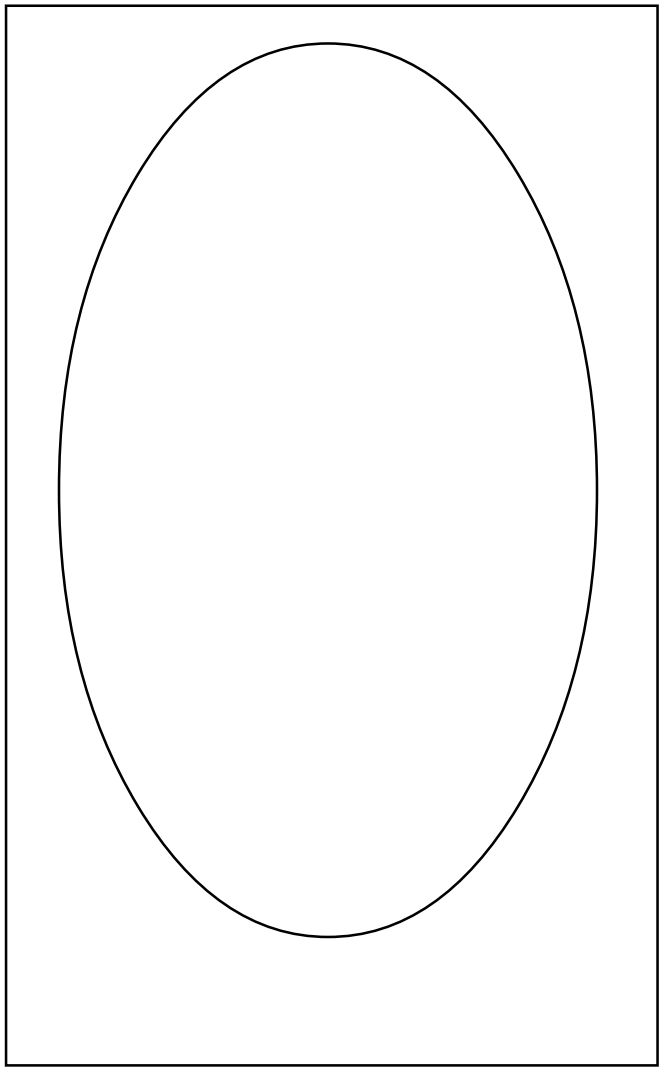

संयममय जीवन हो

नैतिकता की सुर-सरिता में, जन-जन मन पावन हो,
संयममय जीवन हो ।। ध्रुव ।।
अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा ।
वर्ण-जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा ।
छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस परिवर्तन हो ।।
संयममय जीवन हो ।।१।।
मैत्री भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए ।
समता-सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए ।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो ।।
संयममय जीवन हो ।।२।।
विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी ।
नर हो नारी, बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी ।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो ।।
संयममय जीवन हो ।।३।।
प्रभु बनकर के ही प्रभु की, पूजा कर सकते हैं ।
प्रामाणिक बनकर ही संकट-सागर तर सकते हैं ।
आज अहिंसा-शौर्य-वीर्य संयुत जीवन-दर्शन हो ।।
संयममय जीवन हो ।।४।।
सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा ।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो ।।
संयममय जीवन हो ।।५।।

जो माँ की ना सुनेगा

(तर्ज : गरीबों की सुनो, वो तुम्हारी....)

जो माँ की ना सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा ।
जो माँ को ठुकरायेगा, वो दर-दर की ठोकर खायेगा ।।
जो माँ की ना सुनेगा...।।टेर।।

जिस माता ने जनम दिया है, उस माता को भूल गया,
जिस माता ने बड़ा किया है, उस माता से रूठ गया,
तकलीफ कितनी उसने सही थी, नौ महीने गर्भ में लेकर फिरी थी,
याद करो वो हाल पुराना, जब तूं था नहीं इतना सयाना[२],
तुझ पर माँ का कितना ऋण है, कैसे इन्हें चुकायेगा ।
जो माँ की ना सुनेगा..।।१।।

बचपन में जब सबसे पहले माँ-माँ कहके बुलाया था,
तब ही तेरी माता का मन मोरनी बनके डोला था,
तेरे पीछे वो तो पागल बनी थी, ममता की छांव का बादल बनी थी,
और जो माता को दिल में बिठाता, ममता के कर्ज को जल्दी चुकाता [२]
स्वर्ग है माता के चरणों में, समझेगा वो पायेगा ।
जो माँ की ना सुनेगा..।।२।।

मात-पिता भाई-बहना आये तो घर में जगह नहीं,
सास-ससुर साला-साली आये तो बनेगी खीर-पुड़ी,
शर्म करो ओ माँ के सपूतों, कुछ तो समझो ओ दीवानों[२],
अपनों को ही भूल गया तू, अपनों से ही रूठ गया तू,

उस माता से रूठ न जाना वो ही जन्म दाता है ।
जो माँ की ना सुनेगा..।।३।।

धन-दौलत के चक्कर में तेरे अपनों का मन डोल सके,
भाई-बीवी और बहना सगे सम्बंधी रूठ सके,
माँ की नजर में फेर नहीं है, पैसे या रूप का भेद नहीं है,
चाहे ये दुनियाँ तुझसे ही रूठे, तेरे सारे नाते ही टूटे[२],
साथ रहेगी तेरी माता ही आंधी - तूफान में ।
जो माँ की ना सुनेगा..।।४।।

तेरी माता तुझे सुलाने सारी रात वो जागी थी,
जब-जब तू बीमार हुआ तो उसकी आँखें रोई थीं,
खुद ने न खाया-पिया, तुझको खिलाया,
सारी सारी रात तुझे गोद में सुलाया,
जब-जब रोया गले से लगाया, अंगुली पकड़कर चलना सिखाया[२]
माता के उन उपकारों को, कैसे कोई चुकायेगा ।
जो माँ की ना सुनेगा..।।५।।

* * *

समय को पहचानने वाले विद्यार्थी विद्वान् बन गये ।
समय को पहचानने वाले व्यापारी धनवान बन गये ।।
समय को व्यर्थ मत गंवाओ उसका सदुपयोग करो ।
समय को पहचानने वाले ऋषि भगवान् बन गये ।।

* * *

भूतकाल सपना है, वर्तमान काल अपना है,
भविष्य काल कल्पना है ।

माँ-बाप को भूलना नहीं

भले ही हर बात को भूल जाईये, माँ-बाप को भूलना नहीं;
अनगिनत हैं उपकार इनके, यह कभी भूलना नहीं ।

धरती के सभी देवताओं को पूजा, तभी आपकी सूरत देखी;
इन पवित्र व्यक्तियों के दिल, कठोर बनकर तोड़ना नहीं ।

अपने मुँह का कौर निकाल, तुम्हें खिलाकर बड़ा किया;
इन अमृत देने वालों के सामने, ज़हर कभी उगलना नहीं ।

खूब प्यार किया तुमसे, तुम्हारी हर ज़िद पूरी की;
ऐसे प्यार करने वालों से, प्यार करना कभी भूलना नहीं ।

चाहे लाखों कमाते हो, लेकिन माँ-बाप खुश न रहें;
लाख नहीं वो खाक है, यह मानना भूलना नहीं ।

भीगी जगह में खुद सो कर, सुख से सुलाया तुम्हें;
ऐसी अनमोल आँखों को, भूल से कभी भिगोना नहीं ।

फूल बिछाये प्यार से, जिन्होंने तुम्हारी राहों पर;
ऐसी चाहना करने वालों की राहों के, काँटे कभी बनना नहीं ।

दौलत से हर चीज़ मिलेगी, लेकिन माँ-बाप मिलते नहीं;
इनके पवित्र चरणों के प्रति, सम्मान कभी भूलना नहीं ।

संतान से सेवा चाहे तो, संतान बनकर सेवा कर;
जैसी करनी वैसी भरनी, यह न्याय कभी भूलना नहीं ।

* * *

ज्वाला नहीं, ज्योति बनो, कांटे नहीं, फूल बनो ।

बुरा किसी का मत करना

(लय : दिल लूटने वाले जादूगर ...)

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना ।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना ।। ध्रुव ।।

यदि सत्य मधुर ना बोल सको तो, झूठ कठिन भी मत बोलो ।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो ।।
बोलो तो, पहले तुम तोलो, फिर मुख-ताला खोला करना ।।१।।

यदि घर न किसी का बांध सको तो, झोंपडियां न जला देना ।
यदि मरहम-पट्टी कर न सको तो, खार नमक न लगा देना ।।
यदि दीपक बनकर जल न सको तो, अंधकार भी मत करना ।।२।।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, कांटे बनकर न बिखर जाना ।
मानव बनकर सहला न सको तो,दिल भी किसी का दुखाना ना ।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना ।।३।।

"मुनि पुष्प" अगर भगवान नहीं तो, कम से कम इंसान बनो ।
किंतु न कभी शैतान बनो और कभी न तुम हैवान बनो ।।
यदि सदाचार अपना न सको तो, पापों में पग मत धरना ।।४।।

* * *

भगवान् की प्रार्थना करने वाला पुजारी ।
भगवान् से कामना करने वाला व्यापारी ।
भगवान् से याचना करने वाला भिखारी ।

* * *

बोल सको तो मीठा बोलो

बोल सको तो मीठा बोलो,
कटु बोलना मत सीखो ।
बचा सको तो जीव बचाओ,
जीव मारना मत सीखो ।।
बता सको तो पथ बताओ,
पथ भटकना मत सीखो ।
जला सको तो दीप जलाओ,
हृदय जलाना मत सीखो ।
बिछा सको तो फूल बिछाओ,
शूल बिछाना मत सिखो ।
मिटा सको तो अहंकार मिटाना
प्यार मिटाना मत सिखो ।।
कमा सको तो पुण्य कमाना ।
पाप कमाना मत सिखो ।।
लगा सको तो बाग लगाना ।
आग लगाना मत सिखो ।।
दे सको तो जीवन दे दो,
जीवन लेना मत सीखो
बोल सको तो सच बोलो,
झूठ बोलना मत सिखो ।।

- अध्यात्म-अमृत से साभार

✲✲✲

बदले युग की धारा

बदले युग की धारा,
नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो, अणुव्रतों के द्वारा...बदले...।। ध्रुव ।।

मानवीय मूल्यों की रक्षा, अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता, प्रामाणिकता, उसका अमल हृदय है ।
हिंसा के इस गहन तिमिर में, अणुव्रत एक उजारा ।।
बदले युग की धारा ।।१।।
धार्मिक है, पर नहीं है नैतिक बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का, यह कैसा अभिनय है ?
इस उलझन का धर्म क्रांति ही, है कमनीय किनारा ।।
बदले युग की धारा ।।२।।
मूल्यपरक शिक्षा के युग में, संयम का अंकन हो,
सत्य-अहिंसा से आप्लावित, जन-जन का जीवन हो ।
भोगवाद के चक्रवाद से, सहज मिले छुटकारा ।।
बदले युग की धारा ।।३।।
व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो, स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का, उपचार अणुव्रत देगा ।
प्रकटे अब परमार्थ चेतना, उपकृत हो जग सारा ।।
बदले युग की धारा ।।४।।
करे प्रबल पुरुषार्थ सभी में अभिनव आस्था जागे,
जोड़े सब के अंतर मानस को करुणा के धागे ।
'तुलसी' मैत्री मंत्र अचल हो, नभ में ज्यों ध्रुव्र-तारा ।।
बदले युग की धारा ।।५।।

जिन धर्म के प्यारे लोगों

(तर्ज : ए मेरे वतन के लोगों)

जिन धर्म के प्यारे लोगों, यह सुन लो अमर कहानी ।
हम भूल गये हैं जिनको, जरा याद करो कुर्बानी ।।टेर।।

वो सेठ सुदर्शन जिस पर, रानी ने कलंक लगाया ।
सूली पर चढ़कर जिसने, महामंत्र का ध्यान लगाया ।।
सूली का बना सिंहासन, सब लोग हुवे शिरनामी ।।१।।

बारह वर्ष अंजना की, प्रीतम से हुई जुदाई ।
इक पल प्रीतम का पाया, तूफान की आँधी आई ।।
घर छोड़ जंगल में भटकी, आज वो अमर कहानी ।।२।।

विजय सेठ विजया सेठानी, नई उमर थी नई जवानी ।
ब्रह्मचर्य आजीवन दोनों के, कैसे बीती जिन्दगानी ।।
क्या प्रेम था पति-पत्नी का, देवों ने महिमा बखानी ।।३।।

राजा ने बलि चढ़ाने, ब्राह्मण का लाल खरीदा ।
वो अमरकुमार नन्हासा, जल्लाद ने खंजर खींचा ।।
नवकार का ध्यान लगाते, वो धरती पर थर-थर कांपी ।।४।।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र राजा, एक पल में बने भिखारी ।
मरघट पे बिक गया राजा, और बिक गई तारा रानी ।।
वो अटल रहे थे सत्य पर, फिर हो गई सब आसानी ।।५।।

एक राजा की दो बेटी, सुरसुन्दरी-मैना प्यारी ।
मैना पे क्रुद्ध हो राजा ने, कोढ़ी संग कर दी शादी ।।
पति संग तप किया था उसने, हो गई काया सुहानी ।।६।।

सामायिक साधना

(तर्ज : नवीन रसिया)

करलो सामायिक रो साधन जीवन उज्ज्वल होवेला ।।टेर।।

तन का मैल हटाने खातिर, नित प्रति न्हावेला ।
मन पर मल चहुं ओर जमा है, कैसे धोवेला... करलो...।।१।।

बाल्यकाल में जीवन देखो, दोष न पावेला ।
मोह-माया का संग किया से दाग लगावेला... करलो...।।२।।

ज्ञान-गंग ने क्रिया धुलाई, जो कोई धोवेला ।
काम-क्रोध-मद-लोभ, दाग को दूर हटावेला... करलो...।।३।।

सत्संगत और शांत स्थान में, दोष बचावेला ।
फिर सामायिक साधन करने शुद्धि मिलावेला... करलो...।।४।।

दोय घड़ी निज-रूप रमण कर, जग बिसरावेला ।
धर्मध्यान में लीन होय, चेतन सुख पावेला... करलो...।।५।।

सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला ।
निज सुधार से देश, जाति सुधरी हो जावेला... करलो...।।६।।

गिरत-गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला ।
करत-करत अभ्यास मोह को, जोर मिटावेला... करलो...।।७।।

* * *

अपने घर का दाना ठीक, दाल रोटी खाना सीख ।
राग विदेशी तज दे बंदे, देशी राग में गाना सीख ।।

ऐसा अपना घर हो

गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो
ऐसा अपना घर हो ।
कथनी-करनी रहे एक सी, नहीं जिसमें अंतर हो
ऐसा अपना घर हो ।। ध्रुव ।।

विनय-विवेक की नींव हो जिसमें, प्रेम-प्यार की छत हो,
रहे मधुर व्यवहार सभी से, वचनों में अमृत हो,
सहनशीलता का हो आंगन, कटुता का न जहर हो... ।।१।।

उस घर में मजबूत बने, विश्वास की सभी दिवारें,
कठिन घड़ी में बन जाये सब, एक दूजे के सहारे,
खिड़की हो अनुशासन की तो, विघटन का न असर हो... ।।२।।

मर्यादा की चार दिवारी में सब मर्यादित हो,
सादा जीवन उच्च विचारों से सब प्रमुदित हो,
बड़े जनों का हो आदर और छोटों पर भी महर हो ... ।।३।।

सेवा और संयोग का जिसमें हो दरवाजा सुन्दर,
चित्त नहीं चारित्र की पूजा हो जिस घर के अन्दर,
धर्म के सम्मुख रहे सदा सब, पापों से जहाँ डर हो ... ।।४।।

स्वच्छ आचरण की हो बहारें, ज्ञान प्रकाश हो पूरा,
मोक्ष लक्ष्य की सीढ़ी हो तो काम रहे न अधूरा,
'गौतम' से प्रभु फरमाते है, अब तो शाश्वत घर हो ... ।।५।।

❋ ❋ ❋

सुखी ना मिलियो एक भी

मैं तो ढूंढ्यो रे सहु जग मांय, सुखी ना मिलिया एक भी ।। टेर ।।
हाट, हवेली भर्‌या खजाना, भोगण वालो नाय ।
भाटो-भाटो देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय ।।१।।
पइसो पायो नाम कमायो, करे सवाई बात ।
कंवर साब कपूता जन्म्या, बापूजी रोवे दिन-रात ।।२।।
पदमण मिली दयालू कहीं पर, सेठ न ल्हावो लेय ।
मिली कर्कशा नार कर्म स्यूं, खावे न खावण देय ।। ३।।
छप्पर पलंग है महल मालिया, जाली झरोखादार ।
बिना कंथ के झूरे कामणी, खारा लागे रे घर-बार ।। ४।।
करी कमाई लक्ष्मी पाई, बंगला मोटर कार ।
बिना नार के लगे अलूणां, छोड़ गई रे मझधार ।।५।।
देह मिली देवा सी सुन्दर, रोग न छोड़े लार ।
क्रोड़पत्यां ने खाता देख्या, पालक की सब्जी लूखो आहार ।।६।।
पलटन सी बढ़ रही घर में, पर आमदनी नाय ।
कोई के कन्या चार कंवारी, कोई कमाबा नहीं जाय ।।७।।
एक उदर का जाया लड़े नित, कोई के बहु परिवार ।
कोई कंवारा कोई दुःखिया, कोई दिवाल्या कर्जादार ।।८।।
धन-वैभव पद पायो ऊंचो, नहीं बोलण का ढंग ।
कवि-पंडित-लेखक-ज्ञानी ने, पइसां स्यूं देख्या तंग ।।९।।
कोई के कांई कमी है घर में, कोई के कांई दुःख ।
इण संसार समुन्दर मांही, दुःख तो घणां ने थोड़ा सुख ।।१०।।
इण जगती स्यूं जो मुख मोड्या, लाग्या धर्म के पंथ ।
मन ने जीत्या 'जीत' जगत में, सांचा सुखी है निर्ग्रन्थ ।।११।।

जीवन का भरोसा नहीं

(तर्ज : बाबुल का ये घर बहना...)

जीवन का भरोसा नहीं, कब मौत आ जायेगी ।
काया और माया तेरी, तेरे साथ न जायेगी ।। ध्रुव ।।

काया पे गुमान न कर, ये तो माटी का खिलौना है ।
चाहा तेरा होना नहीं, लिखा भाग्य का होना है ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।१।।

तेरा और मेरा छोड़ दे, जीवन ज्योति बुझ जायेगी ।
झूठी है ये माया नगरी, ये तो पल में बदल जायेगी ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।२।।

राजा है तो रंक कोई, सब किस्मत का खेला है ।
दौलत पर गुमान न कर, ये तो हाथ का मैला है ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।३।।

दो दिन का मेला है, बस माया का खेला है ।
जाये कोई साथ नहीं, जाना तुझको अकेला है ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।४।।

रिश्तों पे भरोसा न कर, दुनियाँ से तूं आया न कर ।
तरना है जो भवसागर तो प्रभु का सुमिरण कर ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।५।।

पलक झपकते ही, दुनियाँ तुझे ठुकरायेगी ।
भक्ति की शक्ति से ही, जीवन नैया तिर जायेगी ।।
जीवन का भरोसा नहीं ।।६।।

मनुष्य जन्म अनमोल रे

मनुष्य जन्म अनमोल रे, मिट्टी में ना रोल रे,
अब जो मिला है, फिर ना मिलेगा,
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं रे ।। टेर ।।
तू सत्संग में जाया कर, गीत प्रभु के गाया कर,
सांझ सबेरे बैठ के बंदे, प्रभु का ध्यान लगाया कर,
नहीं लगता कुछ मोल रे... मिट्टी में ना... ।।१।।
तूं बुलबुला है पानी का, मत कर जोर जवानी का,
सोच समझकर चलना रे बंदे, पता नहीं जिन्दगानी का,
मन की आँखें खोल रे... मिट्टी में ना... ।।२।।
मतलब का संसार है, इसका न कोई एतबार है,
संभल-संभल कर चलना रे बंदे, फूल नहीं अंगार है,
सबसे मीठा बोल रे... मिट्टी में ना... ।।३।।
गुरुदेव गुणवान हैं, ज्ञान के भंडार हैं,
जो भी इसकी शरण में आवे, करदे बेड़ा पार हैं,
ज्ञान है अनमोल रे... मिट्टी में ना... ।।४।।

* * *

मानवता का मंगल प्रतीक जैन

अज्ञानी को जीवन-निर्माणार्थ ज्ञान देना मानवता है ।
ज्ञान के साधन विद्यालय आदि खोलना मानवता है ।
भूले हुए को मार्ग बताना मानवता है ।
भूखे प्यासे को सतुष्ट करना मानवता है ।
जैन मानवता का मंगल प्रतीक है ।

मिट्टी में मिलेगी मिट्टी

(तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर ...)

मिट्टी में मिलेगी मिट्टी, पानी में पानी, चेत रे गुमानी,
पानी का बबूला जैसी, तेरी जिन्दगानी ।। टेर ।।

महल खजाने कोई काम ना आयेंगे,
मरने के बाद तेरे साथ ना जायेंगे ।

माता-पिता, भाई-बन्धु, नाना अरु नानी, चेत रे गुमानी...।।१।।

खाना-पीना-सोना ये तो पशुओं का काम है,
दिया नहीं दान तूने, लिया नहीं नाम है ।

यही तो दो बात तूने, दिल में ना मानी, चेत रे गुमानी...।।२।।

रही ना निशानी यहाँ, शाह और वजीरों की,
एक-एक श्वांस तेरे, लाख-लाख हीरों की ।

ढ़ाई गज कपड़ा डोली हो जाये रवानी, चेत रे गुमानी...।।३।।

करले भलाई जग में काम तेरे आयेगी,
मरने के बाद तुझको दुनियाँ सरायेगी,

हमने सुनाई तुमको, छोटी-सी कहानी, चेत रे गुमानी...।।४।।

* * *

सत्साहित का सतत् स्वाध्याय दैनिक जीवन का
अनिवार्य अंग होना चाहिए ।
धर्म का उद्देश्य मानव को पथ भ्रष्ट होने से बचाना है ।
जो होता है वह अच्छे के लिए ही होता है ।
अपत्तियां मनुष्य की कसौटी है बिना इनसे खरा उतरे कोई
सफल नहीं हो सकता है ।

श्रवण कुमार का भजन

लाला म्हांने विलखता छोड़, गयो किम तोड़, आफत कइं आ पड़ी,
बेटा श्रवण आ, पानी तो म्हांने पा, जोऊँ थारी बाटड़ी ।। टेर ।।

पिता-मात जनम का अंधा, सेवा करता है श्रवण बन्दा,
तन-मन से सेवा कीनी, घर नार प्यारी तज दीनी ।
चारों धाम[२] तीरथ करवाया, वनों में ले आया,
खांदे पे रखी काँवड़ी...।।१।।

श्रवण ने शीश झुकायो, वो नीर भरण को धायो
पानी में घड़ो डुबायो, भड़ भड़ वो शब्द सुनायो,
श्रवण ने घड़ो उठायो, दशरथ ने बाण चलायो,
बाण लाग्यो[२] कलेजा मॉही, सह्यो नहीं जाई,
मिच गई दोनों आँखड़ी...।।२।।

दशरथ सरवर तट आयो, श्रवण को देख घबरायो,
बोले करमन की गति न्यारी, मैं पाप कियो है अति भारी,
मैं जाण्यो[२] म्हारो शिकारी, बाण दियो मारी,
जुलम की बातड़ी...।।३।।

श्रवण दशरथ से बोले, म्हारो माता-पिता में जीव डोले,
मामाजी वन में जाज्यो, म्हारा मात-पिता ने पानी पाज्यो
म्हारो कीजो[२] चरणों में प्रणाम, जावूंगा निज धाम,
लंबी तो खींची सांसडी...।।४।।

जल बिन जीवड़ो घबरायो, म्हारो लाल हजूं नहीं आयो,
म्हारा प्राण कंठ बीच अटके, बेटा कांई मारग भूले भटके,
आ छाई अंधारी रात, कोई न थांरे साथ,
कोइक कीधी घातड़ी...।।५।।

जल लेकर दशरथ आयो, श्रवण को हाल सुनायो,
तूं तो हटजा रे दुष्ट हत्यारा, कुण देखे है मुखड़ा थारा,
म्हांको यौवन धन लियो लूट, कर्म गया फूट,
आंधा की तोड़ी पॉखड़ी...।।६।।
राजा अन्त समय थांरो आसी, थांरे पुत्र एक नहीं पासी,
श्री राम जायेंगे वन में, तेरे माखियां भणेगी सारा तन में,
आंधा-आंधी श्राप सुणायो, जीव घबरायो,
श्रवण की तोड़ी आंसड़ी...।।७।।
राजा क्रिया तीनों का करवाया, वो तो अवधपुरी में आया,
राजा मन ही मन पछताया, नहीं भेद किसी को बताया,
यह भजन मूला ने बनाया, भगत मन भाया,
प्रभु से जोड़ी प्रीतड़ी...।।८।।

* * *

बडा महत्व होता है

सीने में धड़कन का, जीवन में यौवन का,
यादों में बचपन का, हाथों में कंगन का बड़ा महत्व होता है।
परखने में जौहरी का, राष्ट्र में प्रहरी का,
सफाई में महरी का, गांव में चौधरी का बड़ा महत्व होता है।
प्रतियोगता में पुरस्कार का, प्रसंगों में चमत्कार का,
चुनावों में प्रचार का, मुलाकातों में नमस्कार का बड़ा महत्व होता है।
भाषाओं में हिन्दी का, माथे में बिंदी का,
चुनाव में प्रतिद्वंदी का, शिव मन्दिर में नंदी का बड़ा महत्व होता है।
खाने में आचार का, टी. वी. में समाचार का,
स्कूल में प्राचार्य का, व्यवहार में सदाचार का बड़ा महत्व होता है।

जरा कर्म देखकर करिये

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये)

जरा कर्म देख कर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है!

बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छीका लगा दिया खाने का।
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं दाने का!
इस युग के प्रथम अवतार है, बिन भोग्या न छूटी लार है।

त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में, दास के कानों में शीषा डाला।
कर्म निकाचित बांधा वीर ने, तीर्थंकर थे पर ना टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार है, दिये कानों में कीले डार है।।

सौतेली माँ बन सौत के सुत सिर बाटिया बांध के प्राण हरा।
नीनाणु लाख भवों के बाद में, गजसुकुमाल बन कर्ज भरा।
चढ़ा सोमिल को क्रोध अपार हैं, रखे सिर पे धधकते अंगार है।।

किसी को मारे किसी को लूटे, काम करे अन्यायी का।
जैसा करेगा वैसा भरेगा, लेखा है राई-राई का।
नहीं छोटे-बड़े की दरकार है, चाहे करले तूं जतन हजार है।।

पग पग पे संयम रख तूं वचन से बोल तूं बोल भलाई का।
धर्म से प्रीतकर, कर्मों को "जीत" कर, बन जा पथिक शिवराही का।
यह सुख-दुःख भरा संसार है, यहाँ कर्मों का ही व्यापार है।।

* * *

राजस्थानी सरगम

भोला आत्मा रे दाग लगााइजे मती

भोला आत्मा रे दाग लगाइजे मती
उजली ने मैली बनाइजे मती ।। टेर ।।
आत्मा है थारी असली सोनो,
सोने में खोट मिलाइजे मती ।।१।।
आत्मा है थारी अमृत कूपी,
अमृत में जहर मिलाइजे मती ।।२।।
आत्मा है थारी ज्ञान री दीवली,
फूंक मार इणने बुझाइजे मती ।।३।।
आत्मा है थारी ज्ञान री गुदड़ी
पाप री खोल चढ़ाइजे मती ।।४।।
आत्मा है थारी ज्ञान री पावड़ी
चढ़ मुक्ति जावो पाछा आइजे मती ।।५।।

* * *

करुणा

संस्कृतियाँ वे ही श्रेष्ठ हैं, जो करुणामयी है ।
सभ्यता का प्रधान सोपान है- करुणा ।
कोमल, तरल, सरल बाल मन ही करुणा का पाठ शीघ्रता
और गहराई से सीख सकता है । करुणाविहीन जीवन पत्थर है ।
विज्ञान-सुविज्ञान तभी है जब वह करुणामय है ।
करुणा ही सृष्टि के कण-कण से, तृण-तृण से,
पशु-पक्षी से मानव को जोड़ती है ।
वही साहित्य शाश्वत है, जिसमें करुणा की धारा प्रवाहित है ।

थने धीरे से समझाऊं

थने धीरे से समझाऊं, थने छाने से समझाऊं,
थने मीठी वाणी सुनाऊं रे चेतनिया, तू बार-बारे कांई भटके ।।
तूं आतम धन में भरपूर, फिर भी किस्या नशा में चूर ।
तूं लाखीणो सो जनम गंवायो रे चेतनिया, तू बार-बारे कांई भटके ।।
बाहर घर में घणो उजालो, आत्मा में घोर अंधेरो,
तूं तो ज्ञान-दीपक री ज्योत जगाले रे चेतनिया, तू बारे-बारे कांई भटके ।।
ठंडा-ठंडा जल में न्हावे, तेल-खुशबू को लगावे,
तूं बढ़िया-बढ़िया कपड़ा बणावे रे चेतनिया, तू बारे-बारे कांई भटके ।।
मखमल की गादिया पर सोवे, घणो-घणो सुख तन ने देवे,
तूं तो झूंठी-सांची बैठ गप्पां लड़ावे रे चेतनिया, तू बार-बारे कांई भटके ।।
मोटर-गाड़ी चढ़-चढ़ घूमे, नाटक-सिनेमा नित झूमे,
झूठी मस्ती में पागल बण जावे रे चेतनिया, तू बारे-बारे कांई भटके ।।
इण शरीर री भूख मिटावे, तरह-तरह रा भोजन खावे,
इण आत्मा री भूख कैसे मिटे रे चेतनिया, तू बारे-बारे कांई भटके ।।
इण आत्मा री निर्मलता च्हावे, सांचो सुख तो प्राणी पावे,
तूं तो आतम-ज्ञान री ज्योत जगाले रे चेतनिया, तू बारे-बारे कांई भटके ।।

* * *

पैर फिसल जाए तो संभलना मुश्किल है ।
कलंक लग जाए तो धुलना मुश्किल है ।
हार गया एक बार मानव जीवन में -
तो पुनः मानव भव मिलना मुश्किल है ।।

पायो रतन अमोल

पायो रतन अमोल, हीरो हारजो मती ।
निकल्या चौरासी चक्कर में, गोतां खावजो मती ।।टेर।।

गर्भावास में सड़ियो-गलियो, बार-बार दुःख पायो ।
थे तो बारे आया सूं बात, विसारजो मती ।।१।।

आगे धंधो पीछे धंधो, धंधा में फिर धंधो ।
थे तो धंधा मांही धरम करणो, भूलजो मती ।।२।।

बात-बात में क्रोध न करणो, मन ने पाछो मारणो ।
कोई कटुक केवे तो पाछा, बोलजो मती ।।३।।

चिन्ता-फिक्र तो भूल न करणी, नहीं कोई आणी-जाणी ।
थे तो अशुभ कर्मों रा जाल, जोड़जो मती ।।४।।

सहन शील बन दुःख ने सहणो, सुख में नहीं फूलणो ।
कोई प्रशंसा करे तो, कोरा फूलजो मती ।।५।।

* * *

जैन धर्म की बारह शिक्षाएं

सदा जीव की रक्षा करो, मुख से सच्ची बातें कहना ।
मांग-पूछ कर वस्तु लेना, सदाचार का पालन करना ।
अपनी इच्छा सदा घटाना, व्यर्थ इधर-उधर नहीं जाना ।
सीधा-सादा जीवन जीना, कोई अनर्थ का काम न करना ।
नित उठकर सामायिक करना, जीवन में मर्यादा रखना ।
बनते पौषध आदि करना, अपने हाथों से आहार बहराना ।

भक्ति रंग रो ओ लाडू

भक्ति रंग रो ओ लाडू,[२]
सब मिलने खाइजो आज, लाडू मीठो है ।। टेर ।।

इण लाडू में मोक्ष री खांड,[२]
मत करजो आप विचार, लाडू मीठो है ।।१।।

तीर्थकर पद रावण बांध्यो,[२]
जद चाख्यो इणरो स्वाद, लाडू मीठो है ।।२।।

इण लाडू रो जबरो काम, [२]
खावे मिल जावे भगवान, लाडू मीठो है ।।३।।

बच्चा-बूढ़ा और जवान,[२]
सब हो जावो तैयार, लाडू मीठो है ।।४।।

आँख मिची ने क्यूं हो बैठा,[२]
थोड़ा नेड़ा आवो आप, लाडू मीठो है ।।५।।

महल-मलिया ए थांरा,[२]
नहीं आवेला थारे काम, लाडू मीठो है ।।६।।

खेत चिड़कलियाँ चुग जावे,[२]
होवेला पश्चाताप, लाडू मीठो है ।।७।।

"युवा मंच" यूं थाने सुणावे,[२]
प्रभु भक्ति में उड़े रे गुलाल, लाडू मीठो है ।।८।।

* * *

खावण में थारे कसर नहीं

(तर्ज : झीणी-झीणी उड़े रे गुलाल ...)

तूं तो झपटा लगावे दिन रात, खावण में थारे कसर नहीं ।।टेर।।

दिन ऊगे तूं खावण बैठे, पीये दूध और चाय, खावण में...।।१।।
मीठा रा तू करे कलेवा, पूरण प्याला भर खाय, खावण में...।।२।।

रोटी बेला रोटी जीमे, करे दोपहरी आय,खावण में...।।३।।
खरबूजा-तरबूजा खावे, ऊपर खावे मीठा बोर, खावण में...।।४।।

सांझ पड्यां जीमण ने बैठे, जमीकंद रो साग, खावण में...।।५।।
अब तो पूरो पेट भरी ने, दूध लेवे फिर मांग, खावण में...।।६।।

लिलोती री गिनती नांही, जमीकंद रो नहीं त्याग, खावण में..।।७।।
दान-पुण्य में समझे नांही, परभव में पड़सी मार, खावण में...।।८।।

धर्म करम तो खूट्यां मेल्यो, दीनी सामायिक छोड़, खावण में..।।९।।
संता रे तूं दर्शन करवा, कदैयन जावे मुखड़ो मोड़, खावण में...।।१०।।

पाप कर्म तूं कर-कर प्राणी, भरे पापां री पोट, खावण में...।।११।।
दान पुण्य रो काम पड़े तो, भाग जावे तू छोड़, खावण में...।।१२।।

संत महात्मा कहे रे भायां, सुनो धर्म री बात, खावण में...।।१३।।
खेल तमाशा देखण जावे, ऊभो रे जावे सारी रात, खावण में..।।१४।।

छोगमल्ल तो माफी चावे, सुनो हमारी बात, खावण में...।।१५।।
एक दिन तो ऐसो होसी, जलती देखे अपनी काय, खावण में...।।१६।।

❋ ❋ ❋

बोलो-बोलो मीठा बोल, व्हाला भायां-बायां रे

(तर्ज : तेजा री ...)

बोलो-बोलो मीठा बोल, व्हाला भायां-बायां रे,
ओ कड़वी बोली सूं जावे प्रीतड़ी ।। टेर ।।

घोलो-घोलो अमृत वाणी मांही घोलो रे,
बोली तो बोलो रस सेलड़ी ।।१।।

खारी मीठी बोली ही तो नरक-स्वर्ग ले जावे हो,
लक्ष्मी बसे है मीठा बोल में ।।२।।

मीठी-मीठी बादाम खावा रो दिल चावै हो,
कड़वी ने थूके हैं सारा प्राणी जी ।।३।।

मीठो-मीठो दूध पिलायो, अपणी जामण जाया हो,
वाणी तो बोलो मीठा दूध ज्यूं ।।४।।

दूध ने अजवालियो, लजायो जामण जाया रे,
कितरा रो मिटायो दुःख बोल ने ।।५।।

रूप तो बदलेला कोनी इण भव मांही हो,
बोली बदलाणी अपणां हाथ में ।।६।।

बोलो-बोलो मीठा बोल, इणहीज कारण हो,
रसना मैं लाग्या नहीं हाड़का ।।७।।

तोल-तोल, बोल-बोल, होठ कपाट बतावे हो,
बत्तीस पेरायत ऊभा सामने ।।८।।

किता-किता साधन, 'विजया' मिल्या वाणी ने,
सुख री कुंजी है अपणे हाथ में ।।९।।

टेलीफोन

म्हांरे मुगत्यां सूं आयो टेलीफोन, बुलावो आयो राम रो ।। टेर ।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं बेटां सूं बात ।
तिजोरी में धन घणो छै, दीज्यो दोनूं हाथों दान ।।१।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं बहुवां सूं बात ।
सामयिक थे रोज करीजो, पछे करीजो थांरो काम ।।२।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं बेटियां सूं बात ।
सासरिये में नाम कमाइजो, करीजो थे धर्मध्यान ।।३।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं पोतां सूं बात ।
दादीसा तो स्वर्ग सिधावे, फेरीजो माला नित एक ।।४।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं सहेल्यां सूं बात ।
सामयिक-प्रतिक्रमण करीजो, ज्ञान बढ़ाइज्यो दिन-रात ।।५।।

दोय घड़ी प्रभु ऊभा रहिजो, करूं पति सूं बात ।
सांसारिक धन्धा ने छोड़ी, सन्तां सूं बढ़ाइजो प्रेम ।।६।।

❋ ❋ ❋

कर्मों का खेल

किसी को हँसाता है, किसी को रूलाता है ।
किसी को उठाता है, किसी को गिराता है ।
कर्मों के खेल निराले हैं इस जग में -
यह अपना वार हर एक पर चलाता है ।

संसार खारो लागे

(तर्ज : कठां सूं आई सूंठ कठा सूं आयो...)

संसार खारो लागे, वैराग प्यारो लागे ।
म्हारा प्यारा सा वैरागी रो, वैराग प्यारे लागे ।। टेर ।।

थारा बाबोसा यूं पूछे, वैरागी कांई-कांई चईजे ।
म्हांरे माताजी रे हाथ रो, आज्ञा रो पत्र चईजे ।।१।।

थारा मामोसा यूं पूछे, वैरागी कांई-कांई चईजे ।
म्हारा भाभीजी रा हाथ सूं, मुँहपत्ति-डोरो चईजे ।।२।।

थारा भूरोसा यूं पूछे, वैरागी कांई-कांई चईजे ।
म्हारा भुवासा रा हाथ सूं, शास्त्र रा पन्ना चईजे ।।३।।

थारा गुरुवरसा यूं पूछे, वैरागी कांई-कांई चईजे ।
म्हारा वीर प्रभु री आज्ञा ले, दीक्षा म्हने पचखाय दो ।।४।।

❋ ❋ ❋

स्थानकवासी जैन धर्म की प्रमुख विशेषताएं

- आगमानुसरिता
- अहिंसा की प्रधानता
- यतना प्रधान
- अमूर्ति पूजकता
- शास्त्राभ्यास
- उपकरण विवेक
- आडम्बर उपेक्षा
- दया-दान आदि विवेक

संथारो

संथारो प्यारो घणो, रतन चिंतामणी जेम हो भवियण ।
पंचमी गति पहुँचावसी, हीरा जड़ियो जेम हो भवियण ।।

कायर रो काम नहीं, सूरां सम्मुख थाय हो भवियण ।
पंडित-मरण प्रताप थी, जन्म-मरण मिट जाय हो भवियण ।।

अन्न-पाणी आदरे नहीं, चौरासी जीव खमाय हो भवियण ।
धन-धन जीवन त्यागता, नहीं करे मुख सूं हाय हो भवियण ।।

करोनी शुद्ध आलोचना, लगावो मुक्ति सूं प्रेम हो भवियण ।
ऐसी बढ़ावो मन री भावना, तुरन्त होवे कल्याण हो भवियण ।।

सुरपुरी रा सूरमां, एवा करजो काम हो भवियण ।
श्रमण हजारी इम केवे, जल्दी पामो मोक्ष हो भवियण ।।

संथारो प्यारो घणो...

❋ ❋ ❋

परिवर्तन से क्या घबराना, परिवर्तन ही जीवन है ।
धूप-छाँव के उलट फेर में, हम सबका शक्ति परीक्षण है ।।

❋ ❋ ❋

नहीं किसी का अमर पट्टा, एक दिन सभी को जाना है ।
क्षणभंगुर है जीवन अपना, संतोषी बन सुख पाना है ।
जितना लिखा है किस्मत में, प्यारे उतना ही हाथ आना है ।
संस्कार मार्ग को भूल गया तो जीवन भर पछताना है ।।

❋ ❋ ❋

सगला ठाट अठै रह जासी

(तर्ज : ब्याव बीनणी बिलखूं ....)

सगला ठाट अठै रह जासी, बांसरो बणसी मांचलियो ।
जीव अकेलो जासी, साथे देसी खांडो तावणियो ।। टेर ।।

घट में थारे सांस हुवे जद, गुण थारां सगला गावे ।
कोई काको-बाबो कहने, खीर-खांड-रोटी ल्यावे ।
सांस निकलते, आंख बदलते,[२] झट मंगवासी खांपणियो...।।१।।

लाख करोड़ कमावण सारु, कितरा खोटा करम किया ।
अरिहंतां री सोगन्ध खाके, कूड़ा खाता सांच किया ।
आंख मूंदते, सांस निकलते,[२] आसी दूजो खावणियो...।।२।।

नहीं छोड़ेला कपड़ा लत्ता, मेख दांत री ले लेसी ।
थारां ही जायोड़ा थांरे, तन रे लापो दे देसी ।
धुंओ हुवेला, राख बणेला,[२] नहीं बचेला तावणियो...।।३।।

संत-सतीजी समझावे भाया, अपनी आत्मा ने जाणो ।
छोड़ो ये संसारी लफड़ा, थारी-म्हारी मत ताणो ।
सुबह शाम हो, प्रभु नाम लो,[२] सफल बणेला जीवणियो...।।४।।

❋ ❋ ❋

महत्व उसका नहीं, जो आपको प्रभावित करलें, महत्व उसी का है,
जो आपको परिवर्तित कर दे, संस्कारित कर दे ।

❋ ❋ ❋

गुणों से मनुष्य महान् होता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं ।
- चाणक्य

एकलो ही आयो रे बंदा

(तर्ज : एक बार आवोजी जंवाईजी पावणा ...)

एकलो ही आयो रे बंदा, एकलो ही जावेला ।
थारे साथे ना,[२] चाले धन-माल, जीवणो दो दिन रो ।।टेर ।।

झबक-झबक आयु रो दिवलो, बाट खातो जावे है ।
बाट बलिया पेली,[२] निज ने संभाल, जीवणो दो दिन रो ।।१।।

आयु केरी नदियां तो सन्नाटा करती बेवै है ।
पानी बेता पेली,[२] बांध ले रे पाल, जीवणो दो दिन रो ।।२।।

सगां सम्बन्धी सारा जग में, स्वार्थ रा है साथीड़ा ।
काम बणता ही,[२] बदल देवे चाल, जीवणो दो दिन रो ।।३।।

चौरासी रा चक्कर में तूं, फिर-फिर गोता खावे रे ।
जयमल जाप सूं,[२] मिटे है जंजाल, जीवणो दो दिन रो ।।४।।

* * *

छोटी चीज का महत्व

- छोटा अंकुश हाथी को नियंत्रित कर सकता है ।
- छोटा दीपक घोर अंधकार को भेद सकता है ।
- छोटा वज्र बड़े-बड़े पर्वतों को तोड़ सकता है ।
- छोटा रत्न लखपति बना सकता है ।
- छोटा मंत्र देवता को बुला सकता है ।
- छोटा यंत्र घंटों समय बचा सकता है ।
- छोटी सुई दो बड़े वस्त्रों को जोड़ सकती है ।
- छोटी कविता बड़ी सभा को स्तब्ध कर सकती है ।
- छोटा गुण भी महान् बना देता है ।

संयम पथ

(तर्ज : संयम पथ...)

हो ओ हो ओ हो ओ संयम पथ है सुहावणो,
दुनियां खारी लागे, जिणने संयम है लुभावणो २ ..हो ओ..।।टेर।।

माता-पिता रो मोह तोड़े वीर प्रभु पथ दौड़े ।
देवता भी हाथ जोड़े, जग सूं मनड़ो मोड़े ।
कायर ने तो लागे है संयम डरावणो ... हो ओ... ।।१।।

भूखा रह जावे पर नहीं सदोषी खावे ।
विहार करता थांके, पर वाहन नहीं चलावे ।
गर्मी घणी लागे पर, पंखों नहीं चलावणो ... हो ओ...।।२।।

छः काया री रक्षा खातिर, माईक में न बोले ।
साबुन सोड़ा एरियल में, वस्त्र नहीं झबोले ।
दशवैकालिक बोले रे, संसार ना बढ़ावणो ... हो ओ...।।३।।

बाग-बगीचा दर्शनीय सीन देखण नहीं जावे ।
लाईट नहीं जलावे, साधु फोटो नहीं खिचावें ।
जमाना री ओट लेने, मनमानी ना चलावे ... हो ओ...।।४।।

ओ मारग है शूरां रो, शूरवीर ही ध्यावे ।
जयमलजी ने याद करे वो, भव सागर तर जावे ।
जयमल गच्छ रो केवणो, दोष नहीं लगावणो... हो ओ...।।५।।

* * *

लेता म्हारा प्रभुजी रो नाम

(तर्ज : झीणी-झीणी उड़े रे गुलाल...)

लेता म्हारा प्रभुजी रो नाम, क दुनियां लाजां मरे ।। टेर ।।

थानक जाऊं तो पग घणां दुःखे,
घुमवा-फिरवा मां हुशियार, क दुनियां लाजां मरे ।।१।।

उपवास करूं तो भूख घणी लागे ।
पावभाजी खावण में हुशियार, क दुनियां लाजां मरे ।।२।।

सामायिक करूं तो नींद घणी आवे ।
पिक्चर-टी.वी. जोवा मां हुशियार, क दुनियां लाजां मरे ।।३।।

माला फेरूं तो म्हारा हाथ घणां दुःखे,
रूपया गिणवा मां हुशियार, क दुनियां लाजां मरे ।।४।।

दीक्षा लेऊं तो घर नहीं छूटे ।
ससुराल जावण ने हुशियार, क दुनियां लाजां मरे ।।५।।

* * *

उज्ज्वल भविष्य के लिए-

चार मंत्र	**चार सूत्र**
समझदारी	व्यस्त रहें, मस्त रहें
ईमानदारी	सुख बाँटे, दुःख बँटायें
जिम्मेदारी	मिल-बाँटकर खायें
बहादुरी	सलाह लें, सम्मान दें

वृध्दावस्था का हाल

(तर्ज : कीड़ी छोड़ दे नमक री डली, खारो लागे)

डगमग-डगमग डोले नाड़, सिग्नल देवे बारम्बार ।
ओ है बुढ़ापो रो हाल, झटपट चेत रे चेतनियां,
अवसर बीत्यो जावे,
थांरो सुन्दर यो शरीर, तर-तर छीज्यो जावे ।।टेर।।

बुढापो आयां सूं भायां, ओ तन परवश बण जावे ।
आड़ी-टेढ़ी जीभ चले है, हाथ-पैर सब कंपावे ।
आंख्यां रो दिवलो टिम-टिम, टिम-टिम करतो बुझ जावे ।
बत्तीसी बिन पड्या धान रो, मूंडो बैरी बण जावे ।
खांसी खच-खच, खच-खच चाले नींद रात ने फोड़ा घाले,
राता लम्बी लागण लागे, नींद नहीं आवे ।
थांरो सुन्दर यो शरीर, तर-तर छीज्यो जावे ।।१।।

आजकल री युवक धारणा, पहलां मौज उड़ा लेस्यां ।
धर्मध्यान तो बुढ़ापो, आया पछे ही कर लेस्यां ।
पण बुढ़ापो आसी ही तने, इण री कॉई गारन्टी है ।
भरी जवानी में ही बज सकती, अरे मौत की घन्टी है ।
भायाँ-बायाँ थे अब जागो, जल्दी धर्मध्यान में लागो,
त्यागो आलसिया ने, ओ ही सबने घणो डूबावे
थांरो सुन्दर या शरीर, तर-तर छीज्यो जावे ।।२।।

बचपन यौवन सगला ने ही, रमतो-गमतो लागे है ।

पण बुढ़ापो आता ही, अणगमतो सबने लागे है ।
पुण्याई पोते हुवे तो, पोता (पौत्र) साथ घाले है ।
पाप कर्म रो उदय हुवे तो, पोता गोतां घाले है ।
जैसी करणी वैसी भरणी, अच्छी करणी भवजल तरणी,
करणी धर्म री करियोड़ी निष्फल नहीं जावे
थांरो सुन्दर यो शरीर, तर-तर छीज्यो जावे ।।३।।

बड़ो व्यस्त है फुर्सत कोनी, थोथी रटण लगावे क्यूं ।
अस्त-व्यस्त अपने जीवन ने, क्यूं नहीं स्वस्थ बणावे तूं ।
आगे धन्धो पीछे धन्धो, धन्धा में भी धन्धो है ।
जो धंधा में समय निकाले महावीर रो बंदो है ।
धन्धा में भी धर्म कमाओ, त्याग मारग ने थे अपनाओ ।
देखो बुढ़पो ओ पल-पल थारे नेड़ो आवे ।
थांरो सुन्दर यो शरीर, तर-तर छीज्यो जावे ।।४।।

बुढ़ापो आया सूं पहला, करणो है सो कर लीजो,
धर्म खजानो भरणो है तो, अवसर रहता भर लीजो,
चुक्या मोको रहसी धोखो, आखिर में पछतावेला ।
पाप उदय आया सूं थारे, मन री मन रह जावेला ।
आ है महापुरुषों री वाणी, चाहे राजा हो या राणी,
करणी आप री करयोड़ी, आगे काम आवे,
थांरो सुन्दर यो शरीर तर-तर छीज्यो जावे ।।५।।

* * *

बुढ़ापा में मनड़ा ने मारले

बुढ़ापा में मनड़ा ने मारले कोनी ।
जीवन आपरो सुधारले कोनी ।। टेर ।।

बेटा जाणे ने बहुवां जाणे,
थूं थारो भार उतारले कोनी, बुढ़ापा में... ।।१।।

पूछे या नहीं पूछे थूं क्यूं छीजे,
थोड़ी सी बात विचारले कोनी, बुढ़ापा में...।।२।।

खाणा रे खातर खटपट क्यूं करणो,
होवे जेड़ो ही तूं तो सारले कोनी, बुढ़ापा में...।।३।।

डोल मती, डोल मती, सुख में न दुःख में,
गुदलियोड़ो नीर नितारले कोनी, बुढ़ापा में...।।४।।

रति-अरति हैं दोनों रायों जैसी,
विणां ने कढ़ी मांहे बघार ले कोनी, बुढ़ापा में...।५।।

ज्ञानी गुरु दीनी ज्ञान की बुहारी,
आत्मा रो आंगणो बुहारले कोनी, बुढ़ापा में...।।६।।

* * *

अधिकारी के गुण

कार्य कुशल, हाथ का सच्चा,
सदा तत्पर, धैर्यशील और निष्पक्ष ।

बुढ़ापा

(तर्ज : मोरिया आछो बोल्यो रे...)

बुढ़ापा ! आछो आयो रे बेरी पावणा ।। टेर ।।
बुढ़ापा ! कोई लेवे तो थने बेच दूं- बेच दूं, बेच दूं,
थांरी कोड़ी नहीं लेऊं रे छदाम, बुढ़ापा...।।१।।
बुढ़ापा ! धमड़-धमड़ मैं तो चालती- चालती, चालती ।
म्हारा पगां सू तो चाल्यो न जाय बुढ़ापा...।।२।।
बुढ़ापा ! मोटा सूं मोटा मटका लावती- लावती, लावती ।
म्हांसूं उठे नहीं लोटा रो भार, बुढ़ापा... ।।३।।
बुढ़ापा ! गरमागरम खिचड़ी खावती- खावती, खावती ।
अबे खुड़चन आवे म्हांरे हाथ, बुढ़ापा... ।।४।।
बुढ़ापा ! ऊंडे तो ओरे मैं तो पोढ़ती- पोढ़ती, पोढ़ती ।
अब पोल्यां में ढ़ाली म्हारी खाट, बुढ़ापा.. ।।५।।
बुढ़ापा रुच-रुच भोजन मैं तो जीमती- जीमती, जीमती ।
म्हारा गिर गया दांत बत्तीस, बुढ़ापा...।।६।।
बुढ़ापा ! खाऊं जी खाऊं ! मैं तो केवती-केवती ।
म्हारा मूंडा सूं पड़ रही लाल, बुढ़ापा... ।।७।।
बुढ़ापा ! पोता तो काढ़े म्हारी कूटियाँ- कूटियाँ, कूटियाँ ।
ए दोहिता तो चालै म्हारी चाल, बुढ़ापा... ।।८।।
बुढ़ापा ! मचक-मचक ने मैं तो चालती- चालती, चालती
अबे गेडी तो दीनी म्हांरे हाथ ।
अबे वाही संभाले म्हांरो भार, बुढ़ापा... ।।९।।
बुढ़ापा ! जाइजे तूं जाइजे गुरुजी री शरण में- शरण में, शरण में,
अब तो वे ही लगावे थने पार, बुढ़ापा..।।१०।।

क्यूं किसी से कड़वा बोलो

अनरज देश में महावीर स्वामी, आप पधार्या ।
वाणी सुनी ने अति धीर हो, परिषह सहिया ।।

छोटी सी जिन्दगी में क्यूं किसी से कड़वा बोलो ।
पाक जबान मीठी जिह्वा क्यों थे विषवा बोलो ।।

नेमकंवर ब्याव के कारण, तोरण पर आया ।
पशुओं की सुणने पुकार, रथ को पाछा घेरा ।।१।।

गजसुकुमालजी वैराग में, बनड़ा बन आया ।
बांधी ए माटी री पाल, सीधा मोक्ष सिधाया ।।२।।

जम्बू कंवर आठों ही रानियां, महलां में त्यागी ।
आयो है झिलतो वैराग, अब मैं संजम लेसां ।।३।।

मेघकंवर कर जोड़ ने, माता कने आया ।
आज्ञा देवो नी म्हांरी मातजी, मैं संयम लेसां ।।४।।

दान सीयल तप भावना, शुद्ध मन से ध्यावो ।
पावोला अमर विमान, गर्भावास नही आवो ।।५।।

गुरू सा दियो उपदेश, सब हिलमिल चालो ।
गुरूणीसा दियो उपदेश, सब थे हंसकर बोलो ।।६।।

* * *

जीवित जन है सदा वही, जो जीता है परहित काज ।
सारे जग में यश फैलाकर, बन जाता देवों का ताज ।।

नवकार वाली में गुण घणा

ओजी सरसत सावन विनवो, ओ जी गणधर लागूं जी पाय,
नवकार वाली में गुण घणां ।।टेर।।

ओजी ऊँचोजी ढ़ोलियो ढालिया, ओजी समगत री सेज विछाविया,
ओजी शील री सेज विछाविया, ओजी नोकर वाली में गुण घणां

ओजी जिण पर राजाजी पोढ़िया, ओजी राणीजी गुणियो नवकार,
ओजी नोकरवाली मे गुण घणां
ओजी राजाजी झिझक ने उठिया, ओजी मोडिया मरोडा रा पान,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी राजी जी दासी बुलाविया, ओजी कुभकलश लेने आय,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी कलश राणीजी ने सुपियो, ओजी राणीजी ढक उघाडियो,
ओजी माय कालो नांग... ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी राणीजी गुणिया नवकार, बन गया फूलां रो हार,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी राजाजी राणी रे पाय पड़िया, राणीजी थांरो साचो नवकार,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी राजाजी सभा मे पधारिया, ओजी रानी रो सांचो नवकार,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी राजा-राणी संजम आदरियो, ओजी लीनो है संजम भार,
ओजी नोकरवाली में गुण घणां
ओजी दान शीयल तप भावना, ओजी वरतिया है जय-जयकार,
ओजी वरतिया है मंगलाचार... ओजी नोकरवाली में गुण घणां

इम झूरे देवकी राणी

इम झूरे देवकी राणी, आ तो पुत्र बिना बिलखाणी रे ।।टेर।।
मैं तो सातों नंदन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे ।।१।।
घर पालणो नहीं बंधायो, नहीं मधुर हारलियो गायो रे ।।२।।
घुघरा-चुखनी न बसाई, झूमर पिण नहीं बंधाई रे ।।३।।
नहीं गहणा कपड़ा पहराया, नहीं झुगल्या-टोपी सिवाया रे ।।४।।
नहीं काजल आँख लगायो, नहीं स्नान कराई जीमायो रे ।।५।।
नहीं गले दामणा दीधा, वलि चांद-सूरज नहीं कीधा रे ।।६।।
नहीं स्तन रो पान करायो, रूठा ने नहीं मनायो रे ।।७।।
मैं तो कड़ियां नांही उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे ।।८।।
घू-घू कही नांही डरायो, नहीं गुदगुदल्यां से हंसायो रे ।।९।।
नहीं मुख पे चुम्बा दीधा, नहीं हरस-वारणा लीधा रे ।।१०।।
नहीं चकरी-भंवरा मंगाया, नहीं गुलिया-गेंद बसाया रे ।।११।।
म्हैं जन्म तणा दुःख देख्या, गया निर्फल जन्म अलेख्या रे ।।१२।।
मैं पुण्य पूरा नहीं कीधा, तिण थी सुत-बिछड़ा लीधा रे ।।१३।।
गले पे हाथ, नजर है धरती, आँखें आँसू भर झूरती रे ।।१४।।
पग-वंदन कृष्ण पधारे, मां जी ने उदास निहारे ।।१५।।
कहे 'अमीरिख' किम दुःख पाओ, माताजी मुझ फरमाओ रे ।।१६।।

* * *

आंटो करमां रो

(तर्ज : कोरो काजलियो या श्री शांतिनाथ भगवान...)

आंटो करमां रो, मत देवो दूजां ने दोष ।। टेर ।।

कर्म करे सो कांई करे, ओ तो होणहार सो होय ।।१।।
क्रोड़ उपाय करलो सरे, कांई अणहोनी नहीं होय ।।२।।
ऋषभदेवजी जग रा नाथ, कांई नहीं मिल्यो वर्षभर भात ।।३।।
हरिचन्द्र राजा तारा दे रानी, कांई भर्‌यो नीच घर नीर ।।४।।
राम घर सीता सती, कांई रावण ले गयो नीच ।।५।।
वासुदेव घर जनमिया, कृष्ण जी मुवा पोते बलवीर ।।६।।
चंपा नगरी सुभद्रा सती, कांई सासू दियो कलंक ।।७।।
कर्म काटण रा करो उपाय, कांई चन्दण गुरु सरणार ।।८।।
पांच पाण्डव घर द्रौपदी, कांई लेगो पदमोतर राय ।।९।।
कर्म कारणे चन्दनबाला, कांई बिकी चौहटे मझार ।।१०।।
कोणिक श्रेणिक ने दियो पिंजरे, कांई मुवो आप हथघात ।।११।।
सेठ पुत्र इलायची, कांई गयो नटवी रे लार ।।१२।।
सुरीकंता स्वारथ बिना, आ तो दियो कन्त ने जहर ।।१३।।
गजसुकुमाल सूं मसाण में, कोई सोमिल लीधो वैर ।।१४।।
चौबीसवां महावीरजी, ज्यांरे चरणां में रांधी खीर ।।१५।।
पवन घर आई अंजना, कांई जन्म्यो वन हनुमान ।।१६।।
आंटो करमां रो, मत देवो दूजां ने दोष, आंटो करमां रो !

चौबीसी (वन्दना-वन्दना)

ऋषभदेव जी को मेरी वन्दना, अजितनाथजी को मेरी वन्दना,
संभवनाथजी को मेरी वन्दना, मेरी वन्दना, वन्दना, वन्दना...

(इसी प्रकार आगे के सभी तीर्थंकरों के नाम लें ।)

* * *

चौबीसी (कभी वीर बनके)

कभी वीर बनके, महावीर बनके, चले आना, प्रभुजी चले आना ।
तुम ऋषभ रूप में आये, तुम अजितनाथ कहलाये,
संभवनाथ बनके, अभिनन्दन बनके, चले आना, प्रभुजी चले आना ।

(इसी प्रकार आगे के सभी तीर्थंकरों के नाम लें ।)

* * *

चौबीसी (सबसे थोडा)

सबसे थोड़ा अरिहंतजी अच्छा,
उनसे ज्यादा आचार्य जी अच्छा,
उनसे ज्यादा उपाध्याय जी अच्छा,
उनसे ज्यादा साधुजी जी अच्छा,
उनसे अनन्त गुना सिद्ध भगवान अच्छा,
संसार मां रे जेलखानो,
शरीर मां रे पाखानो,
परिवार मां रे मुसाफिर खानो,
कर्म मां रे कारखानो,
राग-द्वेष मां रे कत्लखानो ।

चौबीसी (मैं तो किण विध आऊं सा)

(तर्ज : कांई रे मिजाज करे रसिया ...)

पहला रिषभनाथ जिन-जिन वान्दू तो,
दूजा अजितनाथ देवो गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।१।।

विमान में आऊं तो मारासा जीव घबरावे,
रेलीयां रो भाड़ो घणो लागे गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।२।।

मोटर में आऊं तो मारासा भीड़ घणेरी,
ऊबा टाबरियां म्हारां रोवे गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।३।।

तांगा में आऊं तो मारासा गोडा जी दूखे,
बैलगाड़ी में धक्का लागे गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।४।।

पगे चालू तो मारासा सड़क डामर री,
तो गलियां में घणो गन्दीवाड़ो गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।५।।

किण विध आऊं, इण विध आऊं,
विहार रे मिस दौड़ी चली आऊं गुरुणी सा,
मैं तो किण विध आऊं सा ... ।।६।।

* * *

चौबीसी

(तर्ज : गढ़ रणक भंवर सूं आवो विनायक)

पहला रिषभनाथ जिन जी ने वांदू,
दूजा अजितनाथ वान्दस्या,
एक पूछत-पूछत नगर डंडोलियो,
म्हारा गुरुणीसा रो स्थानक किस्यो ।
एक ऊंची-सी मेढ़ी ने लाल दरवाजा,
जठे म्हारा गुरुणीसा विराजिया,
एक म्हारा गुरुणीसा झूठ नहीं बोले ।
बोले वे शास्त्र री वाणिया ।
एक म्हारा गुरुणी सा आंगण नहीं बैठे,
बैठे ओ पाट-पाटिया ।
एक म्हारा गुरुणीसा मलमल नहीं पेरे,
पेरे ओ खादी सुहावणी ।
एक म्हारा गुरुणीसा गोचरी लावे,
दोष बयालीस टाल ने ।
एक म्हारा गुरुणीसा उतावला नहीं चाले,
चाले ओ ईर्यासमिति देख ने ।

(आगे सभी तीर्थंकरों के नाम लेवें ।)

* * *

कोई तपस्वी है, कोई ज्ञानी है, कोई ध्यानी है
और भी न जाने किन-किन विशेषताओं से युक्त हैं
पर भीतर में समता नहीं है तो कुछ भी नहीं, सब व्यर्थ है ।

चौबीसी (थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल)

पहला रिषभनाथ वांदसा रे लाल,
ए तो दूजा अजितनाथ दीनदयाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।१।।

पाट जडाऊं पाटिया रे लाल,
ए तो ज्ञान री फुलड़ी दिराय ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।२।।

ऊपर रालु बाजोटियो रे लाल,
ए तो जिण पर मारासा विराजियो ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।३।।

ए तो भायां तो वाणी झेलसी रे लाल,
ओ तो बायां रे आनन्द उच्छाव ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।४।।

ओ तो सेर सोना रो घूघरो रे लाल,
ओ तो रणके हैं मांझल रात ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।५।।

ए तो रणक्या सुश्रावक जागिया रे लाल,
ए तो चौमासा रो कियो विचार ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।६।।

ए तो चार अंगुल रो ओलियो रे लाल,

ये तो विनतिया लिखी रे हजार ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।७।।

अध बीच वन्दना हजार ओ लाल,
थे तो माला ओ फेरो नवकार री रे लाल ... ।।८।।

✻ ✻ ✻

सब से बड़ा

नीरोगता सब से बड़ा लाभ है !
निर्लोभता सब से बड़ा धन है !
विश्वास सब से बड़ा बन्धु है !
लज्जा सब से बड़ा भूषण है !
मोह सब से बड़ा दुःख है !
अहिंसा सब से बड़ा धर्म है !

लड़ाई होती है

व्यर्थ की 'मेरी-तेरी' करने से !
गुप्त बात के खुलने से !
कड़वे बोल बोलने से !
निंदा चुगली करने से !
मर्यादाहीन हठ ठानने से !
झूठा कलंक लगाने से !
स्वार्थ-पूर्ति की लालसा से !
बार-बार ताने मारने से !
छल-कपट की बातों से !

✻ ✻ ✻

चौबीसी (झाला की)

(तर्ज : झाला)

तीर्थंकर चौबीसियां जी ओ राज मरासा, महावीर भगवान,
दसवें स्वर्ग से आविया जी ओ राज मरासा, अवतरिया भगवान ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।१।।

मेरूशिखर नवराविया जी ओ राज मारासा, सर्व इन्द्र गुण गाया,
घाति कर्म तोड़ ने जी ओ राज मरासा, पायो केवल ज्ञान ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।२।।

रिमझिम बरसे बादली जी ओ राज मरासा, आयो सावण मास
कोयल च्हावे आमो जी ओ राज मरासा, मैं चाहूँ भगवान ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।३।।

चन्दा से भी निर्मला जी ओ राज मरासा, चम-चम करे दीदार,
गौतम जैसे वजीर मिले जी ओ राज मरासा, लब्धी तणा भण्डार ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।४।।

महिमा गाऊँ प्रभु तणी जी ओ राज मरासा, हिये हर्ष न माय,
लाखों प्राणी तिर गये जी ओ राज मरासा, जिनवाणी प्रताप ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।५।।

शासन पायो आपरो जी ओ राज मरासा, हमरा भाग्य सवाय
हाथ जोड़ करूं वन्दना जी ओ राज मरासा प्रभुजी, तिरण-तारण जहाज ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।६।।

चैत सुदी ने जनमिया जी ओ राज प्रभुजी, मात-तात हरसाय,
भर यौवन में संयम लियो जी ओ राज प्रभुजी, छोड्या घर ने बार ।

सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।७।।

चार तीर्थ थापिया जी ओ राज प्रभुजी, भव्य जीव हर्षाय ।
प्रभु वाणी फरमावता जी ओ राज प्रभुजी, बरसे अमृत धार ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।८।।

भंवरो च्हावे फूल ने जी ओ राज प्रभुजी, मैं चाहूँ महावीर ।
सागर सम गंभीर छे जी ओ राज प्रभुजी भामण्डल सौभाय ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।९।।

चार ज्ञान चौदहपूर्वी जी ओ राज प्रभुजी, उज्ज्वल ज्ञान अपार ।
चालो प्रभुजी रा शरण में जी ओ राज प्रभुजी, चेतन जी छोड्यो मोह जंजाल ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।१०।।

हम को भी अब तारदो जी ओ राज प्रभुजी, आप हो दीनदयाल ।
आप पधारे मोक्ष में जी ओ राज प्रभुजी, वन्दन बारम्बार ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।११।।

मद्रास रो काई केवणो जी ओ राज मरासा, दया-धर्म रो ठाठ,
कियो चौमासो आपने जी ओ राज मरासा, सतगुरुजी महान् ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।१२।।

गुरुजी में गुण घणा जी ओ राज मरासा, चहु संघ ने चमकाय ।
धर्म री खिली फुलवारियां जी ओ राज मरासा,ज्यों केशर उद्यान ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।१३।।

श्रावक आवे भाव सूं जी ओ राज मरासा, धर्मरत्न के काज ।
मद्रास संघ री विनती जी ओ राज मरासा, रखजो मेहर अपार ।
सूत्र बांचसी जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।

चौबीसी

(तर्ज : झाला)

पहला रिषभनाथ वान्दसा जी ओ राज मरासा दूजा अजितनाथ देव ।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।

डूंगर ऊपर डूंगरी जी ओ राज मरासा, सोनो घड़े सुनार ।
घड़ीजे नेमजी रे मुन्दड़ी जी ओ राज मरासा, राजुल रे नवसर हार ।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।१।।

लीली घोड़ी हिंसती जी ओ राज मरासा, लाला जड़ी लगाम ।
चढ़ो-चढ़ो सब कोई केवे जी ओ राज मरासा, चढ़ गया नेमकुमार ।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।२।।

चौसठ सूरज उग्या जी ओ राज मरासा, चन्दा लाख करोड़ ।
तोही अंधारो नहीं मिटे जी ओ राज मरासा, गुरु बिना घोर अंधार ।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।३।।

मुँहपत्ति-बैठको हाथ में जी ओ राज मरासा, चाली थानक मांय ।
स्हामां मिलिया गुरुणीसा जी ओ राज मरासा, रोम-रोम हर्षाय ।।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।४।।

नेमजी तोरण आविया जी ओ राज मरासा, पशुवां री सुनी पुकार ।
तोरण से पाछा फिरिया जी ओ राज मरासा, चढ़ गया गढ़ गिरनार ।
सूत्र बांचलो जी ओ राज मरासा, सुणसा चित्त लगाय ।।

❋ ❋ ❋

चौबीसी (चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो)

पहला रिषभनाथ जिनजी को वान्दू, दूजा अजितनाथ जी को,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।। टेर ।।
विनय री राखड़ी सिर पर बांधजो, गुरुवर ने शीश नमावजो,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।।१।।

स्वाध्याय रा कुंडल कानों में पेरजो, निन्दा-विकथा निवारजो,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।।२।।

धर्म रो हार हृदय पर पेरजो, धैर्य जीवन में लावजो,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।।३।।

करुणा रा कंगन हाथों में पेरजो, दुख देख दया मन लावजो,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।।४।।

ज्ञान री पायल पावों में पेरजो, करम खपाय मुक्ति में जावजो,
चून्दड़ी शील सुरंगी बहनां ओढ़जो ।।५।।

❋ ❋ ❋

किनका कैसा मन ?

अंधा मन नास्तिकों का
मुर्दा मन आलसियों का
रोगी मन पापियों का
सरस मन दयालुओं का
राक्षस मन माँसाहारियों का
स्वस्थ मन सज्जनों का !

क्यूं किसी से कड़वा बोलो

अनरज देश में महावीर स्वामी, आप पधार्या ।
वाणी सुनी ने अति धीर हो, परिषह सहिया ।
छोटी सी जिन्दगी में क्यूं किसी से कड़वा बोलो ।
पाक जबान मीठी जिह्वा क्यों थे विषवा बोलो ...
नेमकंवर ब्याव के कारण, तोरण पर आया ।
पशुओं की सुणने पुकार, रथ को पाछा घेरा ... ।।१।।
गजसुकुमालजी वैराग में, बनड़ा बन आया ।
बांधी ए माटी री पाल, सीधा मोक्ष सिधाया... ।।२।।
जम्बू कंवर आठों ही रानियां, महलां में त्यागी,
आयो है झिलतो वैराग, अब मैं संजम लेसां...।।३।।
मेघकंवर कर जोड़ ने, माता कने आया
अगिया देवो नी म्हांरी मांय जी, मैं संयम लेसां....।।४।।
दान सीयल तप भावना, शुद्ध मन से ध्यावो
पावोला अमर विमान, गर्भावास नही आवो... ।।५।।
गुरू सा दियो उपदेश, सब हिलमिल चालो ।
गुरूणीसा दियो उपदेश, सब थे हंसकर बोलो... ।।६।।

⁂

इतिहास - भूतकाल की बात बताता है ।
विज्ञान - वर्तमान काल की बात बताता है ।
ज्योतिष - भविष्यकाल की बात बताता है ।
वीतरागी - सिद्धान्त से तीनों काल की बात बताता है ।

रिलिजस गेम (पुण्य की कमाई)

ज्ञान के साथ खेल, खेल के साथ भाग्य का चक्कर,
साथ ही साथ कर्मों का रफुचक्कर...!
देखो, जानो और करो.. घबराइये नहीं, भाग्य अजमाइए...
पुण्य कमाइये... चलो, अब शुरु करें !

रिलिजस गेम खेलने का नियम

रोज सुबह आँख बंद करके नीचे दिए हुए नंबरों पर एक बार अपनी ऊँगली घुमाइये । जिस नंबर पर ऊँगली अटक जाय, उस नंबर का नियम देख लीजिए...और वह नियम केवल आज एक ही दिन का है । समझ गये न !

करो स्टार्ट आज से... रेडी, वन, टू, थ्री...

71	64	69	44	37	42	53	46	51
66	68	70	39	41	43	48	50	52
67	72	65	40	45	38	49	54	47
26	19	24	8	1	6	62	55	60
21	23	25	3	5	7	57	59	61
22	27	20	4	9	2	58	63	56
35	28	33	80	73	78	17	10	15
30	32	34	75	77	79	12	14	16
31	36	29	76	81	74	13	18	11

यदि आप रोज नियम नहीं कर सकते तो कम से कम द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, ग्यारस, पक्खी को अवश्य करियेगा ।

भाग्य से प्राप्त नियम को संयोगवश नहीं पाल सकते तो दुबारा ऊँगली घुमाइये, अन्तिम तीसरी बार नियम नहीं बदलियेगा ।

उन नियमों का संकल्प करने के पश्चात् यदि कोई भूल हो जाये तो ग्यारह नवकार मंत्र पढ़ लें या ग्यारह बार वंदना आदि से प्रायश्चित कर लेवें ।

मशीन के लिए ईंधन परम आवश्यक है ।
सरदर्द के लिए चंदन परम आवश्यक है ।
वरदान है तटों पर बहने वाली नदी को ,
जीवन के लिये नियम परम आवश्यक है ।

जीवन के लिए नियम परम आवश्यक है ।

1. पन्द्रह मिनिट प्रार्थना करें
2. कम से कम एक रुपये का दान करें
3. एक घंटे का मौनव्रत रखें
4. एक नवकार मंत्र की माला फेरें
5. घर में बड़ों को प्रणाम करें
6. हरी सब्जी का त्याग करें
7. दूध का त्याग करें
8. साधु या साध्वीजी से मांगलिक सुनें
9. एक लोगस्स का ध्यान करें
10. पाँच नवकार मंत्र गिन कर घर के बाहर निकले

11. नवकारसी करें
12. भोजन से पहले पाँच नवकार गिनें
13. दस मिनट नवकार मंत्र का जाप करें
14. मिष्ठान्न का त्याग करें
15. चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करें
16. तिक्खुत्तो के पाठ से तीन वंदना करें
17. दिन में सोना नहीं
18. पाँच मिनट आत्म-चिंतन करें
19. दही का त्याग करें
20. रात्रि भोजन त्याग करें
21. कंद-मूल का त्याग करें
22. आलू का त्याग करें
23. सुपारी का त्याग करें
24. गरम पानी पीना
25. भोजन करते समय एक सब्जी खायें
26. किसी की भी निंदा नहीं करें
27. पन्द्रह मिनट मौन रखें
28. एक घंटे के लिए क्रोध का त्याग करें
29. ठंडा पीने का त्याग
30. झूठा नहीं छोड़ें
31. पान का त्याग
32. होटल का त्याग
33. रात के दस बजे के बाद न खायें
34. किसी भी एक सब्जी का त्याग करें

35. ऊपर से नमक नहीं डालना
36. किसी भी एक मिष्ठान्न का त्याग करें
37. पन्द्रह मिनट का मौन करें
38. आते हुए क्रोध को रोकें
39. घी का त्याग
40. जुआ खेलने का त्याग
41. अपनी प्रशंसा न करें
42. एकासना करें
43. हरे फल का त्याग
44. तीन घंटे का चौविहार करें
45. व्याख्यान श्रवण
46. शतरंज न खेलें
47. सिनेमा का त्याग
48. किसी भी एक विगय का त्याग
49. तंबाकू का त्याग
50. बीड़ी, सिगरेट का त्याग
51. आम का त्याग
52. पन्द्रह मिनट स्वाध्याय करें
53. आचार का त्याग
54. टी.वी. का त्याग
55. आइसक्रीम का त्याग
56. एक घंटे का चौविहार करें
57. नौकरों पर गुस्सा न करें
58. मेहंदी का त्याग

59. हरे पत्ते नहीं तोड़े
60. महावीर स्वामी की एक माला फेरें
61. शहद का त्याग
62. एक सामायिक करें
63. बैंगन का त्याग
64. मक्खन का त्याग
65. पपीते का त्याग
66. वीडियो का त्याग
67. फलों का त्याग
68. ब्रेड-मक्खन का त्याग
69. प्रिय वस्तु का त्याग
70. सिल्क नहीं पहनना
71. भक्तामरजी का पाठ करें
72. छोटी-सी प्रार्थना याद करें
73. अंजीर का त्याग करें
74. झूठ बोलने का त्याग करें
75. तीर्थंकर का चरित्र पढ़ें
76. पूरे दिन में केवल दो सब्जी के उपरांत का त्याग
77. पन्द्रह मिनट सत्संग करें
78. सत्साहित्य का एक पेज पढ़ें
79. पन्द्रह मिनट का मौन करें
80. सचित्त फल का त्याग
81. पन्द्रह मिनट ध्यान करें ।

❋ ❋ ❋

चौदह नियम

(१) सचित्त- जीव सहित वस्तु अर्थात् कच्चा नमक, कच्चा पानी, पत्ते, फल, फूल, मूल, कन्द, शाख, बीज, आदि कोई भी सचित वस्तु, जो छेदन-भेदन होकर तथा अग्नि आदि का शस्त्र पाकर अचित्त न हुई हो, उसका परिमाण या त्याग करना ।
(२) द्रव्य- रोटी, दाल, चावल/भात आदि ।
(३) विगय- दूध, दही, घी, तेल मिठाई आदि ।
(४) उपानह- जूते, चप्पल, मोजे आदि ।
(५) ताम्बूल- मुखवास, पान-सुपारी, लोंग, ईलायची आदि ।
(६) वस्त्र- पहनने-ओढ़ने के सभी प्रकार के कपड़ें ।
(७) कुसुम- सूँघने की वस्तु- फूल, माला, इत्र आदि ।
(८) वाहन- घोड़ा-हाथी, मोटर-जहाज, साइकिल-ताँगा आदि ।
(९) शयन- पलंग, खाट, बिछौना, कुर्सी आदि ।
(१०) विलेपन- चन्दन, तेल, उबटन आदि ।
(११) ब्रह्मचर्य-मैथुन सेवन, अश्लील चित्र-उपन्यास, टी.वी. आदि ।
(१२) दिशा- ऊंची, नीची, तिरछी पूर्वादि दिशा का परिमाण ।
(१३) स्नान- स्नान के जल, स्नान की संख्या का परिमाण ।
(१४) भत्त- भोजन की संख्या का परिमाण।

सूचना : मर्यादित जीवन जीने के लिये श्रावक-श्राविका को प्रतिदिन प्रातः चौदह नियम अवश्य ग्रहण करने चाहिये । आवश्यकतानुसार मर्यादा रखें, शेष का त्याग करलें । जितना त्याग उतनी ही शान्ति ! चौदह नियम प्रतिदिन धारण करने से समुद्र जितना पाप घट कर बूँद के बराबर रह जाता है ।

श्रावक के तीन मनोरथ

१. वह धन्य दिन कब होगा, जब मैं अपनी धन-सम्पत्ति के परिग्रह का जन हित में, पीड़ित जनता के लिये, त्याग कर प्रसन्नता का अनुभव करूंगा, ममता के भार से हल्का हो जाऊँगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा ।
२. वह धन्य दिन कब होगा, जब मैं संसार की मोह-माया और विषय-वासना का त्याग कर साधु-जीवन स्वीकार करूँगा, अहिंसा आदि पंच महाव्रत को धारण कर परिषह-उपसर्गो को समभाव से सहन करूँगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा ।
३. वह धन्य दिन कब होगा, जब मैं अपनी संयम यात्रा को सकुशल पूर्ण कर अंत समय मरण को प्राप्त करूँगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा ।

* * *

परमेश्वर

जहाँ व्यवस्था है, वहाँ वैभव है ।
जहाँ वैभव है, वहाँ लक्ष्मी है ।
जहाँ लक्ष्मी है, वहाँ सुख है ।
जहाँ सुख है, वहाँ प्रेम है ।
जहाँ प्रेम है, वहाँ धर्म है ।
जहाँ धर्म है, वहाँ श्रद्धा है ।
जहाँ श्रद्धा है, वहाँ परमेश्वर है ।
जहाँ परमेश्वर है, वहाँ सब कुछ है ।

पच्चक्खाण

नवकारसी

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं-पाणं-खाइमं-साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि ।

पोरसी

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं-पाणं-खाइमं-साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि- वत्तियागारेणं वोसिरामि ।

एकासना/बिआसना

उग्गए सूरे एगासणं/बिआसणं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं-पाणं-खाइमं-साइमं अन्नत्थऽणाभेगेणं, सहसागारेणं, सागरियागारेणं, आउंट्टणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि ।

आयंबिल

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं-पाणं-खाइमं-साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि ।

उपवास (आदि)

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं - पाणं - खाइमं - साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, परिट्ठावाणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि ।

संवर (दया)

करेमि भंते ! संवरं पंचासवदारं पच्चक्खामि जाव न पारेमि ताव पज्जुवासामि दुविहं-तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा-वयसा-कायसा (अथवा एगविहं-एगविहेणं न करेमि कायसा) तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

प्रतिपूर्ण पौषध व्रत

करेमि भंते ! पडिपुण्णं पोसहं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि, अबंभं पच्चक्खामि, माला वण्णग-विलेवणं पच्चक्खामि, मणिसुवण्णं पच्चक्खामि, सत्थ-मूसलादिसावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा-वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

देशावकासिक व्रत

दसवाँ देसावगासिक व्रत दिनप्रति प्रभात से प्रारंभ करके पूर्वादिक छहों दिशा में जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है, उसके उपरांत आगे जाकर पाँच आस्रव-द्वार सेवन का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं-तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है, उसमें

जो द्रव्यादिक की मर्यादा की है उसके उपरांत उपभोग-निमित्त से भोग भोगने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि एगविहं-तिविहेणं न करेमि मणसा-वयसा-कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पौषध पारने का पाठ

पौषध व्रत के पाँच अतिचार- अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहिय सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिय - दुप्पमज्जिय उच्चारपासवणभूमि, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया । जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

सांकेतिक प्रत्याख्यान पाठ

..... एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

कोई भी व्रत, सप्त कुव्यसन त्याग, एक दिन के लिए ब्रह्मचर्य-पालन, पच्चक्खाण की अंगुठी, मौन, विगय, टी.वी. इत्यादि प्रत्याख्यान ग्रहण करना हो तो खाली जगह पर वह नाम बोलकर प्रत्याख्यान ग्रहण करना ।

सभी प्रत्याख्यान पारने का पाठ

..... (खाली जगह पर जो भी पच्चक्खाण पारना है, उसका नाम बोलना, बाद में आगे का पाठ पढ़ना ।) सम्मं काएणं न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं । (अंत में तीन नवकार स्मरण करना ।)

श्रावक के नित्य प्रत्याख्यान

चौदह राजू लोक में असंख्य द्वीप समुद्र में, अढ़ाई क्षेत्र में, मेरे शरीर से करने में आवे, मुँह से खाने में, पीने में, बोलने में आवे, रसनेन्द्रिय से रस लेने में आवे, नाक से सूँघने में आवे, आँखों से देखने में आवे, कानों से सुनने में आवे, दोनों हाथों से लेने-देने में आवे, काम करने में आवे, दोनों पाँवों से चलने में आवे, शुभ विचार मन में आवे, इन्द्रियों से, मन से, वचन से, काया से जितनी क्रिया करने में आवे, भगवान की साक्षी से मेरी धारणा अनुसार मुझे आगार । इनसे अधिक जग में जितने पाप हैं, उन सब पापों के पाँच आस्रव सेवन के प्रत्याख्यान ।

जाव नियम दुविहं तिविहेण, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, वोसिरामि, वोसिरामि ।

सागारी संथारा

(रात्रि को सोने से पहले हमेशा बोलें)

आहार, शरीर, उपधि, पच्चक्खुं पाप अठार ।
मरण पाऊँ तो वोसिरावुं, जागूं-उठूं तो आगार ।।

रात्रि को आवश्यक कुछ भी शारीरिक काम करना हो या सुबह जाग्रत हो, तब पांच बार 'नवकार मंत्र' गिनकर पार लें ।

* * *

संवेदनशील का तात्पर्य यह है कि आज किसी अन्य प्राणी की वेदना को अपनी वेदना समझिये । फिर देखिये आपका जीवन व्यवहार बदलता है या नहीं ।

समस्त जीवों के साथ क्षमापना

विश्व के सकल नारकीय, तिर्यंच, मनुष्य और देवताओं में से, मैंने मेरे पूर्व भवों में तथा वर्तमान भव में आज तक किसी जीव को हणा हो, परितापना उपजाई हो या किसी प्रकार का दुःख जानते, अजानते दिया हो और किसी भी जीव के साथ मन-योग, वचन-योग, काया योग से वैर-विरोध हुआ हो, उन सबके साथ में खमत-खामणा करता/करती हूँ ।

मेरा किसी भी जीव के साथ वैर-विरोध नहीं है और विश्व के समस्त जीवों के साथ मैत्री भाव है । इसी भरत क्षेत्र में हुए श्री ऋषभदेव आदि वर्तमान अवसर्पिणी काल के सभी तीर्थकर भगवन्तों को मैं त्रिकरण त्रियोग से वंदन करता/करती हूँ । इस उपरान्त बाह्य एवं आभ्यंतर तप करने के लिए अनुकूलता होते हुए भी उभय प्रकार के तप की आराधना करने से मैं वंचित रहा । उपरोक्त तप की आचरणा प्रसंग में जिस विधि से आचरण करना चाहिए, उसी विधि से आचरण किया नहीं, इत्यादि कारण से मुझे तपाचार में जो कोई अतिचारादि लगा हो, उसका मैं मिच्छा मि दुक्कडं देता हूँ । इसी तरह धर्मानुष्ठान के विषय में जिस तरह मेरा वीर्योल्लास होना चाहिए, उस वीर्योल्लास में कुछ कमी रही हो, उसका भी मैं त्रिकरण त्रियोग से बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं देता हूँ ।

⁂

व्यक्ति की श्रद्धा ही व्यक्ति का विश्वास जगाती है ।
अहिंसा सभी धर्मों (कर्त्तव्यों) का मूल है ।

संथारा ग्रहण करने की विधि

समाधिमरण, साधनामय जीवन की चरम व परम परिणति है । जीवन-पर्यन्त आंतरिक शत्रुओं के साथ किये गये संग्राम में अंतिम रूप से विजय प्राप्त करने का महान् अभियान 'समाधि मरण' है । संथारा दो प्रकार का होता है-

१. जावज्जीव (सागारी) २. आगार रहित

विधि : संथारा ग्रहण करने वाले पूर्व उत्तर या ईशान दिशा में मुँह करके नवकार मंत्र तिक्खुत्तो से वन्दना, इरियावहियं का पाठ, तस्स उत्तरी बोलें । इरियावहियं, लोगस्स व नवकार मंत्र का ध्यान करके प्रगट में नवकार मंत्र, काउस्सग शुद्धि का पाठ व लोगस्स बोलें । फिर देव, गुरु, संघ और चौरासी लाख जीवायोनि से खमत खमावणा करके बड़ी संलेखणा का पाठ कहे । *संलेखणा का अंत में ऐसी मेरी सद्दहणा प्ररूपणा तो चालू है, अब अवसर आया है, तो फरसना करके शुद्ध होऊँ, ऐसा बोले ।* फिर बारह व्रत व अन्य पच्चक्खाण करके पूर्वकृत पापों की आलोचना करके मिच्छा मि दुक्कडं दें । अठारह पाप स्थान और चारों या तीनों आहारों का तीन करण तीन योग से त्याग करें ।

इसके पश्चात् संथारे में दृढ़ता के साथ स्थिरता बनी रहे, इस हेतु आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान छोड़कर पूरे घर में धार्मिक वातावरण बनाये रखना चाहिये । संथारा पूर्ण होने तक नवकार मंत्र, लोगस्स, नमोत्थुणं, नमो चउवीसाए, बारह भावना का स्वरूप, तीन मनोरथ, चार शरण एवं संथारे को दृढ़ बनाने वाले स्तवन आदि सुनाते रहना चाहिये ।

यदि सागारी संथारा (नियत काल तक का) करना हो, तो उसमें विभिन्न आगार, जैसे :- अचित पानी, पहने हुए वस्त्र, धन-धान्य (भोजन) देने का, सेवा लेने आदि का आगर रख सकते हैं तथा अवसर आने पर आगार वर्ज सकते हैं ।

विशेष : अपने धर्माचार्य हों तो उनके पास, वे न हो तो ज्ञानी अनुभवी स्थविर संतों के पास, अनुक्रम से सती, श्रावक, श्राविका, स्वाध्यायी, सम्यक्त्वी के पास संथारा ग्रहण करना चाहिए । उनकी निश्रा, कृपा, अतिशय से संथारे की सफलता व शुद्धि की संभावना बढ़ती है ।

बड़ी संलेखना का पाठ

(पालथी लगा कर सुखासन से बैठें।)

अह भंते ! अपच्छिम-मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा- आराहणा पौषधशाला पूंज, पूंज के उच्चार-पासवण भूमिका पडिलेह, पडिलेह के गमणागमणे पडिक्कम, पडिक्कम के दर्भादिक संथारा संथार, संथार के दर्भादिक संथारा दुरूह, दुरूह कर पूर्व तथा उत्तर दिशि संमुख पल्यंकादिक आसन से बैठ, बैठकर करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि 'णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं' ऐसे अनन्त सिद्ध भगवान् को नमस्कार करके 'णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं,' जयवंते वर्तमान काल में महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थंकर भगवान् को नमस्कार करके अपने धर्माचार्य जी महाराज को नमस्कार करता हूँ। साधु प्रमुख चारों तीर्थों को खमाकर, सर्व जीव राशि को खमाकर,

पहले जो व्रत आदरे हैं, उनमें जो अतिचार दोष लगे हैं, वे सर्व आलोच के, पडिक्कम के, निन्द के, निःशल्य होकर के, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि, सव्वं अदिण्णादाणं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं, माणं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं- न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणु-जाणामि मणसा, वयसा, कायसा, ऐसे अठारह पापस्थान पच्चक्ख कर, सव्वं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं चउविहंपि आहारं पच्चक्खामि, ऐसे चारों आहार पच्चक्ख कर जं पि य इमं सरीरं इट्ठं-कंतं- पियं मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, संमयं, अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डसमाणं, रयणकरंडगभूयं, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाइय, पित्तिय, कप्फिय, सण्णिवाइय, विविहा रोगायंका परीसहा उवसग्गा फासा फुसंतु, एवं पि य णं चरमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं वोसिरामि तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि-३ ।

* * *

* तपस्वियों में यदि क्षमाशीलता का सौन्दर्य हो तो वे सुन्दर हैं रूपवान हैं, प्रशंसनीय, दर्शनीय, वंदनीय है ।

* जो तपस्वी जितना क्षमाशील होगा, वह उतना ही लब्धि सम्पन्न होगा ।

* आप तप नहीं कर सकते है तो व्यसन छोड़ कर भी तप-साधना में आगे बढ़ सकते हैं ।

अंत समय की आराधना

१. हे जिनेन्द्र ! यह सकल संसार दुःखमय असार है और सब संबंधी स्वार्थी है । इस आत्मा ने प्रत्येक भव में संसार के दुःखमय और स्वार्थमय संबंधों का अनुभव किया है । ऐसे संबंधों से शीघ्र मुक्त हो जाऊँ, ऐसी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ ।

२. हे जिनेन्द्र ! इस भव में मुझे चारित्र उदय में नहीं आया, किन्तु अगले भव में, कम उम्र में, मुझे ज्ञान, वैराग्य के साथ चारित्र का उदय हो, ऐसी आपसे मैं प्रार्थना करता हूँ ।

३. हे जिनेन्द्र ! इस संसार में जब तक मैं फिरूंगा, याने फिरता रहूँगा, तब तक मुझे राज, ऋद्धि और संसार सुख की कुछ इच्छा नहीं है, किन्तु आने वाले भव में मुझे उत्तम मनुष्य भव, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म और धर्म-निष्ठ चारित्र मार्ग बताने वाले माता-पिता मिलें । जिससे मैं, मेरा आत्म-कल्याण साध सकूं, ऐसी मेरी आपसे प्रार्थना है ।

४. हे जिनेन्द्र ! भव का निर्वेद, मार्गानुसारिता, दुःख का क्षय, कर्म का क्षय, समाधि मरण, समकित का लाभ, श्रुत, संयम, तप की मुझे प्राप्ति हो, ऐसी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ ।

५. हे जिनेन्द्र ! मेरा सर्व जीवों के साथ मैत्री भाव है । किसी के साथ वैर-भाव नहीं है । पूर्व वैर के कारण दूसरे जीव मेरे साथ क्रोध करे और उनके मन में वैर-भाव हो, तो भी मैं

मिच्छा मि दुक्कडं देता हूँ । मैं किसी के प्रति वैर नहीं रखूंगा ।

६. हे जिनेन्द्र ! आपके शासन में निदान (नियाणा) संसार सुख की इच्छा से करने का निषेध है । अतः कभी नियाणा न करूंगा ।

७. हे जिनेन्द्र ! मुझे मांस, मदिरा, मक्खन, मधु, जमीकंद, तंबाखू, गुटका - इन व्यसनों का पूर्ण त्याग है ।

८. हे जिनेन्द्र ! मेरी मृत्यु के समय मेरा ममत्व, मैं त्याग करता हूँ । भव अन्त काल के समय आहार, शरीर, उपाधि व अठारह पाप स्थान का मैं परित्याग करता हूँ । पूर्व तक मेरे आगार हैं ।

९. हे जिनेन्द्र ! अन्तकाल के वक्त मैं सब त्याग न कर सकूं और मेरा ध्यान न रहे, तो भी मेरे सर्वथा त्याग धारणा है ।

१०. हे जिनेन्द्र ! मेरी मृत्यु पर कोई रोये, कोई पानी गिरा दे और मेरा पुद्गल (अनित्य) शरीर दो घड़ी (४८ मिनट) से ज्यादा पड़ा रहे और उसमें जीव उत्पत्ति होने के बाद अग्नि दाह करे, उसका पाप मुझे न हो । वह मुझे त्याग है ।

* * *

जीवन को महकाने के लिए ज्ञान का सुन्दर अभ्यास चाहिये । पर्वतों को सुन्दर बनाने के लिए प्रकृति की गोद चाहिये । जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए, सम्यग्दर्शन की बहार चाहिये । जीवन की अन्तस् चेतना जगाने के लिए स्वाध्याय एवं ज्ञान चाहिये ।

श्री सत्य उपदेश

१. रात को जल्दी सोना और जल्दी उठना- यह आरोग्य, बुद्धि और धनदायक है ।

२. बैठकर समय मत खराब करो, भजन करो या उद्यम करो ।

३. महंगी से महंगी क्या चीज है ? प्रभु का नाम ।
सस्ती से क्या चीज है ? प्रभु का नाम ।

४. सत्य बोलने के बराबर कोई तप नही है ।

५. जो जबान को वश में रखते हैं, उनको स्वर्ग प्राप्त होता है ।

६. सबसे बड़ा शस्त्र कौन सा है ? क्षमा और दया !

७. मारो तो किसको मारो ? क्रोध को !

८. जिसके पास क्रोध है, उसको शत्रु की क्या जरूरत है ?

९. जिन्दगी भर का आराम नगद लेना और देना है, अगर किसी को सन्तोष हो तो ।

१०. उपाय करने से दरिद्रता नहीं रहती और भजन करने से पाप नहीं रहता है ।

११. इस देह में छिपे हुए शत्रु क्या है ? एक आलस्य और दूसरा जो आकर आपकी झूठी तारीफ करे ।

१२. जिन्होंने जिनागम, गीता, श्रीमद् भागवत, रामायण नहीं पढ़ी और उनके लिखे अनुसार बर्ताव न किया तो उनको बहुत दुःख भोगने पड़ेंगे

१३. जिन मनुष्य में विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील रूपी गुण नहीं है, उनके बोझ से पृथ्वी दुःखी होती है ।

१४. जो नर वचन कहकर फिर जायें,वह जीवित मुर्दा समान है ।

१५. अच्छे अमीर रइसों के पास जाने से अक्ल बढ़ती है और फायदा भी होता है, गुण भी आता है । परन्तु ऐसे अमीर थोड़े हैं ।

१६. लाभ क्या चीज है ? गुणवानों की संगति और धन क्या चीज है ? विद्या !

१७ वेष बहुत है, पर साधु थोड़े हैं ।

१८. दूसरों पर विपत्ति आने पर दुर्जन सुखी होते हैं ओर सज्जन सहायता देते हैं ।

१९. मर्द की कसोटी क्या है ? जो पराई स्त्री से बचे । जो पुरूष पर-स्त्री से भोग करते हैं, उन्होंने यदि करोड़ों देवों की पूजा की हो तो भी उसके जप-तप आदि का सर्वनाश हो जाता है । पांव-पांव पर ब्रह्महत्या का महापाप लगता है ।

२०. दानी किसको कहते है ? जो सब की सोचे, सत्य बोले ।

२१. विद्या पढ़े हैं, नम्रता नहीं है, तो कुछ नहीं है ।

२२. ब्याह (शादी), मौत, जिन्दगी में कम रूपया लगाना चाहिए, जो पीछे खाल न खींची जाये और खाने कमाने को रूपया मौजूद रहे ।

२३. जितने विषय है, उन्हें विष के समान जानो ।

२४. कपड़ा और जेवर अपनी औरत को अपनी हैसियत से ज्यादा नहीं पहिनाना चाहिए ।

२५. राजा महाराजाओं को चाहिए कि उनकी प्रजा दुःख ना पावे । उनका सबसे बड़ा धर्म यही है ।

२६. राजाओं को ऐसा मंत्री और दीवान रखना चाहिए, जिससे राजा भी प्रसन्न रहे और प्रजा भी ।

२७. पति की सेवा से बढ़कर स्त्री का कोई धर्म नहीं है । दान, व्रत, तीर्थ यात्रा पति के साथ या पति की आज्ञा से करे ।

२८. जो स्त्री पराई पुरूष के साथ इच्छा तृप्त करती है व दूसरे जन्म में शीघ्र विधवा होती है, यदि फिर भी करे तो तीसरे जन्म में कुतिया होती है ।

२९. हम जो बुरा काम करते हैं, उसे अन्तर्यामी भगवान देखते हैं । इसलिये काम सोच समझ कर करने चाहिए ।

३०. पाप का नतीजा देखना हैं तो बड़े अस्पतालों में जाकर देखो ।

३१. उत्तम क्रोध जैसे जल की लकीर, मध्यम क्रोध एक पहर का, कनिष्ठ क्रोध तीन प्रहर का पापी क्रोध तो सदैव रहता हैं ।

३२. जो नौकर मालिक को खुश रखेगा, वह खुद भी खुश रहेगा ।

३३. जो दूसरों का बुरा चाहता है, उसका वैसा ही बुरा होता है । यकीन न हो तो करने वालों को देखो या करके देख लो ।

३४. सत्य उपदेश सब बीमारियों की दवा है । इसके पढ़ने से पापों से बचोगे, पापों से बीमारी होती है और आयुष्य क्षीण होता है ।

❋ ❋ ❋

संस्कारों की झंकार

धनवान अगर नही बन पाओ तो, मन में कोई गम न करना ।
संस्कारों की धन-दौलत से, अपनी झोली तुम भर लेना ।।
सुसंस्कारों की पूंजी से, परिवार सुखी हो जाता है ।
धन वैभव के अम्बारों से, विषय-विकार मन भाता है ।।१।।

भौतिकता की चकाचौंध में, रात-दिवस जो बहते हैं ।
जीवन में झंझावतों के, खूब थपड़े वो सहते है ।।
बंगला-गाड़ी ऐश-मौज ही, जीवन के मकसद बन जाते ।
क्लब-होटल और ढ़ाबों में, निशदिन दौड़-दौड़े जाते ।।२ ।।

परिणाम बुरे होते हैं इसके, परिवार दुःखी हो जाता है ।
धन-दौलत से भरा खजाना, काम नहीं कुछ आता है ।।
मत करो बदनाम धर्म को, फैशन और व्यसन को छोड़ो ।
जैनी हो जैनत्व जगाओ, अपने मन को अब तुम मोड़ो ।।३।।

बदनामी होती है घर की, जब बुरी संगत में पड़ते हैं ।
भाग गई बेटी लो घर से, दुनियाँ वाले हँसते हैं ।।
युवा पीढ़ी भटक रही है, कौन इसे समझायेगा ।
जिसके परिवार में धर्मध्यान, वही परिवार बच पायेगा ।।४।।

जागो जैनियों आंखें खोलो, अरे किधर तुम जा रहे हो ।
इतना ऊँचा धर्म मिला है, क्यों ठोकरें खा रहे हो ।।
नई दिशा दो संतानों को, घर में धर्म की ज्योति जगाओ ।
मिले प्रेरणा परिवार को, सद् आचरण तुम अपनाओ ।।५।।

वीर प्रभु के उपासक अपने कुल की शान रखो तुम ।
प्रभु ने हमें जीना सिखलाया, दुर्व्यसनों से सदा बचो तुम ।।
श्रेष्ठ बनो जीवन में हरदम, श्रेष्ठिवर्य कहलाते हो ।
जीवन बने उन्नत हमारा, यह बात क्यों विसराते हो ।।६।।

त्रिपदी

नवतत्त्व की त्रिपदी – हेय, ज्ञेय, उपादेय
आगम की त्रिपदी – उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य
– सूत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे
कायोत्सर्ग की त्रिपदी – ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं
संसार की त्रिपदी – रोटी, कपड़ा, मकान
आधि, व्याधि, उपाधि
समाज की त्रिपदी – असि, मसि, कृषि
काल की त्रिपदी – भूत, वर्तमान, भविष्य
चिंतन की त्रिपदी – मैं क्या था, क्या हूँ, क्या बनना है ?
व्यवहार त्रिपदी – कम खाना, गम खाना, नम जाना
धर्मत्रय – अहिंसा, संयम, तप
तत्त्वत्रय – देव, गुरु, धर्म
रत्नत्रय – सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र

* * *

समाधि चतुष्क – विनय, श्रुत, तप, आचार
पौषध चतुष्क – आहार त्याग, विभूषा त्याग,
ब्रह्मचर्य पालन, सावद्ययोग त्याग

* * *

धर्म ही तो सार है, धर्म से बेड़ा पार है ।
बिना धर्म क्रिया के, यह जिन्दगी बेकार है ।।

* * *

पच्चक्खाणों के समय का यंत्र

माह	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकार सी
जनवरी	1	6.35	5.53	7.23
जनवरी	16	6.36	6.02	7.24
फरवरी	1	6.36	6.09	7.24
फरवरी	16	6.32	6.15	7.20
मार्च	1	6.25	6.18	7.13
मार्च	16	6.16	6.20	7.04
अप्रैल	1	6.06	6.21	6.54
अप्रैल	16	5.56	6.22	6.44
मई	1	5.49	6.24	6.37
मई	16	5.43	6.28	6.31
जून	1	5.43	6.32	6.31
जून	16	5.46	6.36	6.34
जुलाई	1	5.50	6.39	6.38
जुलाई	16	5.54	6.36	6.42
अगस्त	1	5.57	6.30	6.45
अगस्त	16	5.58	6.20	6.46
सितम्बर	1	5.58	6.10	6.46
सितम्बर	16	5.58	5.59	6.46
अक्टूबर	1	5.59	5.50	6.47
अक्टूबर	16	6.02	5.43	6.50
नवम्बर	1	6.08	5.39	6.56
नवम्बर	16	6.15	5.39	7.03
दिसम्बर	1	6.23	5.40	7.11
दिसम्बर	16	6.31	5.45	7.19

चेन्नई समय के अनुसार

पोरसी	डेढ़ पोरसी	दो पोरसी
9.27	10.53	12.19
9.30	10.57	12.24
9.30	10.58	12.23
9.28	10.57	12.23
9.24	10.55	12.22
9.17	10.49	12.18
9.10	10.44	12.14
9.03	10.38	12.09
8.58	10.34	12.07
8.55	10.32	12.07
8.57	10.34	12.10
9.00	10.37	12.13
9.03	10.40	12.15
9.05	10.41	12.16
9.06	10.42	12.16
9.05	10.39	12.13
9.04	10.37	12.09
9.01	10.33	12.04
8.59	10.29	11.59
8.58	10.27	11.54
9.01	10.29	11.54
9.07	10.34	11.58
9.14	10.40	12.04
9.22	10.48	12.12

प्रतिज्ञा

मैं जैन हूँ ।
मुझे जैन होने पर गर्व है ।
देवाधिदेव अरिहन्त भगवन् मेरे देव हैं ।
सुसाधु मेरे गुरु हैं ।
जहाँ दया है, वहाँ धर्म हैं ।
मैं अपने आपको देव-गुरु-धर्म
एवं संघ के प्रति समर्पित करता/करती हूँ ।

* * *

- मानव जीवन में सत्य का स्थान अत्यंत ऊँचा माना गया है । महाव्रतों में इसका दूसरा स्थान है । मानवता की सच्ची परख सत्य की कसौटी पर कसे जाने से होती है ।
- सत्य के बिना व्यक्ति या समाज का कोई अस्तित्व नहीं है । सत्य के धरातल पर ही समाज का सारा ढांचा खड़ा है । सत्य विमुख समाज का स्वरूप ही नष्ट भ्रष्ट नहीं होता, वरन उसकी साख प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान भी लुप्त हो जाता है । सत्य के बिना कोई समाज नहीं चल सकता ।
- संगति ही करनी है तो धर्म प्रेमी, गुणी सज्जन निर्व्यसनी की करें, साधु संतो की करे । अच्छी संगति अच्छा फल देगी । पाप का पंथ छूट जायेगा । धर्म का पंथ जीवन कल्याण का सत्य मार्ग मिल जायेगा । एक बार कदम इस मार्ग में चलने लगे तो यहां भी सुख प्राप्त होगा, वहां भी सुख मिलेगा ।
- सुख भी डूबाता है दुःख भी डूबाता है । जगाता है, तिराता है एवं पार लगाता है- ज्ञान ।

तुम्हीं मेरे मालिक तुम्हीं मेरे स्वामी

(तर्ज : तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरे पूजा...)

तुम्हीं मेरे मालिक, तुम्हीं मेरे स्वामी,
तुम्हीं हो सहारे, मेरी वन्दना लो, मेरी वन्दना लो।। टेर।।

नहीं इस जग में है कोई मेरा,
आफत ने सारा जीवन है घेरा,
तूं ही दीनबन्धु करुणा के सिन्धु,
करके दया अब मेरी भावना लो ....

कौन सुने जो खुद ही हो जलते,
आज उठे और कल ही हो ढ़लते,
आशा से बन्धे, त ष्णा में अन्धे,
भव दुखियों की सम्भालना लो ....

हमने तो खोया, खोया ही खोया,
अवसर पाकर मोह नींद सोया,
आ अब जगा दे, पार लगा दे,
बने विचक्षण भ्रमर कामना लो ....

✻ ✻ ✻

पाँच बातें जीवन को शांतिमय बनाती है।

- ✻ अपना काम अन्य से मत कराओ।
- ✻ दूसरों की सेवा में आनन्द मनाओ।
- ✻ भूतकाल की घटनाओं को बार-बार याद मत करो।
- ✻ प्रतिदिन की छोटी-छोटी बातें दिमाग में नोट मत करो।
- ✻ सम्पति में मोह घटाओ।

स्मरण पृष्ठ

परिशिष्ट विभाग

वीरत्थुइ

पुच्छिंसु णं समणा माहणा य, अगारिणो या पर-तित्थिया य ।
से केई-णेगंतहिय-धम्ममाहु, अणेलिसं साहु-समिक्खयाए ।।१।।

कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं णाय-सुयस्स आसी ।
जाणासि णं भिक्खु ! जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं ।।२।।

खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणंतदंसी ।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेह ।।३।।

उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्च-णिच्चेहि समिक्ख पण्णे, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ।।४।।

से सव्वदंसी अभिभूय णाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरे सव्व-जगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ।।५।।

से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीर अणंत-चक्खू ।
अणुत्तरे तप्पई सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ।।६।।

अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपण्णे ।
इंदे व देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिविणं विसिट्ठे ।।७।।

से पण्णया अक्खय-सागरे वा, महोदही वावि अणंत-पारे ।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुईमं ।।८।।

से वीरिएणं पडिपुण्ण-वीरिए, सुदंसणे वा णग-सव्व-सेट्ठे ।
सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए णेग गुणोववेए ।।९।।

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिगंडगे पंडग-वेजयंते ।
से जोयणे णव-णवइ सहस्से, उड्ढुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ।।१०।।

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमि-वट्ठिए, जं सूरिया अणु-परिवट्टयंति ।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य, जंसी रतिं वेदयंती महिंदा ।।११।।

से पव्वए सद्द-महप्पगासे, विरायती कंचण-मट्ठ-वण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्व-दुग्गे, गिरीवरे से जलिए व भोमे ।।१२।।

महीइ मज्झंमि ठिए णगिंदे, पण्णायत्ते सूरिय-सुद्ध-लेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरि-वण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ।।१३।।

सुंदसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नाय-पुत्ते, जाई-जसो-दंसण-णाण-सीले ।।१४।।

गिरीवरे वा निसहाऽऽयायाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जग-भूई-पण्णे, मुणीण मज्झे तमुदाहु पण्णे ।।१५।।

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाई ।
सुसुक्क सुक्कं अपगंड सुक्कं, संखिंदु-एगंतवदात-सुक्कं ।।१६।।

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेस-कम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गइं साइमणंत पत्ते, णाणेण सीलेण य दंसणेण ।।१७।।

रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसी रतिं वेदयंती सुवण्णा ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे ।।१८।।

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिण्णमाहु ।।१९।।

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस-वेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयंते ।।२०।।

हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, णिव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ।।२१।।

जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंत-वक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ।।२२।।

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयन्ति ।
तवेसु वा उत्तम-बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते ।।२३।।

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
निव्वाण-सेट्ठा जह सव्व-धम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ।।२४।।

पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे ।
तरिउं समुद्दं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ।।२५।।

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थ-दोसा ।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ।।२६।।

किरियाकिरियं वेणइयाणु वायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं ।।२७।।

से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्ख-खयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्व-वारं ।।२८।।

सोच्चा य धम्मं अरिहंत-भासियं, समाहियं अट्ठ-पदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदेव देवाहिव आगमिस्सं ।।२९।।

नमिपव्वज्जा (उत्तराध्ययन सूत्र नवम् अध्ययन)

चइऊण देवलोगाओ, उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसंत मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ।।१।।

जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ।।२।।

सो देवलोगसरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ।।३।।

मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिणिक्खंतो, एगंत-महिड्ढिओ भयवं ।।४।।

कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमंतम्मि ।।५।।

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जा-ठाणमुत्तमं ।
सक्को माहण-रूवेणं, इमं वयणमब्बवी ।।६।।

किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलग संकुला ।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ।।७।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ।।८।।

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ।।९।।

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो ! खगा ।।१०।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।११।।

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।
भयवं ! अंतेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ।।१२।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ।।१३।।

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं ।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ।।१४।।

चत्तपुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ।।१५।।

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ।।१६।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।।१७।।

पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य ।
उस्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ! ।।१८।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविंदं इणमब्बवी ।।१९।।

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं ।
खंति निउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ।।२०।।

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए ।।२१।।

तव नारायजुत्तेण, भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ।।२२।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।।२३।।

पासाए कारइत्ताणं, वध्दमाण-गिहाणि य ।
वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ।।२४।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदं इणमब्बवी ।।२५।।

संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ।।२६।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।।२७।।

आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।।२८।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ।।२९।।

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दण्डो पउंजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चई कारओ जणो ।।३०।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।३१।।

जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।।३२।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ।।३३।।

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।३४।।

अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणचेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ।।३५।।

पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ।।३६।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।३७।।

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ।।३८।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविन्दं इणमब्बवी ।।३९।।

जो सहस्सं सहस्साणं, मासे-मासे गवं दए ।
तस्सवि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं ।।४०।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।४१।।

घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ।।४२।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।।४३।।

मासे-मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए ।
न सो सुयक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ।।४४।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।४५।।

हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ।।४६।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ।।४७।।

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,इच्छा हु आगास-समा अणंतिया ।।४८।।

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ।।४९।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ।।५०।।

अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहण्णसि ।।५१।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविन्दं इणमब्बवी ।।५२।।

सल्लं कामा विसं कामा, कामा-आसी विसोवमा ।
कामे य पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ।।५३।।

अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गई-पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ।।५४।।

अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ।।५५।।

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ।।५६।।

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ।।५७।।

इहंसि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ।।५८।।

एवं अभित्थुणंतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेंतो, पुणो-पुणो वंदई सक्को ।।५९।।

तो वंदिऊण पाए, चक्कं-कुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासे-णुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ।।६०।।

नमी नमेई अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ।।६१।।

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ।।६२।। -त्ति बेमि

* * *

सामायिक की साधना प्रारम्भ करने पर स्वाध्याय, जप, ध्यान, भावना आदि साधना के कई अंग गतिशील होते हैं,

* * *

मरुदेवी स्तवन

क्रोड़ पूर्व लग पामी साता मोरादेवी माता जी ।। टेर ।।

नगरी वनिता भली विराजे, जगमग-जगमग सोहे जी ।
कंचनमयी कोट विराजे, सुर-नर ना मन मोहे जी ।।१ ।।

नगर वनिता बारह योजन, पूरब पच्छिम जाणो जी ।
नव योजन री बीच में पोली, उत्तर दक्षिण जानो जी ।।२।।

पाँच वर्ण रा मणी कांगरा, जाली-झरोखा ने गोखा जी ।
दरवाजा तो घणा दीपता, देख-देख मन मोहे जी ।।३।।

सोना का तो कोट कांगरा, रूपा रा दरवाजा जी ।
अध बीच हीरा-पन्ना जड़िया, मोत्यांरी लडलूंबा जी ।।४।।

आदिनाथ जी आय ने उपन्या, मोरादेजी री कुंखे जी ।
जामण जग में हो गया चावा, ज्यांरे आदिनाथजी सा बेटा जी ।।५।।

सेज्या ऊपर बैठा सोवे, तेवड़ तकीया गादी जी ।
भरत बाहुबल सरीसा पोता, जग में दीपे दादी जी ।।६।।

अट्ठाणुं वलि नाना पोता, लुल-लुल लागे पाये जी ।
रूप अनूपम अव्वल विराजे, मुलकंता मुख आगेजी ।।७।।

ब्राह्मी-सुन्दरी दोनों ही पुत्री, रही अखण्ड कुवारी जी ।
मोटी सतियां मुगते पहुंची, जग में महिमा भारी जी ।।८।।

क्रोड़ पूर्व रो पूरो आऊखो, पाँचसौ धनुष री काया जी ।
जीव्याँ ज्यां लग जोवन रह्यो, देखो पूरबली माया जी ।।९।।

पैसठ हजार पीढ्यां नजरे देखी, नाम जिणां रा धरिया जी ।
शोक-संताप तो कदियन देख्यो, पूरा पुण्यज संच्या जी । ।१०।।

जूना कपड़ा अंग नहीं पहन्यां, करणी इसड़ी किनी जी ।
नित नवला तो चुड़ला पैर्यां, कशुमल साड़ी सीधी जी ।।११।।

अंग में कदियन आई असाता, टसको कदियन कीनो जी ।
मोरादेजी जीव्या ज्यां लग, औषध कदियन लीनो जी ।।१२।।

वास-एकासणा कदियन करियो, आयंबिल ने वलि नीवी जी ।
मोरादेजी खाता-पीता, सीधे मुगते पोंहता जी ।।१३।।

हाथी घोड़ा माल खजाना, माणक ने वलि मोती जी ।
कुल बहुवां तो पाये लागे, माँजी आशीष दे-दे थाका जी ।।१४।।

बेटा-पोता ने पड़पोता, लड़पोता रो नहीं लेखो जी ।
तीन बधाई सागे आवे, पुण्य तणा फल देखो जी ।।१५।।

आदिनाथजी आयने उतर्या, भरत दीवी बधाई जी ।
हरख धरी ने हस्ती बैठा, माता पुत्र वन्दण ने चाल्याजी ।।१६।।

मोरादेवी मारग बहता, कहे भरत ने एमोजी ।
तीर्थंकर ना महोच्छव करता, बाजा घणेरा बाजे जी ।।१७।।

इन्द्र-इन्द्राणी ने देवी-देवता, नर-नारियां रा वृन्दो जी ।
समवशरण में साहेब सोहे, जिम तारा बीच चन्दो जी ।।१८।।

स्फटिक सिंहासन बैठा देख्या, मन में इसड़ी आईजी ।
इसी सायबी पुत्र भोगवे, कौन चिंता रे माई जी ।।१९।।

पाँच गोठिला लारे हूंता, साधु ने दीनी साता जी ।
पांचू ही आय वनिता उपन्या, शिवरमणी में पोहता जी ।।२०।।

मैं तो मोह घणेरो करती, यांरी रीतज भारी जी ।
किसकी माता किसका बेटा, मोह कर्म सूं हारी जी ।।२२।।

बुढ़ापो तो आई लागो, शक्ति मारी हट गई जी ।
मैं तो दर्शन कदियन करिया, रीखबो-रीखबो करती जी ।।२१।।

जग तारण ने जोती जामण, ध्यायो निर्मल ध्यानोजी ।
मोह कर्म मोरादे जीत्यां, उपन्यो केवलज्ञानो जी ।।२३।।

इण चौवीसी सारां पेली, शिवरमणी में पोंहता जी ।
मोरादे जी मुगते पोंहता, हाथी रे होदे बैठाजी ।।२४।।

अदिनाथजी ने केवल उपन्यो, मुगते पोंहती माता जी ।
रीख रायचन्द जी केय गुण गावे, ते नर पामें साता जी ।।२५।।

संवत ऊगणीसे साल पैतीसे, मेड़ते नगर चौमासो जी ।
काति वद सातम गुण गाया, भणता लील विलासो जी ।।२६।।

* * *

मृत्यु के समय शरीर में से जीव (आत्मा) निकलने के पाँच लक्षण

१. पांव में से जीव निकलता है तो नरक गति में जाता है ।
२. जंघा में से जीव निकलता है तो तिर्यंच गति में जाता है ।
३. हृदय में से जीव निकलता है तो मनुष्य गति में जाता है ।
४. मस्तक में से जीव निकलता है तो देव गति में जाता है ।
५. सब अंगों में से जीव निकलता है तो सिद्ध गति में जाता है ।

शान्तिनाथ की ऋध्दि

सोलमां जिनजी, शान्तिनाथ साताकारी जी ।।टेर।।

आपरा दर्शन की बलिहारी,
आपकी महिमा जगत मांहे भारीजी ।।१।।
हस्तिनापुर विश्वसेन राया,
अचलादे राणी का जायाजी ।।२।।
प्रभु सर्वार्थसिद्ध थकी चवी आया,
माताजी चौदह सुपना पाया जी ।।३।।
प्रभु भादवा वदी सातम थकी चवी आया,
जेठ वदी तेरस का जायाजी ।।४।।
जन्म महिमा मनावे,
छप्पन कुंवारी मंगल गावेजी ।।
चौसठ इन्द्र तिहां आवे,
प्रभु ने मेरूशिखर नवरावे जी ।।५।।
पेली हुँतो हस्तिनापुर मायें,
मृगी रो रोग मिटायो जी ।।६।।
माता-पिता नाम जो दियो,
शान्ति कुंवर प्रसिद्धोजी ।।७।।
सभी लोक सुख पाया,
शान्ति शान्ति बरताया जी ।।८।।
प्रभु कंवर पद रह्या सारो,
बरस पच्चीस हजारो जी ।।९।।

पछे हुँता मण्डलिक राया,
सेंस पच्चीस वरस ठायाजी ।।१०।।
पूरव पुण्य किया भारी,
चक्रवर्ती की पदवी धारीजी ।।११।।
चौरासी लाख गजरथ घोड़ा,
पेदल छिन्नु करोड़ो जी ।।१२।।
महल बयालीस भोम्या सोहे,
गोख जाली मन मोहेजी ।।१३।।
एक लाख ने बाणु हजारों,
राण्यां तणों परिवारो जी ।।१४।।
राज कुमार्या चौसठ हजारो,
दो-दो वारांगणा लारोजी ।।१५।।
दिन-दिन अधिक जगदिशों,
नाटक पड़े बत्तीसो जी ।।१६।।
दिन-दिन हर्ष नो जोड़ो,
बेटा हुआ डेढ़ करोड़ो जी ।।१७।।
षट् खण्ड केरो ईशो,
मोटा राजा सेस बत्तीसो हजारो जी ।।१८।।
छोटा राजा बत्तीस हजारों,
सगलाई करे नमस्कारो जी ।।१९।।
सोलह सेंस रत्ना की खानों,
बत्तीस सेंस सोना रूपा की खानो जी ।।२०।।

ज्यारा घर माहें नव निधानों,
धन रो तो किम आवे मानो जी ।।२१।।
ज्यांरे चवदे रत्न है भण्डारों,
सुर सेवे पच्चीस हजारों जी ।।२२।।
धान पहले प्रहर में बावे,
बीजा प्रहर में पावे जी ।।२३।।
तीजा प्रहर में पकावे,
चौथा प्रहर में खावे जी ।।२४।।
एक दिन को रसोड़ो,
धान सींझे चार मण करोड़ो जी ।।२५।।
दस लाख मण लूणों,
इण से तो नहीं लागे ऊणोजी ।।२६।।
चालीस मण हींग को बगारो,
निन्याणुं मण वेसवारो जी ।।२७।।
और मसालो सारो,
गिणता नहीं आवे पारो जी ।।२८।।
ग्रन्थां में घृत रो परमाणो,
अस्सी लाख मण जाणोजी ।।२९।।
भाणे जीमण की जोड़ो,
परिवार सात करोड़ो जी ।।३०।।
ज्यारे सोना रूपारा थालो,
प्याला है,रत्ना रसालोजी ।।३१।।

ज्यारे तीन सोने साठ रसोईदारो,
लारे घणो परिवारो जी ।।३२ ।।
पाणी भरवारा पखालियां,
बहोत्तर लाख जो चाल्या जी ।।३३।।
दीवा करण की जोड़ो,
उभा छे पांच करोड़ोजी ।।३४।।
कोस अड़तालिस मंझारो,
सेना तणो विस्तारो जी ।।३५।।
नगर बहोत्तर हजारो,
चौरासी बाजारो जी ।।३६।।
तेरस तेला किया अखण्डो,
साध लिया छः खण्डो जी ।।३७।।
चक्रवर्ती की पदवी सारी,
भोगवी बरस पच्चीस हजारो जी ।।३८।।
इसड़ी तो ऋद्धि प्रभु पाई,
छिन मांहि दीनी छिटकाई जी ।।३९।।
वरसी दान देई सारो,
झुरतो तो मेल्यो परिवारो जी ।।४०।।
जाण्यो है अस्थिर संसारो,
सेंस जणा हुआ तैयारो जी ।।४१।।
जेठ वदी तेरस लीनी दीक्षा,
कीनी छः काया की रक्षा जी ।।४२।।

एक मास में केवल पायो सारो,
प्रभु तुरत कियो उपकारो जी ।।४३।।
प्रभु जिन मार्ग उजवाल्यो,
मिथ्या मत ने गाल्यो जी ।।४४।।
बासठ सेंस अणगारो,
आरज्यांजी निव्यासी हजारो जी ।।४५।।
केवली तीन सौ ने चार हजारो,
ज्यांने म्हारो नमस्कारो जी ।।४६।।
दो लाख ने नेउ हजारो,
ज्यारें श्रावक मोटा व्रत धारोजी ।।४७।।
तीन लाख ने तैयांसी हजारो,
ज्यारे श्रावकण्या रो परिवारोजी ।।४८।।
प्रभु चारों ही तीरथ थाप्या,
भव जीवां रा करज सार्‌याजी ।।४९।।
दीक्षा पाली वरस पच्चीस हजारो,
कर दियो खेवो पारो जी ।।५०।।
नवसो साधां सुं कियो संथारो,
जेठ वद तेरस ने सिद्धोजी ।।५१।।
आयु लाख वरसारों सारो,
कर दियो खेवो पारोजी ।।५२।।
जिन मार्ग सांचो जाण्यो,
मिथ्यात्व हृदय नहीं आण्योजी ।।५३।।

❋ ❋ ❋

नेमजी का स्तवन

पहली भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरीजी पीठी करावणी बन्दोला, जीमतां ने आवै घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

दूजी भावज इम कैवे सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरोजी पाटां रो बैठणो, डोरो बांधता ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

तीजी भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरो जी शामिल रेवणो, तोरण वांदतां ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

चौथी भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरो जी घोड़ी बेठणो, हथलेवो जोड़ता ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

पांचमी भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरो जी चंवरियां रो बैठणो, फेरा खावतां ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

छठी भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरी जी जातां देवणी, देव धोकतां ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

सातमी भावज इम केवे, सांभलो देवर हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
दोरोजी कांकण-डोरा खोलणा, ठोरा-मुक्की रमंता ने आवे घणी लाज ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।

आठवीं बहिन यूं बोलिया, सांभलो वीराजी हम तणी बात ।
कुल में कंवारा देवर नेमजी ।
एक नारी ओ बिन बरजिया कुण राखेला, कुण चलावेला नाम ।
तो जिण कारण परणे नहीं वीराजी ।

गेली ये बाई बावळी, नारी तो असल गिंवार के ।
ए बाई तरुवर सूं ज्यूं डाल टूटे, काल मरी ले जावे नरक रे मांय ।
तो जिण कारण परणे नहीं नेमजी ।
कर्म खपाय मुगते गया, वरतियां मंगलाचार ।
दान शीयल तप भावना, शिवपुर मारग चार के ।।
कुल में कंवारा नेम जी ।
कुल में कंवारा देवरजी ।।

❋ ❋ ❋

गजसुकुमालजी का स्तवन

वसुदेव ना नंदन, धन-धन गज सुकुमाल ।
रूपे अति सुन्दर, कलावंत वय बाल ।।१।।

सुण नेमजी री वाणी, छोड्यो मोह-जंजाल ।
भिक्षु नी पड़िमा, गया मसाण महाकाल ।।२।।

झट सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल ।
खेरा नां खीरां, शिर ठविया असराल ।।३।।
मुनि नजर न खंडी, मेटी मन नी झाल ।
परीषह सही ने, मुक्ति गया तत्काल ।।४।।

माताजी रे हाथ जीम्यां, सोवन कचोले थाल ।
गोचरी नहीं उठ्या, नहीं कीधो पात्रां में आहार ।।५।।

भूमि नहीं पोढ्यां, नहीं कीधो उग्र विहार ।
ज्यांने नित उठ वन्दन, चरणां में सौ-सौ बार ।।६।।

प्रभाते सिमरो, नाम लिया निस्तार ।
सींझ्या नित सिमरो, सिमरो सौ-सौ बार ।।७।।

दया रा सागर, कर दियो बेड़ो पार,
सामायिक रा सागर, कर दिया बेड़ो पार ।।८।।

समता रा सागर, नैया तिरावण हार ।
खीमिया रा सागर, मुझ ने पार उतार ।।९।।

❋ ❋ ❋

वीर प्रभु के चौदह चातुर्मास

इण नालन्दा पाड़ा में प्रभुजी, चौदह किया चौमासा जी ।।टेर।।

मगध देश के मांय विराजे, सुन्दर नगरी सोहे जी ।
राज गृही राजा श्रेणिक री, देखन्ता मन मोहे जी ।।१।।

श्रावक लोक बसे धनवंता, जिन मारग ना रागी जी ।
घर-घर मांही सोनो रूपो, ज्योति जगमग लागी जी ।।२।।

जड़ाव गहणा जोड़े विराजे, हार मोत्यां नव लड़्याजी ।
वस्त्र पहने भारी मोला, गहणां रत्नां जड़िया जी ।।३।।

धन धर्मी नालन्दा पाडे, दोनों बात विसेखो जी ।।
फिर-फिर वीर आया बहु विरिया, उपकार घणेरो कीधो जी ।।४।।

तीन पाट राजा श्रेणिक रा, समकित धारी लगता जी ।
जिन मारग तो खूब दिपायो, वीरा तणा हुआ भक्ताजी ।।५।।

पीहर मांही समकित पाया, चेलना पट राणी जी ।
महासति जी संयम लीधो, वीर जिनन्द बखाणीजी ।।६।।

अभयकुंवरजी महा पुनवंता, मंत्री की बुद्धि भारी जी ।
संयम लेई ने स्वर्ग पहुंच्या, हुआ एका भव अवतारी जी ।।७।।

तेईस राणी राजा श्रेणिक री, तप कर देही गाली जी ।
मोटी सतियां मोक्ष पहुंची, अष्ट कर्म ने काटी जी ।।६।।

जम्बू स्वामी हुवा इण नगरी में, आठ अंतेउर परणीजी ।
बाल ब्रह्मचारी भली विचारी, निर्मल करणी कीधी जी ।।१०।।

गोभद्र सेठ हुआ इण नगरी में, सेठे संयम लीधो जी ।।
वीर सरीखा सद्गुरु मिलिया, जनम-मरण से डरियाजी ।।११।।

शालिभद्र सेठ हुआ इण नगरी में, बलि वाणियो धन्नोजी ।
बहिन सुभद्रा संयम लीनो, मुगत जावत रो मन्नो जी ।।१२।।

महाशतक श्रावक हुआ इण नगरी में, श्रावक पड़िमा धारी जी ।
करणी करने कर्म खपाया, हुआ एक भव अवतारी जी ।।१३।।

सेठ सुदर्शन सेठां श्रावक, वीर वन्दन ने चाल्याजी ।
रस्ता मांही अर्जुन मिलियो, न रह्यो किण रो पाल्यो जी ।।१४।।

अर्जुनमाली लारे हुवो, वीरा जिनन्द को भेट्याजी ।
माली ने दिलाई दीक्षा, दुःख नगरी का मेट्या जी ।।१५।।

मेघकुंवर श्रेणिक ना बेटा, लीधो संयम भारो जी ।
व्यावच्च निमित्ते करदी काया, किनी दोय नैनारी सारो जी ।।१६।।

श्रेणिक राजा समकित धारी, कीधो धर्म उद्योतो जी ।
एकण घर में दोई तीर्थंकर, दादा ने वलि पोतोजी ।।१७।।

उत्तम पुरूष केई आई उपन्या, श्रावक ने वलि साधुजी ।
भंगवंता री सेवा कीधी, धन मानव भव लीधो जी ।।१८।।

शासन नायक तीरथ थाप्या, शाश्वता सुख पायाजी ।
ऋषि 'रायचन्दजी' कहे केवल पाकर, मुगतमहल सिधायाजी ।।१६।।

सम्वत् अठारे गुण चालीसे, नागौर शहर चौमासो जी ।
पूज्य जयमलजी रे प्रसादे, कीधी जोड़ हुलासो जी ।।२०।।

❋ ❋ ❋

सीमंधर जी को स्तवन

महाविदेह में चौथो आरो, ज्यां विराजो आप ।
भरतक्षेत्र में करूंजी वन्दना, जपसूं थारो जाप ।।१।।
म्हैं तो दरसण करसाजी, म्हारा सतगुरुजी री म्हैं तो सेवा करसाजी
दरसण करसा सेवा करसा जिको दिहाड़ी धन्न ।
कै तो जाणे केवलज्ञानी, कै जाणे म्हारो मन ।।२।। म्हैं तो ...
हूंस घणां दिनां री होती, मुझ हिवड़ा के हेज ।
आवण की मुझ शक्ति होती, तोईन करतो जेज ।।३।।म्हैं तो..
स्वामीजी तो म्हारा सायब, हूं स्वामीजी रो दास ।
बस्यां म्हारे हिवड़े भीतर, ज्यूं फूलां में बास ।।४।। म्हैं तो ...
स्वामीजी की सूरत-मूरत, व्हाली लागे मोय ।
निरखतां न नैनां धापे, वाणी अमृत जोय ।।५।।म्हैं तो ...
स्वामीजी तो सोवन वरणा, दीपूं-दीपूं करती देह ।
नैणा दीठा लागै मीठा, वाणी अमरित मेह ।।६।। म्हैं तो ...
अन्तरयामी रा वारणा लेऊं, दाहड़ा में लख वार ।
करुणा सागर किरपा कीजो, भवसागर थी तार ।।७।।
स्वामीजी तो म्हारा मन में, वाप्या सगली देह ।
रोम-रोम में बसग्या म्हांरे, ज्यूं बादल में मेह ।।८।। म्हैं तो...
दूर दिशावर म्हारा सायब, मिलियो च्हावै मन ।
पपैयो मेह बिना तरसे, ज्यूं तरसै म्हारो तन ।।९।। म्हैं तो...
म्हारो मनड़ो आवै-जावै, ज्यां बैठा जगन्नाथ ।
भाखर-भीतड़ कछु नहीं गिणी, नहीं गिणी दिन-रात ।।१०।। म्हैं तो..

प्रभुजी तो मिलिया पछै, रंग में पड़ गया पास ।
अन्तरजामी रे आगल कहतां, पूरो मन की आस ।।११।। म्हैं तो...
म्हारा रे जिनवर सारीखा, नहीं कोई जग में देव ।
जिनवरजी तो सांचा स्वामी, ज्यांरी करसां सेव ।।१२। म्हैं तो..
और देव म्हांरे दाय न आवे, जीत्यां राग ने धेक ।
रिख 'रायचन्दजी' इम भणे ने केवलज्ञानी एक ।।१३।।म्हैं तो...
संवत् अठारे वरस छतीसे, रीयां रह्या चार रात ।
सीमंधर जिनवरजी रे आगल, जोडूं दोनूं हाथ ।।१४।।
म्हैं तो दरसण करसाजी, म्हारा सतगुरुजी री म्हैं तो सेवा करसाजी

* * *

श्री सीमंधर स्वामी

श्री श्री सीमंधर स्वामी, हिवड़ा के अन्तरयामी ।
अकुड़ी वेला म्हांने, भूल मत जाईजो सा ।।१।।
समगतिया समेज मेलो, काया म्हारी काची सा ।
तप-जप करवा री म्हारी शक्ति कोनी सा ।।२।।
महाविदेह क्षेत्र में आप विराज्या, अमृत वाणी बरसे सा ।
आपरी सेवा में आवण ने, म्हांरे ज्ञान गाड़ी भेजो सा ।।३।।
पाट ऊपर बैठां सोवो, हरियो पुठो हाथ सा ।
झीणो-झीणो सुत्तर बांचो, सुत्तर सुणवा आईसा ।।४।।
झीणो झीणो मांगलिक देवो, मांगलिक सुणवा आई सा ।।

* * *

जीव राशि आलोचना

(तर्ज : विमल जिनेश्वर सेविये ....)

हिवे राणी पद्मावती, जीव-राशि खमावे ।
जाणपणुं जग ते भलुं, इण वेला जो आवे ।।१।।

ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतों नी साख ।
जे मैं जीव विराधिया, चौरासी लाख...ते मुझ...।।२।।

सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेऊ तणा, साते वलि वाय....ते मुझ....।।३।।

दश लाख प्रत्येक वनस्पति, चवदह साधारण ।
बे-ती-चौरिंद्रिय जीव नी, बे-बे लाख विचार..ते मुझ..।।४।।

देवता तिर्यंच नारकी, चार-चार प्रकाशी ।
चौदह लाख मनुष्य ना, ए लाख चौरासी...ते मुझ..।।५।।

इण भव पर-भव सेविया, जे-जे पाप अठार ।
त्रिविध-त्रिविध करि परिहरूं, दुर्गति ना दातार...ते मुझ..।।६।।

हिंसा कीधी जीव नी, बोल्या मृषावाद ।
दोष अदत्तादान ना, मैथुन उन्माद...ते मुझ...।।७।।

परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ।
मान-माया-लोभ मैं किया, वली राग ने द्वेष...ते मुझ...।।८।।

कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूड़ा कलंक ।
निंदा कीधी पारकी, रति-अरति निःशंक...ते मुझ..।।९।।

चाडी कीधी पारकी, कीधो थापण मोसो ।
कुगुरु-कुदेव-कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो...ते मुझ..।।१०।।

खटीक ने भवे मैं किया, जीव ना वध घात ।
चिड़ीमार भवे चिड़कला, मार्‌या दिन ने रात...ते मुझ..।।११।।

काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर ।
जीव अनेकां वध किया, कीधो पाप अघोर...ते मुझ..।।१२।।

मछीमार भवे माछला, झाल्या जल वास ।
धीवर-भील-कोली भवे, मृग पाड्‌या पास...ते मुझ..।।१३।।

कोटवाल ने भवे मैं किया, आकरा कर दंड ।
बन्दीवान मराविया, कोरड़ा छड़ी दंड...ते मुझ..।।१४।।

परमाधामी ने भवे, दीधा नारकी दुःख ।
छेदन-भेदन वेदना, ताड़न अति तिक्ख...ते मुझ..।।१५।।

कुम्हार ने भवे मैं घणा, नीमाह पचाव्या ।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिण्ड भराव्या...ते मुझ..।।१६।।

हाली-भवे हल खड्‌या, फोड्‌या पृथ्वी ना पेट ।
सूड़-निनाण किया घणां, दीधी बलदां चपेट...ते मुझ..।।१७।।

माली भवे रूंख रोपिया, नाना विध वृक्ष ।
मूल-पत्र-फल-लता, फूल लाग्या पापज लक्ष...ते मुझ..।।१८।।

अधोवाइया ने भवे, भरिया अधिका भार ।
पीठ पूठे कीड़ा पड्‌या, दया न आणी लिगार, ते मुझ ।।१९।।

छींपा ने भवे छेतर्यो, कीधा रांगण पास ।
अगनि आरंभ किया घणां, धातुवाद अभ्यास..ते मुझ..।।२०।।

शूरपणे रण जूझता, मार्या माणस वृंद ।
मदिरा-मांस-माखण भख्या, खाधा मूल ने कंद, ते मुझ।।२१।।

खाण खणावी धातु नी, सर पाणी उलीच्या ।
आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज संच्या...ते मुझ..।।२२।।

अंगार कर्म किया वली, वन में दव दीधा ।
सौगंध खाई वीतराग नी, कूड़ा दोषज दीधा..ते मुझ..।।२३।।

बिल्ली भवे उन्दर गिट्या, गिलोरी हत्यारी ।
मूढ़ गंवार तणे भवे, मैं जूं-लीखां मारी ...ते मुझ..।।२४।।

भड़भूंजा तणे भवे, एकेन्द्रिय जीव ।
जवार चणा गेहूँ सेकिया, पाडंता रीव ...ते मुझ..।।२५।।

खांडण पीसण गारना, किया आरंभ अनेक ।
रांधण इंधण अग्नि ना, कीधा पाप उद्वेग ...ते मुझ..।।२६।।

विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पडाविया, रोवन विख-वाद ...ते मुझ..।।२७।।

साधु अने श्रावक तणां, व्रत लेई ने भांग्या ।
मूल अने उत्तरगुण तणां, मुझ दूषण लाग्या...ते मुझ..।।२८।।

साँप-बिच्छू-सिंह-चीतरा, सिकरा ने समली (चील) ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली...ते मुझ..।।२९।।

सूवावड़ी दूषण घणां, वलि गर्भ गलाव्या ।
जीवाणी ढ़ोली घणी, शील व्रत भंजाव्या ...ते मुझ..।।३०।।

भव अनंत भमतां थकां, कीधो देह सम्बन्ध ।
त्रिविध-त्रिविध करि वोसिरूं, तिणशुं प्रतिबन्ध...ते मुझ..।।३१।।

भव अनंत भमतां थकां, कीधो परिग्रह संबंध ।
त्रिविध-त्रिविध करि वोसिरूं, तिणशुं प्रतिबन्ध...ते मुझ..।।३२।।

भव अनंत भमतां थकां, कीधो कुटुम्ब-सम्बन्ध ।
त्रिविध-त्रिविध करि वोसिरूं, तिणशुं प्रतिबंध...ते मुझ..।।३३।।

इण विध इह-भव पर-भवे, किया पाप अखत्र ।
त्रिविध-त्रिविध करि वोसिरूं, करूँ जन्म पवित्र...ते मुझ..।।३४।।

इण विधि यह आराधना, भावे करसे जेह ।
समयसुंदर' कहे पाप थी, वलि छूटसे तेह..ते मुझ..।।३५।।

***

नवकार महामंत्र की महिमा

नवकार मंत्र चौदह पूर्व का सार है । सभी धर्मों में अरिहन्त अवस्था, सिद्ध अवस्था, आचार्य पद, उपाध्याय पद तथा संत पद प्राप्त, महान् विभूतियों को नमन करने का यह एकमात्र महामंत्र है । भव्य जीव महामंत्र के माध्यम से संसार-चक्र से छुटकारा पा लेते हैं । शुभाशुभ कर्मों की निर्जरा करने में नवकार मंत्र सहायक होता है । महिमामयी णमोक्कार महामंत्र आत्मिक एवं सांसरिक दोनों क्षेत्रों में सुख-शान्ति का प्रदाता है, इसमें गुणों की उपासना की गई है । अतः नवकार मन्त्र सर्वव्यापक, सनातन है । महामंत्र नवकार कल्याणकारी तथा जीवन को श्रेष्ठ उँचाइयों पर ले जाने वाला है ।

आलोयणा

बणूं आराधिक इण भवे जी, करूं पाप प्रकाश ।
पापी हूं माफी करो जी, दास दास मैं हूं दास ।।१।।
हो जिनजी, मिच्छामि दुक्कडं मोय... ।। टेर ।।

जतना न राखी जीव री जी, झूठ वचन कह्या होय ।
चोरी कीनी भूल से जी, शील न पाल्यो जोय ।।२।। हो जिनजी..

आशा तृष्णा वश भमी जी, दमी ना क्रोध कषाय ।
राग-द्वेष दिल में किया जी, पाप किया हरषाय ।।३।।हो जिनजी..

वृद्ध अपंग रोगी तणा जी, सेवा न की मन लाय ।
कटु वचन संतापिया जी, पूछी न साता जाय ।।४।। हो जिनजी..

शुद्ध क्रिया मैं ना करीजी, टाली सब बेगार ।
शुद्ध संयम पाल्यो नहींजी, हा-हा मुझ धिक्कार ।।५।।हो जिनजी..

इष्ट अनिष्ट वस्तु परे जी, राग द्वेष मैं कीन ।
आर्त रौद्र नित ध्यान में जी, रहा है भाव मलीन ।।६।।हो जिनजी.

धर्म ध्यान ध्यायो नहीं जी, नहीं शुक्ल-शुभ ध्यान ।
शास्त्र रूचि जागी नहीं जी, कैसे हो कल्याण ।।७।।हो जिनजी..

कपट सहित करणी करी जी, आत्म प्रशंसा हेत ।
गुणियां रा गुण गाया नहीं जी, कलंक उन पर देत ।।८।।हो जिनजी.

प्रभु आज्ञा पाली नहीं जी, प्रमाद कियो दिन रात ।
खाय पीय ने सोय रह्योजी, कीनी संयम की घात ।।९।।हो जिनजी.

झगड़ा कराया संघ में जी, किया गच्छ में भेद ।
लड़ी लड़ाई हर्ष से जी, उसका मुझ मन खेद ।।१०।।हो जिनजी.

रसना वश हो मोह से जी, भोग्या अनेसणीक आहार ।
ज्ञान ध्यान में रम्यो नहीं जी, गयो जनम मैं हार ।।११।।हो जिनजी.

अरिहंत सिद्ध आचार्य की जी उपाध्याय अणगार ।
सेवा न शुद्ध मन से करी जी, कैसे हो भव पार ।।१२।।हो जिनजी.

परिग्रह बढ़ायो प्रेम सूं जी, भरिया खूब भण्डार ।
कूड कपट सेवन किया जी, पाल्यो न शुद्ध आचार ।।१३।।हो जिनजी.

सुमति गुप्ति निर्मल नहीं जी, निर्मल नहीं नववाड़ ।
षरिषह में कायर घणोजी, करतो हूं तन का लाड ।।१४।।हो जिनजी.

परम दयालु करुणा निधि जी, सुमति दो जिनराज ।
अनन्त अवगुण से मैं भर्यो जी, तारो गरीब निवाज ।।१५।। हो.

आतम दमूं समता धरूंजी, करूं नित सतगुरु री सेव ।
कषाय तजूं प्रभू भजूं जी, मुगति लेऊँ ततखेव ।।१६।।हो जिनजी.

ज्ञान वैराग्य होवे चित में जी, करूं प्रपंच रा त्याग ।
इन्द्रिय दमूं मन वश करूं जी, संयम में अनुराग ।।१७।। हो जिनजी

गुरु म्हारा करुणानिधि जी, 'केवल' है तस दास ।
खाचरोद दस साल में जी, कियां पापां रो नाश हो ।।१८।।हो..

✻ ✻ ✻

धर्म पचकूटो

पहला ऋषभदेव नाथ जिन जिन वान्दूं,
दूजा अजितनाथ देव रे धर्म पचकूटो ।।१।।
जीमो नी भायां-बायां, धर्म पचकूटो ।
आठ कर्म जावे छुटी रे, धर्म पचकूटो ।।२।।
केर तो केवे कड़वा मत बोलो जी ।
बोलो बोलो मिश्री जबान रे, धर्म पचकूटो ।।३।।
सांगरियाँ तो केवे सांचा बोलो जी ।
जो धर्म केरा मेवा खावाजी, धर्म पचकूटो ।।४।।
कुमटियां तो केवे कुमति हटायजो ।
सुमति ने संग में राखजो जी, धर्म पचकूटो ।।५।।
गूंदा तो केवे काम मति करजो उन्दा ।
धर्म री श्रद्धा राखोजी, धर्म पचकूटो ।।६।।
अमचूर तो केवे अहंकार ने छोड़ जी ।
गुरु सा केवे शास्त्र बताय जी, धर्म पचकूटो ।।७।।
मिरची तो केवे तीखां मत बोलोजी ।
बोली तो बोलो मीठी बोली रे, धर्म पचकूटो ।।८।।
नमक तो केवे नरम होय जावो जी ।
क्रोध ने दूर हटावो जी, धर्म पचकूटो ।।९।।
हल्दी तो केवे हल्का होय जावो जी ।
कषाय ने दूर हटावो जी, धर्म पचकूटो ।।१०।।
जीरो तो केवे जीवन सुधारो जी ।
छः काया री दया पालो जी, धर्म पचकूटो ।।११।।

धाणा तो केवे धर्मध्यान ध्यावो जी ।
ध्यावो-ध्यावो शुक्ल ध्यान ध्यावो जी, धर्म पचकूटो ।।१२।।
राइयां तो केवे रात्रि भोजन त्यागो जी ।
करो-करो चौवीहार पच्चक्खाण जी, धर्म पचकूटो ।।१३।।
हींग तो केवे चौथो व्रत आराधो जी ।
शील री सुगंध ने फैलावो जी, धर्म पचकूटो ।।१४।।
छोड़ो नी भायां थे तो संसार रो फंदो ।
छोड़ो नी बायां थे तो संसार रो फंदो ।
आठों ही कर्म जावे छूटजी, धर्म पचकूटो ।।१५।।

* * *

नवकार वाली तूं म्हारी माय

नवकारवाली तूं म्हारी माय के, म्हारो है हिवड़ो रो हार के ।
जीवड़ा रो आधार के, थाने हो सिमरियां,
के माता गुण घणां जी ।।१।।
थाने सिमरो माता आज री रात हो,
के पिछली रात हो के ।।२।।
उगंते प्रभात के ढ़लती दोपहर हो के
सवी सींझ्या माता थांने सिमरो जी ।।३।।
रंगो म्हारो वाणियो ने चंग म्हारी हाट हो के
और गुण घणा नवकारसी जी ।।४।।
केवल वीरा म्हारा थेई आणे आवो, के धर्म पीहर माने मेलजोजी ।
मोक्ष मारगिये म्हांने मेलजोजी, दया ने धर्मरा पीहर पहुँचावजो जी।।५।।

* * *

वेला तो आई तोरण की

अब तो घुड़ला पर घूमे थारो बींद, बेला तो आई तोरण की ।।टेर।।
चम-चम चमके केश सुनहरा, इन्द्रियाँ छोड़ी कार ।
नेण न दीखे, कान सुने ना, मुखड़ा सूं पड़ रही लार ।।१।।
तड़-तड़ बोले तन की कड़ियां, रग-रग रोग अपार ।
थर-थर धूजे अंग आज तो, लकड़ी उठावे सारो भार ।।२।।
रंग महलां में मौज मनाता, पड़िया पोल मंझार ।
कोड़ी न छोड़ी पास में रे, अब कुण पूछे थारी सार ।।३।।
विषय भोग में इन्द्रियां पोखी, नहीं राखी प्रभु सूं साख ।
जब हंसो उड़ जावसी रे, जल-बल होसी थारी राख ।।४।।
धर्म-कार्य नहीं कीनो बंदा, रख्यो बुढ़ापा तांय ।
मूरख सोचे काल की रे, पल में प्रलय हो जाय ।।५।।
श्वास-खाँस और हाय-हाय में, तप-जप होवे नाय ।
मुख से प्रभु को नाम न निकले, मन की रह जासी मन माय ।।६।।
दान-पुण्य का भाव हुआ तो, परवश हो गयो आज ।
कलम चली जद कुछ नहीं कीनो, अब नहीं देवे कोई साज ।।७।।
माया की मस्ती में भूल्यो, नहीं परख्यो संसार ।
खेत चिड़कला चुग गया रे, हाथां सूं बाजी गयो हार ।।८।।
लख चौरासी घूमता रे, नरतन लीनो जोय ।
बिजली के भलके मोतीड़ा, पोय सके तो लीजे पोय ।।९।।
पाप-पुण्य संग जासी थारे, ले-ले खर्ची सार ।
चेत सके तो चेत दिवाना, अब तो पाहुणो दिन चार ।।१०।।
काल सिराणे घूम रह्यो ज्यों, तोरण आयो बींद ।
जाग-जाग ओ 'जीत' कैसे, सूतो है सुख भर नींद ।।११।।

राजा हरीश्चन्द्र

(तर्ज : तारा बोले रे सांवरिया कैसे गुजरी...)

अयोध्यापुरी के राजा हरीश्चन्द्र, हो गये ऐसे दानी ।
सपने में तो दान दिया है, धन-दौलत और रानी ।
छोड़ी तीनों ने नगरियां, कैसे गुजरी .. टेर ... ।।१।।

राजा बिक गये, रानी बिक गई, बिक गया रोहित लाल,
साठ भार सोने के खातिर, काशी के बाजार,
प्रभु पारस की नगरिया... कैसे गुजरी... ।।२।।

राजा हरीश्चन्द्र दिन भर करते, मरघट की रखवाली,
रोहित प्यारा लाल कन्हैया, मांझे लोटा-थाली,
रानी भरने चली पन्हैयां ... कैसे गुजरी .. ।।३।।

पंडित बोला रोहित लाल, तूं फूल तोड़ कर लाना,
पूजा करनी है ईश्वर की, जल्दी लौट के आना,
रोहित दौड़ चला बगियां... कैसे गुजरी ... ।।४।।

फूल तोड़ने ने रोहित लग गया, कैसे उसके भाग,
बेसुध होकर गिरा जमीन पर, डस गया काला नाग,
माता पाई ये खबरिया... कैसे गुजरी ... ।।५।।

माता नाता तोड़ दिया है, तीनों के समतोल,
स्वर्ग लोक में बास किया है, अंतिम शक्ति छोड़,
बेटा कैसे आई निंदिया... कैसे गुजरी ... ।।६।।

रोहित लाल की लाश उठाकर, मरघट ऊपर लाई,
देख के राजा हरीशचन्द्र ने, आधी कफन मंगाई,
छलकी नैनों की गगरिया... कैसे गुजरी... ।।७।।

खतम कहानी कर दो भैया, मिल गये तीनों प्राणी,
हरीशचन्द्र ने सत नहीं छोड़ा, हो गई अमर कहानी,
प्रभु पार्श्व की नगरिया... कैसे गुजरी... ।।८।।

* * *

सामायिक पालते वक्त वोलना

समायिक मैं शुद्ध करण ने बैठी, मन करने उठी,
लो समायिक रो ओटो, कदैई नीं आवे टोटो !
सामायिक घर में, बाहर में, टाबर में, छोरुं में, हाट में, हवेली में
मोक्ष पधार्‌या मोटा महापुरुषां ने म्हारी वंदना होईजो ।
आचार्य श्री शुभमुनि जी महाराज साहब
उपाध्याय श्री पारसमुनि जी महाराज साहब
श्री गुणवन्तमुनि जी महाराज साहब
श्री पदममुनि जी महाराज साहब
श्री सुमतिमुनि जी महाराज साहब ने तथा
सभी क्षेत्र में विराजमान साधुजी तथा सतियांजी ने
तिक्खुत्ता रा पाठ सूं म्हारी तीन बार वन्दना होईजो ।

* * *

सुबह उठते ही गैस जगाने के पहले बोलना

उठ भाई जिवड़ा हो हुशियार, आयी है अग्नि री झाल,
मैं थाने उठणो को कह दियो, थे उठो, नी उठो थांकी मरजी,
म्हने पाप मती लागजो, आहार जित्तो भार सबने ही है ।

* * *

सुबह उठते ही बोलने हेतु

जय श्री पार्श्वनाथ !
बिस्तर से उठते ही अपने गुरु की जय बोलना ।
उसके बाद नवकार गिनना !
इसके बाद यह बोलना -
शांतीनाथ जी साता करो !
पार्श्व नाथ जी पार उतारो, दुख दारिद्र दूर करो !
नवकार मंत्र हैं म्हारो भाई, थारे म्हांरे सांची सगाई !
गुंज भर खेत देऊँ, लेऊँ, खाऊँ, पीऊँ, नहाऊँ, धोऊँ, चीरूँ,
चारूँ, कुटूँ, काटूँ, हालूँ, चालूँ, जितना म्हारे हाथ सूं होवे,
उतना का आगार, बाकी चौदह राजुलोक का त्याग ।

❋ ❋ ❋

रात में बोलने हेतु

चित म्हारो चिंतामणि रत्न, मन म्हारो मल्लिनाथ
हियो म्हारो आदिनाथ, मुडो म्हारो पार्श्वनाथ
शील म्हारो शांतिनाथ
ये पाँचो रो स्मरण करूं, मोक्ष में जाऊँ, वन्दन करूं, हाथ
जोड़ शीश नमाय ने बारम्बार मोक्ष में जाऊँ एक ही बार में
अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि,
केवली पण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि
इन चार शरण को 9 बार दोहराना ।

❋ ❋ ❋

My wife Kamala joins me in congratulating Bhabhiji Chandrabaisa for her immense efforts in collecting assorted Prayers, Bhajans etc. It's very thoughtful of her to share all such spritual matters, which can enlighten the reader. I do not khow how to thank you and Bhabhiji for your devotion, dedication and concern for all those who believe in inner values.

- S. R. Singhvi
Kolkatta.

❋ ❋ ❋

I an delighted to note that all these religious and devotional compositions have been very painstakingly and meticulously compiled by Smt. Chandra Bahan. Please convey my as well as my wife Kumkum's sincerely compliments to her.

- Harshad Doshi
Kolkatta.

❋ ❋ ❋

श्रीमती चन्द्राबाई सिंघवी के संकलन का ***'चन्द्र किरणावली'*** *के रूप में प्रकाशन करके आपने 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया है । आपका यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है ।*

- पारस जे. नाहर
टी. नगर, चेन्नई

❋ ❋ ❋